बैद्यनाथ धाम में आयोजित महाशिवरात्रि साधना शिविर

आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

आत्म-प्रकाश

|| ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ||

जीवन में धनसम्पदा अक्षय करने हेतु : अक्षय पात्र साधना

समस्त सिद्धियों का आधार है : गुरू साधना सिद्धि

अद्भुत अचरज भरी भौतिक उन्नति के लिए : कार्तिकेय साधना

सद्गुरुदेव

स्तम्भ

साधनाएँ

ENGLISH

विशेष

योग

आयुर्वेद

आमंत्रण

यात्रा

प्रेरक संस्थापक
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी)

आशीर्वाद
पूजनीया माताजी
(पू. भगवती देवी श्रीमाली)

सम्पादक
श्री अरविन्द श्रीमाली

सह-सम्पादक
राजेश कुमार गुप्ता

प्रकाशक, स्वामित्व एवं मुद्रक
श्री अरविन्द श्रीमाली
द्वारा
नारायण प्रिण्टर्स
नोएडा
से मुद्रित तथा
'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'
कार्यालय :
हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर से प्रकाशित

मूल्य (भारत में)

एक प्रति	40/-
वार्षिक	405/-

सम्पर्क

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन : 011-79675768, 011-79675769, 011-27354368
नारायण मंत्र साधना विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.), फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 7960039
WWW address : http:/www.narayanmantrasadhanavigyan.org E-mail : nmsv@siddhashram.me

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस *'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'* पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जायें, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु-संत होते हैं, अत: उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 405/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका के प्रकाशन अवधि तक ही आजीवन सदस्यता मान्य है। यदि किसी कारणवश पत्रिका का प्रकाशन बन्द करना पड़े तो आजीवन सदस्यता भी उसी दिन पूर्ण मानी जायेगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेख योगी या संन्यासियों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अत: इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अत: पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

प्रार्थना

।। ॐ दिव्यो वतां च श्रियैः सः गुरुवैं सह हितेनः।।

मेरे परम पूज्य गुरुदेव! आप दिव्य हैं, सिद्धियों और हम शिष्यों के बीच अटूट कड़ी हैं, हमें सिद्धियाँ प्रियता एवं श्रेय प्रदान करने वाले हैं, आप मेरे पूरे परिवार के हितैषी हैं, आपको मैं प्रणाम करता हूँ।

विश्वास

गुरु और शिष्य के बीच में पहले और आखिरी शब्द होते हैं–श्रद्धा, विश्वास और समर्पण। ये आवश्यक तत्व हैं। जब पूर्ण समर्पण होता है, तो मन में किसी प्रकार का संदेह और भ्रम नहीं होता, और तब ही शिष्य अपने आप में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

एक जहाज में पति–पत्नी सफर कर रहे थे। समुद्र में भयानक तूफान आ गया, चारों तरफ लहरें बहुत ऊँची–ऊँची उठने लगीं। जहाज डगमगाने लगा और ऐसा लगने लगा कि कभी भी समुद्र में डूब सकता है। कोई 'यीशू–यीशू' चिल्लाने लगा, कोई शिव को, कोई विष्णु को याद करने लगा। सभी अपने–अपने इष्ट को याद करने लगे।

उसी जहाज में एक नव दम्पति सवार थे। उनमें पति बिल्कुल शान्त बैठा था–न यीशू को याद कर रहा था, न ब्रह्मा को याद कर रहा था। दोनों की नई–नई शादी हुई थी, हनीमून मनाकर लौट रहे थे। पत्नी ने कहा–'जहाज लड़खड़ा रहा है, कभी भी डूब सकता है, हम मर जाएंगे और तुम्हारे मन में भय ही नहीं है, तुम सोच ही नहीं रहे हो। सब कितना चिल्ला रहे हैं, कितने व्याकुल हैं, पर तुम कैसे आदमी हो?''

पति ने कमर में एक चाकू खोंसा हुआ था, वह निकाल कर एकदम से पत्नी की गरदन पर रख दिया, उसने कहा–

''मैं तुम्हारी गरदन काट रहा हूँ।'

पत्नी ने कहा–''क्यों मजाक कर रहे हो, तुम गरदन काट ही नहीं सकते।''

तो पति ने कहा–''तुम्हें मुझ पर इतना भरोसा है, तो मुझे भी भगवान पर पूरा भरोसा है। जब मैंने चाकू तेरी गरदन पर रख दिया तब भी तुझे भरोसा था, कि पति मुझे मार ही नहीं सकता। मुझे भी भगवान पर भरोसा है, वह हमें समाप्त नहीं करेगा।''

इसी प्रकार जब हमें विश्वास होगा गुरु के प्रति, तब ही हम सही अर्थों में शिष्य बनेंगे।

आप एक विशाल सागर के समीप खड़े हैं, विस्तार अनन्त है इस सागर का और अनन्त ही रहस्य छिपे हैं, इसकी अतल गहराइयों में। पहुंच तो आप गए हैं... और यह पहुंचना आवश्यक है। आवश्यक इसलिए क्योंकि हर नदी बहती है केवल और केवल सागर में विलीन होने के लिए। और सागर मतभेद नहीं करता, उसका विस्तार सभी के लिए सदा निमंत्रण संप्रेषित करता रहता है। परन्तु तट पर पहुंच कर वहाँ खड़े रहने से कुछ नहीं होगा, आगे बढ़कर समाना होगा उसमें।

सद्गुरु सर्वानुभूतिः

नर से नारायणः

गुरु भी बाहें फैलाये सदा खड़ा रहता है। निमंत्रण उसका हर क्षण बना रहता है और केवल एक क्षण की आवश्यकता होती है उसकी बाहों में समाने के लिए, उसकी आत्मा से एकाकार होने के लिए। उसकी ओर से कोई विलम्ब नहीं, वह कभी नहीं कहता, नहीं आज नहीं... कल। विलम्ब हमारी ओर से ही होता है।

वह तो चाहता है आप उसी क्षण, उसी लम्हे में सब त्यागकर, स्वयं को भूला कर उसके बुद्धत्व से एक हो जाएं, उसके कृष्णत्व को आत्मसात कर लें। परन्तु आप ठिठक जाते हैं।

ऐसे खुले निमंत्रण में एकाएक आप भयभीत हो जाते हैं, संकोच करते हैं, भ्रमित होते हैं और अपने व्यर्थ के आभूषणों—अहंकार, मोह, लोभ आदि से चिपके रहते हैं।

और यह खेल है सब कुछ खो देने का। आप जिस भार के तले दबे जा रहे हैं, वह कोई परेशानियों या सांसारिक समस्याओं के कारण नहीं अपितु आपके अपने अहंकार के कारण है। और गुरु कहता है कि भूल जाओ, छोड़ दो सब मेरे ऊपर और आ जाओ मेरी बाहों में...

वह संसार छोड़ने को नहीं कह रहा, न ही परिवार त्यागने का तुमसे आग्रह कर रहा है, अपितु कह रहा है—

सीस उतारे भू धरे

अपने सीस को, अपनी बुद्धि को, अपनी समझ-बूझ को एक तरफ रख दो, क्योंकि इस यात्रा में यह बाधक ही है। जब तक इसका त्याग नहीं होगा, वह रूपान्तरण नहीं हो पाएगा, जिसका समस्त मानव जगत अधिकारी है।

अन्दर तुम्हारे एक बीज है, एक आत्मा है... उसको जगाना है, उसको पुष्पित करना है, तभी जीवन का वास्तविक आनन्द स्पष्ट होगा। तब सांसारिक क्रिया-कलापों में भी रत आप एक अनोखे आनन्द में डूबे रहेंगे, तब संसार अपनी समस्याओं और कठिनाइयों के बावजूद एक सुन्दर उपवन समान दिखाई देगा, जिसमें कांटे भी हैं और सुगन्धित पुष्प भी।

समझाने से यह बात समझी नहीं जा सकती, पढ़ने से कुछ प्राप्त हो नहीं सकता है। हां, इतना अवश्य हो सकता है, कि गुरु की वाणी से आप एक क्षण के लिए अपनी निद्रा से जागृत हो जाएं और जान लें, कि गुरु ठीक कह रहा है।

तो उस क्षण पूर्ण चैतन्य बने रहना। दोबारा सो मत जाना। वही क्षण महत्वपूर्ण है क्योंकि उस समय आप इस प्रक्रिया में प्रैक्टिकली उतार सकते हैं। यह प्रैक्टिकल है मात्र पढ़ने से काम नहीं चलेगा और सद्गुरु तक आप पहुँच गये हैं तो इस प्रक्रिया में उतरना और भी आसान है। करना बस इतना है, कि अपनी बुद्धि को एक तरफ रख छोड़ें, उसे बीच में न लाएं।

गुरु देने को तैयार है, एक क्षण में यह रूपान्तरण घटित हो सकता है। इसके लिए वर्षों का परिश्रम नहीं चाहिए। हां, पहले तो आपको तैयार होना पड़ेगा। गुरु तो अपनी अनुकंपा हर वक्त संप्रेषित करते ही रहते हैं, उसे ग्रहण आपको करना है। गंगा तो विशुद्ध जल सदा प्रवाहित करती ही रहती है, तृष्णा शान्त करनी है तो आपको उठकर जाना ही होगा, झुकना ही पड़ेगा, अंजुली में पानी भर कर होठों तक लाना ही होगा। यह प्रैक्टिकल क्रिया है। बैठे-बैठे आप प्यास नहीं बुझा सकते और अगर यह सोचें, कि झुकूंगा नहीं, तो प्यास बुझने वाली नहीं है।

और अगर शिष्य या फिर एक इच्छुक व्यक्ति प्रयास करने के बाद भी बुद्धि से मुक्त नहीं हो पाता, तो गुरु उस पर प्रहार करता है और यही गुरु का कर्त्तव्य भी है, कि उस पर तीक्ष्ण से तीक्ष्ण प्रहार करे, जब तक उसके अहंकार का किला ढह न जाए। क्योंकि भीतर कैद है आत्मा और विशुद्ध प्रेम। जब यह बांध गिरेगा तभी प्रेम, चेतना और करुणा का प्रवाह होगा, तभी सूख चुके हृदय में नई बहार का आगमन होगा तभी पथराई कठोर आँखों में प्रेम की अद्बितीय चमक उभरेगी।

और गुरु के पास अनेकों तरीकें हैं प्रहार करने के–कठोर कार्य सौंप कर, परीक्षा लेकर, साधना कराकर और जब ये सभी निष्फल होते दिखें, तो विशेष दीक्षा देकर वह ऐसा कर सकता है। परन्तु पहले वह सभी प्रक्रियाओं को आजमा लेता है ताकि व्यक्ति तैयार हो जाए, प्रहारों से वह इतना सक्षम हो जाए, कि विशेष दीक्षा के शक्तिशाली प्रवाह को सहन कर सके।

गुरु का भी धर्म है, कि विशेष दीक्षाओं के माध्यम से शिष्यों की समस्याओं का समाधान करे और इसके लिए गुरु विशेष क्षणों का चुनाव करता है। वह जानता है, कि बहार आने पर ही फूल खिलते हैं, इसलिए ऐसे क्षणों को वह चुनता है, जो सैकड़ों वर्षों बाद आते हैं और ऐसी उच्च प्रक्रियाओं के लिए सर्वथा अनुकूल होते हैं।

दीक्षा का अर्थ है, गुरु की आत्मिक शक्ति के साथ सम्बन्ध स्थापित करना, अपना सर्वस्व गुरु के चरणों में सौंपना–अब यह जीवन आपका है, आप जैसे चाहें इसे संवार दें।

और जान लें, कि सद्‌गुरु का कोई निजी स्वार्थ नहीं होता, अगर स्वार्थ है तो वह गुरु नहीं। उसका उद्देश्य तो मात्र इतना है, कि व्यक्ति को उस परम सत्ता का बोध करा दे, जिसे पाकर कोई भी सांसारिक समस्या, दु:ख, पीड़ा उसके मन पर आघात नहीं कर पाती और वह पूर्ण निश्चिन्त हो सदा बिना भय और संशय के उच्चता एवं सफलता की ओर अग्रसर होता रहता है—सांसारिक जीवन में भी और आध्यात्मिक जीवन में भी।

तब एक अनूठा सन्तुलन स्थापित हो जाता है। आज हर मनुष्य के जीवन में असन्तुलन है। सांसारिक जीवन में वह इतना डूब गया है, कि उसे स्मरण ही नहीं रहा कि आध्यात्मिक तल पर भी उसका अस्तित्व है। उस पक्ष को सर्वथा उसने अनदेखा कर दिया, जिसके कारण संसार के दु:ख एवं पीड़ा रूपी आघात उसे यों हिला कर रख देते हैं, जैसे आंधी में एक पत्ता। इसी असन्तुलन के कारण आज संसार में इतना पाप, असन्तोष, आतंकवाद व्याप्त है।

सांसारिक जीवन में और आध्यात्मिक जीवन में सन्तुलन द्वारा ही इन सबका अंत सम्भव है। और इस प्रक्रिया में सहायक हो सकते हैं केवल और केवल एक सद्‌गुरु।

दीक्षा कोई सामान्य क्रिया नहीं है, कि मंत्र दे दिया और तुम अपने घर, मैं अपने घर। गुरु तो जिम्मेवारी

लेता है, पूरी जिम्मेवारी! प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक शिष्य की समस्याओं के समाधान हेतु वह सदा सचेत रहता है और उनके जीवन को पूर्णता प्रदान करने के लिए तत्पर रहता है।

और दीक्षा वह अनेकों प्रकार से दे सकता है—मंत्र के द्वारा, स्पर्श द्वारा या मात्र दृष्टिपात द्वारा। अनेकों लोग विशेषत: तथाकथित वैज्ञानिक सन्देह प्रकट कर सकते हैं मंत्रों के सन्दर्भ में, परन्तु अगर वह पूर्ण गुरु है, तो सिद्ध कर देता है, कि वैदिक मंत्र प्रामाणिक ही नहीं, अपितु इतने शक्तिशाली हैं, कि क्षण में व्यक्ति का रूपान्तरण कर दें।

व्यक्ति तैयार हो, और तैयार का मतलब तन, मन, धन से एवं बिना हिचक के, बिना भय और सन्देह के, तो गुरु को एक क्षण भी नहीं लगता। और यह उपलब्धि जो गुरु प्रदान करता है, कोई सामान्य नहीं है। व्यक्ति के जन्मों की न्यूनताओं को नष्ट करना पड़ता है अपने तप द्वारा। न केवल उसकी न्यूनताओं अपितु उसके माता-पिता, उसके पूर्वजों की समस्त न्यूनताओं को समाप्त करना होता है, क्योंकि वे सब संस्कारों द्वारा, आनुवांशिक प्रक्रिया द्वारा उसमें विद्यमान होती हैं। उसके तन की, उसके मन की, उसके रक्त की शुद्धि करनी होती है गुरु को।

एक सामान्य व्यक्ति को यह सब कठिन प्रतीत हो सकता है, परन्तु गुरु के लिए नहीं। वह तो बस अपनी तप ऊर्जा को हर क्षण प्रवाहित करता रहता है। और जो भी बुद्धि से मुक्त हो सके, वह इस चेतना को ग्रहण कर रूपान्तरित हो सकता है। तब विशेष दीक्षा की आवश्यकता नहीं। सद्गुरु के शरीर से हर दम तप शक्ति संप्रेषित होती रहती है। यदि आप उसे ग्रहण कर लें, तो...

और ग्रहण आपको करना है, गुरु कोई भेद नहीं करता। उसके लिए सभी बराबर हैं। आप तैयार हैं, तो उस चेतना को अंगीकृत कर लेंगे और चैतन्यता प्राप्त कर लेंगे। यह भी दीक्षा ही है एक प्रकार से, क्योंकि गुरु की ही शक्ति द्वारा आपके भीतर एक प्रस्फुटन होता है।

परन्तु स्वत: यह न हो पाए, तो गुरु विशेष तरीके अपनाता है और इसके लिए प्रयोग करता है मंत्र दीक्षा, स्पर्श दीक्षा और दृष्टिपात दीक्षा का । हां, इनका प्रयोग गुरु तभी करता है, जब शिष्य स्वयं ग्रहणशील नहीं हो पाता।

बहुत से उदाहरण हैं ऐसे, जब मात्र गुरु की समीपता से आत्मोपलब्धि हो गई! परन्तु ऐसा हुआ केवल उनके साथ जो अहंकार रहित थे, जो बुद्धि से पूर्ण चैतन्य, शिष्यता की ओर अग्रसर एवं एक ललक से भरपूर थे कि आत्मज्ञान ही जीवन का एकमात्र सत्य है, उच्चतम लक्ष्य है। उनके मन और बुद्धि के सभी द्वार हमेशा खुले होते, कि न जाने कब वह क्षण आ जाए जब सद्गुरु से साक्षात्कार हो जाए।

ऐसे ही एक व्यक्तित्व थे विदुर। श्रीकृष्ण के दर्शन मात्र से पूर्ण चेतना को प्राप्त हुए एवं एक क्षण में परब्रह्म में लीन हो गए। बुद्ध के शिष्य थे आनन्द–तीस वर्ष तक बुद्ध उन पर प्रहार करते ही रहे, तब कहीं उनका अहंकार गला। और वहीं एक शिष्य थे राहुलभद्र जो बुद्ध की शरण में ज्योंहि पहुंचे, कि पूर्णरूपेण उनकी कुण्डलिनी जाग्रत हो गई और वे बुद्धत्व को प्राप्त हो गए।

होता है ऐसा! और इस प्रक्रिया को कहा जाता है–'विशुद्ध दीक्षा'–गुरु के समीप गए नहीं, कि उनकी चैतन्यता को प्राप्त कर लिया। परन्तु इसमें शिष्य का तैयार होना आवश्यक है। अगर वह अहं को छोड़ नहीं पाता, तो यह सम्भव नहीं। और तब गुरु विशेष दीक्षा का प्रयोग करते हैं।

विशेष दीक्षा क्या है, यह पहले जान लें। एक मां कैसे भिन्न है अन्य मानवों से। शरीर तो वैसा ही होता है–मांस, मज्जा, हड्डी, लहू आदि। परन्तु उसमें ममत्व होता है, मातृत्व की भावना होती है, जो वह समग्रता से, पूर्णता से अपने शिशु में उड़ेल देती है। वैसी ही करुणा, वैसा ही प्रेम होता है गुरु के मन में।

आपने देखा होगा, कि जब शिष्य झुकता है गुरु के चरणों में तो वह पीठ पर, सिर पर हाथ रखता है और मुख से उच्चरित करता है–आशीर्वाद!

क्यों हाथ रखता है? आपने शायद गौर नहीं किया।

शरीर में विद्यमान, आत्मा में मौजूद प्रेम, तप:शक्ति दो प्रकार से प्रवाहित हो सकते हैं–स्पर्श अर्थात् अंगुलियों या शरीर के माध्यम से और नेत्रों के माध्यम से।

ध्यान दें तो सभी भावनाओं का संप्रेषण नेत्रों के माध्यम से होता है। घृणा करें तो नेत्रों से, क्रोध करें तो नेत्रों से और प्रेम करें तो भी नेत्रों से ही भावना व्यक्त होती है। आपको कुछ बोलने की आवश्यकता ही नहीं। मेरी आँखें आपको बता देगी, कि गुरुजी खुश हैं या नाराज हैं या क्रोधित हैं। मैं बोलूं अथवा नहीं बोलूं, आप भांप लेंगे, क्योंकि आंखें हमेशा सत्य ही बोलती हैं। इसलिए क्योंकि उनमें से भावनाएं प्रवाहित होती हैं। जो आपके भीतर है, वही उनमें प्रतिबिम्ब हो उठता है।

तो गुरु की आत्मिक तपस्या का अंश आंखों से प्रवाहित होता रहता है। हाथ की अंगुलियों के माध्यम से भी यह सम्भव है। विशेष दीक्षा का अर्थ है शिष्य गुरु के सामने आए और गुरु एक सेकण्ड उसकी आँखों में ताके और शक्ति का एक तीव्र प्रवाह उसके नेत्रों के माध्यम से उसके शरीर में प्रविष्ट करा दे। फिर स्वत: ही वह शक्ति शिष्य के शरीर में एक आलोड़न, एक प्रक्रिया को आरम्भ कर देगी, उसकी निद्रा को भंग कर देगी और उसे पूर्ण चैतन्य कर देगी।

इसके लिए आवश्यक नहीं, कि गुरु पांच मिनट तक आंखों में घूरता रहे। एक बार एक शिष्या मेरे पास आई और बोली–कमाल है गुरु जी! उस व्यक्ति की आँखों में तो आपने एक मिनट तक देखा और मुझे केवल दस सेकण्ड।

एक, दो या दस मिनट दृष्टिपात से कोई ज्यादा तपस्या का अंश नहीं जाएगा। इसके लिए तो एक क्षण भी बहुत होता है। एक सेकण्ड लगता है स्विच दबाने में और पूरी बिल्डिंग रोशनी से चकाचौंध हो जाती है। गुरु जानता है कि मस्तिक में किस स्विच पर प्रहार करना है और इसके लिए उसे मात्र एक क्षणांश की आवश्यकता होती है और अगर बटन ही गलत है, प्रक्रिया ही गलत है, तो दस मिनट तक करने पर भी कुछ नहीं होगा।

तो विशेष दीक्षा यानी गुरु ने एक पल आंखों में देखा और अगले क्षण रूपान्तरण घटित हुआ। शिष्य यह याद रखे, कि आंख न झपकाएं और पूर्ण क्षमता से तपस्यांश को ग्रहण करें।

तब उस तपस्या शक्ति के प्रवाह से शिष्य की सुप्त दिव्य शक्तियां एकाएक जागृत होने लगती हैं। दीक्षा के भी अनेकों चरण हो सकते हैं और प्रत्येक चरण में शिष्य नवीन शक्तियाँ प्राप्त करता हुआ
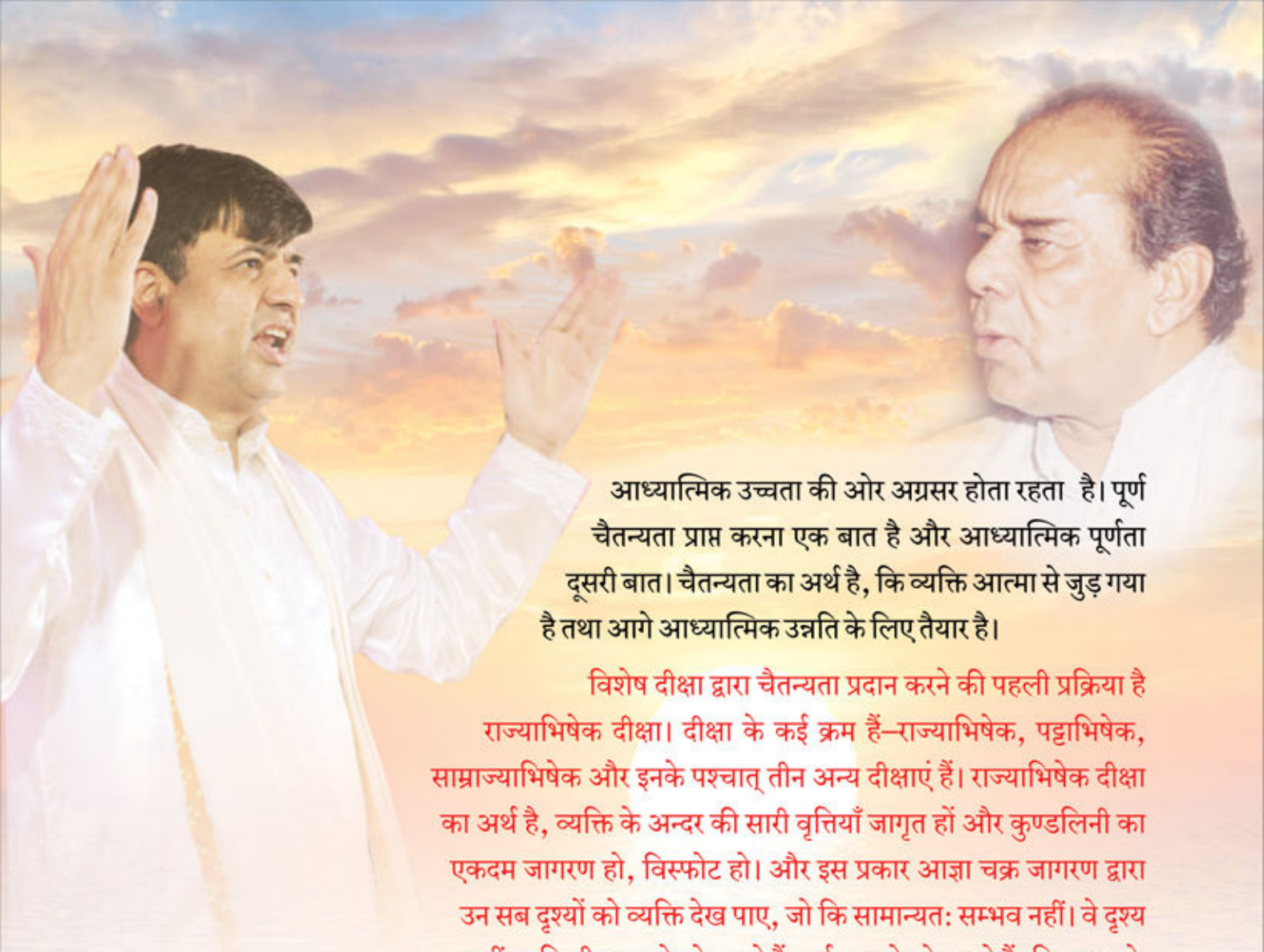
आध्यात्मिक उच्चता की ओर अग्रसर होता रहता है। पूर्ण चैतन्यता प्राप्त करना एक बात है और आध्यात्मिक पूर्णता दूसरी बात। चैतन्यता का अर्थ है, कि व्यक्ति आत्मा से जुड़ गया है तथा आगे आध्यात्मिक उन्नति के लिए तैयार है।

विशेष दीक्षा द्वारा चैतन्यता प्रदान करने की पहली प्रक्रिया है राज्याभिषेक दीक्षा। दीक्षा के कई क्रम हैं–राज्याभिषेक, पट्टाभिषेक, साम्राज्याभिषेक और इनके पश्चात् तीन अन्य दीक्षाएं हैं। राज्याभिषेक दीक्षा का अर्थ है, व्यक्ति के अन्दर की सारी वृत्तियाँ जागृत हों और कुण्डलिनी का एकदम जागरण हो, विस्फोट हो। और इस प्रकार आज्ञा चक्र जागरण द्वारा उन सब दृश्यों को व्यक्ति देख पाए, जो कि सामान्यत: सम्भव नहीं। वे दृश्य कहीं दूर किसी घटना के हो सकते हैं, पूर्व जन्म के हो सकते हैं, सिद्धाश्रम के हो सकते हैं या किसी अन्य लोक अथवा ग्रह के हो सकते हैं। एक प्रकार से व्यक्ति सूक्ष्म शरीर द्वारा कहीं भी आने-जाने में सक्षम हो जाता है तथा एक स्थान पर बैठकर कहीं की भी घटनाओं का अवलोकन कर सकता है।

दीक्षा के दूसरे क्रम में है ब्रह्माण्ड पार्श्वीकरण दीक्षा तथा तीसरी दीक्षा साम्राज्याभिषेक दीक्षा होती है, जिसके द्वारा व्यक्ति पूर्णत: संयमित, शुद्ध, निर्मल और अविचल हो जाता है। फिर वह संन्यास में रहे या गृहस्थ में उस पर बाहरी वृत्तियों का कोई भी प्रभाव नहीं पड़ता। ऐसे ही जैसे श्रीकृष्ण थे, चाहे वे गोपियों के साथ थे या राक्षसों के बीच, वे निर्मल ही बने रहे और युद्ध भूमि में भी शान्त निर्मल ही बने रहते। उनके ऊपर न युद्ध का कोई प्रभाव पड़ा, न दुर्योधन जैसे राक्षसों का, न ही वे किसी आसक्ति में लीन हुए। इसीलिए उन पर किसी प्रकार का कोई आक्षेप नहीं हो सकता।

इस प्रकार की उच्च दिव्य स्थिति को प्राप्त करने की पहली सीढ़ी है राज्याभिषेक दीक्षा। इसके बाद और एक दीक्षा होती है और यों छ: दीक्षाएं होती हैं। उसके पश्चात् ही व्यक्ति पूर्णता प्राप्त करता है।

इन दीक्षाओं को गुरु तभी प्रदान करता है, जब व्यक्ति में समर्पण की भावना जागृत हो और जब गुरु यह

अनुभव करे, कि शिष्य अब तैयार है। जब व्यक्ति गुरु के पास जाता है और सिद्धाश्रम जाने की, आध्यात्म में पूर्णता प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त करता है, तो इस इच्छा के फलीभूत होने के लिए ये दीक्षाएं लेनी ही पड़ती हैं। अगर आप समझें, कि मात्र सोच लेने से सिद्धाश्रम पहुंच जाएंगे, तो यह सम्भव नहीं है। इसके लिए अन्दर की एक तीव्र चेतना का जागरण आवश्यक है। इस प्रकार की विशिष्ट दीक्षाओं के लिए शिष्य को गुरु की सेवा भी करनी पड़ती है। और जब गुरु समझता है, कि व्यक्ति गुरु सेवा करते-करते उस स्तर तक पहुँच गया है, कि गुरु शब्द सुनते ही आँख में आँसू छलछला पड़ते हैं, तो समझना चाहिए, कि वह इस दीक्षा का अधिकारी बन गया है।

मात्र गुरु शब्द उच्चरित करने से शिष्य नहीं बना जा सकता और न ही अन्दर की वृत्तियों को जाग्रत किया जा सकता है। वृत्तियों का अर्थ है–करुणा, दया, प्रेम, ममत्व, स्नेह, श्रेष्ठता और भावाभिव्यक्ति। यानि पूर्ण रूप से गुरु की भावनाओं में लीन होना। स्वयं के विचार, स्वयं की कोई इच्छा रहे ही नहीं। यह कठिन अवश्य है, मगर गुरु के सान्निध्य में यह सम्भव है। गुरु से दूर रहकर इस प्रकार की प्रक्रिया सम्भव नहीं हो सकती। भावाभिव्यक्ति तब होती है, जब गुरु शिष्य का परस्पर एक गहन सम्बन्ध बनता है, और सम्बन्ध का सेतु तैयार होता है सेवा के माध्यम से। आप नि:स्वार्थ भाव से गुरु की सेवा करते रहें तो एक ब्रिज बनता है, एक दूसरे के निकट आने की क्रिया बनती है और पूर्ण रूप से गुरु में समाहित होने की क्रिया बनती है।

जब मैं संन्यास जीवन में था, तो बड़ी कठिनता के बाद इस प्रकार की दीक्षाएं प्राप्त हुई थीं और मैं जानता हूँ, कि मुझे कितना अधिक श्रम करना पड़ा। गुरुसेवा, गुरुनिष्ठा, गुरुभक्ति के साथ निरन्तर पठन, चिंतन, मनन के द्वारा ही भूख और प्यास की परवाह किये बिना दीक्षा का वह महान ज्ञान प्राप्त कर सका जो मुझे संसार में बांटना था।

श्रीकृष्ण ने सांदीपन ऋषि से दीक्षा ग्रहण की तब ऋषि अनुभव कर रहे थे, कि यह तो कृष्ण उन पर अनुकंपा कर रहे हैं, उन्हें गुरु का सम्मान देकर। कृष्ण को आवश्यकता नहीं थी, परन्तु एक औपचारिकता, एक सामाजिक कर्त्तव्य तो निभाना था ही। सांदीपन जानते थे, कि इन्हें भला वे क्या प्रदान कर सकते हैं। परन्तु एक सामाजिक प्रक्रिया थी जिसे निभाना था।

वे गुरु भी ऐसा अनुभव कर रहे थे, मन ही मन कह रहे थे–हम आपको राज्याभिषेक दीक्षा क्या दें, कौन सी पट्टाभिषेक दीक्षा दें... यह स्थिति ही जाने क्या बन गई? आप हमें समझा सकते हैं, कि साम्राज्याभिषेक दीक्षा क्या होती है, चैतन्य अवस्था क्या होती है, कुण्डलिनी जागरण किस प्रकार होती है। हम तो निमित्त मात्र हैं। आप शायद हमें सौभाग्य प्रदान कर रहे हैं और हमें गुरु शब्द से सम्मानित कर रहे हैं।

कई ऐसे गुरु मिले मुझे अपने परम पूज्य गुरुदेव भगवदपाद स्वामी सच्चिदानन्द जी के पास पहुँचने से पहले। परन्तु ये दीक्षाएं मात्र समाजीकरण का एक अंग थीं, मात्र एक औपचारिकता! वह तो मैं जानता था, वे भी जानते थे, कि पूर्व जन्म के सम्बन्ध थे, कभी उन्हें ज्ञान प्रदान किया था और...

साम्राज्याभिषेक दीक्षा प्रारम्भिक दीक्षा है। उस महासमुद्र में छलांग लगाने का एक पहला कदम। अपने आप में यह सम्पूर्ण दीक्षा तो है ही मगर इसके बाद दो दीक्षाएं, और फिर तीन और दीक्षाएं होती हैं। इसके बाद की पांच दीक्षाओं में प्रत्येक दीक्षा उन ग्रन्थियों को खोलती हैं, जिनके माध्यम से एक नर नारायण बन सकता है, एक पुरुष पुरुषोत्तम बन सकता है, एक व्यक्ति विराट हो सकता है।

नर से नारायण बनने की यह प्रक्रिया केवल दीक्षाओं के माध्यम से सम्भव है, किसी भी शिक्षा, किसी पाठ्यक्रम से सम्भव नहीं है। इन दीक्षाओं के लिए केवल इतना आवश्यक है, कि व्यक्ति गुरु चरणों एवं गुरु सेवा में रत रहे।

और पूर्ण भावाभिव्यक्ति की क्या पहचान है? यदि 'गुरु' शब्द का उच्चारण हो और एकदम से गला रुंध जाए... और आंख से आँसू प्रवाहित होने लग जाएं, और ऐसा अहसास हो कि मेरे पास केवल 24 घण्टे हैं, अगर कहीं 28 घण्टे होते तो और अधिक गुरु-सेवा कर पाता...

गुरु से पहले उठे और बाद में सोए। एक आहट हो और चौकन्ना हो जाए। हल्का सा इशारा हो और समझ जाए, कि अब गुरु को क्या आवश्यकता है। इतनी तीव्र भावना हो।

इस दीक्षा के बाद गुरु-शिष्य के तार मिल जाते हैं। यह दीक्षा अन्दर की सभी वृत्तियों को और

कुण्डलिनी को आज्ञा चक्र तक पहुँचाने की क्रिया है। इसके माध्यम से आज्ञा चक्र की सारी शक्तियाँ शनैः-शनैः जागृत होती हैं और अंततः कुण्डलिनी आगे जाती है और सहस्त्रार तक पहुंचती है।

सहस्त्रार सिर में एक ऐसा भाग है जहाँ एक हजार नाड़ियाँ अपने आप में ऊर्ध्व यानि उल्टी होकर अमृताभिषेक करती है।

और जब सहस्त्रार जागृत हो जा ता है, तो यह अमृत झरने लगता है और समस्त शरीर में फैल जाता है, जिसके कारण शरीर अद्‌भुत आभायुक्त एवं कान्तिवान हो जाता है।

आपने देखा होगा चित्रों में कि भगवान विष्णु लेटे हुए हैं और एक हजार फन वाला शेषनाग उन पर छाया किए हुए हैं। इसका अर्थ है, कि भगवान विष्णु का सहस्त्रार पूर्णतः जागृत है। ऐसा ही सहस्त्रार हर मनुष्य के सिर में स्थित है, उस स्थान पर जहाँ सिर में चोटी होती है।

वह अमृतवर्षा पूरे शरीर को अमृतमय बना देती है। ऐसे व्यक्ति के शरीर से एक अद्वितीय सुगन्ध प्रवाहित होने लग जाती है। यदि किसी व्यक्ति में ग्राह्य शक्ति हो तो उसे एहसास हो जाएगा, हालांकि आम आदमी ऐसा नहीं कर पाएगा। परन्तु थोड़ा भी चेतनावान व्यक्ति सुगन्ध भांप लेता है और जान लेता है, कि यह व्यक्ति पूर्णता प्राप्त व्यक्तित्व है।

ऐसा व्यक्ति विदेह हो जाता है। संसार की कोई चिन्ता उसे नहीं रहती। वह एक ऐसे आनन्द को प्राप्त कर लेता है, जिसका शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता। और ऐसे आनन्द से सराबोर व्यक्ति संसार के दुःखों, सन्तापों के बीच भी अविचलित एवं संयमित बना रहता है। उसका जीवन काव्यात्मक हो जाता है, संगीतमय हो जाता है, सुगन्धमय हो जाता है।

शक्कर आप खा सकते हैं परन्तु उसके स्वाद का वर्णन नहीं कर सकते। आप कहेंगे मीठा है, तो मीठी तो बहुत चीजें होती हैं, परन्तु स्वाद कैसा है? यह आप दो हजार पन्नों में भी नहीं बता सकते!

गुलाब की सुगन्ध को भी शब्दों में नहीं बांध सकते।

ठीक उसी प्रकार उस आनन्द की अनुभूति भी शब्दों में नहीं समझाई जा सकती। वह तुरीयावस्था होती है। और ऐसे व्यक्ति को कोई एक बार देख लें, तो उसे भुलाया ही नहीं जा सकता।

एक अद्‌भुत सम्मोहन पैदा हो जाता है, उसके व्यक्तित्व में। वह व्यक्ति किसी को सम्मोहित करने का प्रयत्न नहीं करता, उसका कोई भाव नहीं होता परन्तु उसका व्यक्तित्व कुछ ऐसा अनूठा हो जाता है, कि और लोग स्वयं सम्मोहित हो उठते हैं। ऐसा चैतन्य प्रवाह उसके शरीर से होता रहता है, कि लोग स्वयं ही खिंचे चले जाते हैं।

गुरु और शिष्य में एक बहुत बड़ा गैप (दूरी) होता है, जब तक वह भर नहीं जाता शिष्य उस स्थिति को प्राप्त नहीं कर सकता और इस दूरी को कम करना केवल सेवा और दीक्षा द्वारा सम्भव है। और जब गुरु के मन में यह चिन्तन उत्पन्न होता है, कि अब यह व्यक्ति पूर्ण समर्पित है और तैयार हैं, तो वह उसके शरीर का, उसके मन का, उसके हृदय का रूपान्तरण कर देता है।

इस शरीर की क्षमताएँ असीम और अद्‌भुत हैं। यह शरीर पूरे ब्रह्माण्ड में विचरण कर सकता है। दूर-दूर की घटनाओं का एक स्थान पर बैठे-बैठे अवलोकन भी कर सकता है, किसी ग्रह शुक्र, शनि पर भी जा सकता है और अन्य किसी को एहसास भी नहीं होगा, कि व्यक्ति में ये सब क्षमताएं हैं। एक बार में वह कई स्थानों पर प्रकट हो सकता है। एक स्थान में किसी कार्य में लीन रहते हुए वह अन्य किसी दूरस्थ स्थान की घटनाओं को देख सकता है।

ऐसा तब होता है, जब सहस्रार जागृत होता है, जब अमृताभिषेक होता है। अंतिम दीक्षा अमृताभिषेक होती है। और तब व्यक्ति के शरीर से अष्टगन्ध प्रवाहित होने लगती है। और सामान्य लोग बेशक अष्टगन्ध का पूर्ण एहसास न कर पाएं, परन्तु कहीं न कहीं सूक्ष्म रूप से वह सुगन्ध उनको प्रभावित करती है और वे खिंचे चले आते हैं।

और सद्‌गुरु प्राप्त करना भी बड़े सौभाग्य की बात है। या तो भाग्य अच्छा हो या कई जन्मों के अच्छे संस्कार या सम्बन्ध हों, तो गुरु सान्निध्य प्राप्त हो पाता है।

और सामीप्यता का लाभ भी हर एक नहीं उठा पाता। कृष्ण कौरवों के भी उतने ही समीप थे,

जितने वे पाण्डवों के थे, परन्तु भावना दोनों पक्षों की भिन्न थी और इसलिए कृष्ण ने पाण्डवों को, अर्जुन को दिव्य दृष्टि प्रदान की, जिससे वह उनका विराट स्वरूप देख पाया, उनको जान पाया।

दिव्य दृष्टि है आपके पास, तो आप देख सकते हैं, कि सूक्ष्म रूप में कैसे सिद्धाश्रम के योगी आकर मेरे समीप बैठ जाते हैं, वे मुझे छोड़ते नहीं, किसी भी हालत में, और मुझे भी उनमें स्नेह है, उन्हें छोड़ नहीं सकता। गुरु शिष्य को नहीं छोड़ सकता। मेरे मना करते-करते वे आते ही हैं।

जब दिव्य दृष्टि प्राप्त होती है, तो जैसे मैं देख सकता हूँ, आप भी उनको देख सकते हैं। और विराट स्वरूप को दिखाने के लिए चर्म-चक्षुओं के अलावा अन्य सूक्ष्म दृष्टि देने की आवश्यकता है और यही प्रक्रिया है राज्याभिषेक आदि दीक्षाओं की–पहले ज्ञान दृष्टि जागृत होती है, फिर आत्म दृष्टि, उसके बाद दिव्य दृष्टि जिसके माध्यम से हम बैठे-बैठे ब्रह्माण्ड के सारे रहस्यों को जान सकते हैं।

और तभी हम गुरु को वास्तव में पहचान सकते हैं। उससे पहले हम गुरु में स्थित नारायण को नहीं पहचान सकते। हमारी दृष्टि मात्र उसके नर स्वरूप तक सीमित रहती है। आप जो पहचानते हैं, वह एक नर है। और अगर उस नारायण स्वरूप को सिद्धाश्रम के योगी देख सकते हैं, तो आप भी देख सकते हैं।

ऐसी दीक्षाएँ देना गुरु के लिए परम आवश्यक है ताकि यह ज्ञान, यह अमूल्य धरोहर लुप्त न हो जाए। आने वाली पीढ़ियों के पास न तो ये मंत्र होंगे, न यह ज्ञान होगा, न दीक्षा लेने की प्रक्रिया होगी। सब समाप्त हो जाएगा और निश्चय ही मेरे साथ सब समाप्त हो जाएगा। यह सब ज्ञान, ये सब मंत्र, लोगों को ज्ञात ही नहीं होंगे। लोगों ने तो क्या पण्डितों ने भी सुने ही नहीं होंगे और मुझे बड़ा तनाव, बड़ी चिन्ता होती है, कि क्या होगा? किस प्रकार से होगा?

कैसे यह ज्ञान बना रहे? समझ नहीं आता है। परन्तु विधाता अवश्य ऐसे शिष्य देंगे जो इस ज्ञान को आत्मसात कर सकेंगे। आत्मसात करने के लिए आपको भगवे कपड़े पहनने की जरूरत नहीं। इसका आधार तो सेवा है और अपने आप में पूर्ण रूप से समाहित होने की क्रिया है। आपकी कोई इच्छा, स्वार्थ नहीं हो। सेवा के बाद यह भावना न आए कि मैं कुछ कर रहा हूँ। 'अहं' बीच में आते ही सब परिश्रम व्यर्थ हो जाता है। भावना हो, कि गुरु करा रहे हैं और मेरे माध्यम से करा रहे हैं, यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है।

वे गुरु कह रहे थे–''हमारा बड़ा सौभाग्य है, कि हम निमित्त बने। शायद न जाने कितने हमारे जन्मों के पुण्य होंगे, कितना अधिक पुण्य किया होगा, कि हम निमित्त भी बने। हजार दो हजार साल तपस्या प्राप्त करने पर भी शायद ही आपका सान्निध्य प्राप्त हो सकता है। परन्तु प्रतीक ही हम बनें, यह बड़ी बात है। ब्रह्माण्ड के, काल के पटल पर यह घटना तो अंकित हो ही गई, कि हम बैठे हैं और दीक्षा क्रम बन रहा है।''

ऐसी ही उच्च दीक्षाएँ आप सद्‌गुरु से प्राप्त कर पाएं, ऐसा मेरा आशीर्वाद है–

आशीर्वाद आशीर्वाद आशीर्वाद

–पूज्यपाद सद्‌गुरुदेव डॉ. नारायणदत्त श्रीमालीजी

(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्दजी)

'नारायण मंत्र साधना विज्ञान' पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में समाहित है।

संघर्ष से ही जीवन में उन्नति होती है परन्तु जब संघर्ष के बाद सफलता नहीं मिलती तब मन विचलित होने लगता है ऐसा स्वाभाविक भी है। अत: पूज्य गुरुदेव ने विशेष अवसरों पर सिद्ध सामग्री जो कि सद्गुरुदेव की कृपा का प्रसाद है, इस बार उपलब्ध करवाई है जिसे आप अपने पूजन स्थान में स्थापित कर सम्बन्धित मंत्र जप कर सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

- **कायाकल्प माला**–साधना में मुख्य है शरीर का स्वस्थ होना। शिवरात्रि पर सिद्ध की गई यह माला आपके तन एवं मन को स्वस्थ एवं चैतन्य बनाने में सहायक है। इसे धारण कर नित्य 5 मिनट निम्न मंत्र का जप 40 दिन तक करें। फिर इसे जल में प्रवाहित कर दें।

मंत्र

।। ॐ नमः शिवाय ।।

- **सर्वकार्य सिद्धि यंत्र,माला**–जिसे यदि किसी भी बुधवार को स्थापित कर नित्य 1 माला निम्न मंत्र का जप करें तो रुके हुये कार्य सम्पन्न होने का रास्ता खुल जाता है।

मंत्र

।। ॐ ऐं सर्व कार्य सिद्धये ऐं ॐ ।।

उपरोक्त दोनों में से कोई एक पैकेट उपहार स्वरूप मिलेगा।

450/-

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

मासिक पत्रिका का वार्षिक मेम्बरशिप ऑफर

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को भी बनाकर प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं।

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 405/- + 45/- डाक खर्च = 450/-, Annual Subscription 405/- + 45/- postage = 450/-

नारायण मंत्र साधना विज्ञान जोधपुर

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001

8890543002 0291 2432209, 0291 2432010, 0291 2433623, 0291 7960039

अक्षय तृतीया : 03.05.22

धन-सम्पत्ति को अक्षय करने का पर्व

अक्षय तृतीया

जीवन में भाग्योदय न हो रहा हो
या कोई विशेष कार्य आरम्भ करने के लिए
उचित मुहूर्त न निश्चित कर पा रहे हो

तब
अक्षय तृतीया
एक स्वत:
सिद्ध मुहूर्त है ...

होली का उमंग भरा पर्व और नवरात्रि का चैतन्यता से भरा काल बीत जाने के बाद आ जाती है

ग्रीष्म की कड़ी ऋतु, ज्यों शैशव और यौवन का आनन्द बीत जाने के बाद गृहस्थ की कर्मठ भूमि साधक के जीवन में आ जाती है।

इस तपन में झुलसन नहीं है, जीवन की एक अलग शैली है जो आवश्यक भी है। दूध से भरे अन्न कण कुछ कड़ी धूप पाकर ही रसमय होते हैं, प्रौढ़ होते हैं और फिर सुनहरे स्वर्ण कणों में बदल कर ही साक्षात् लक्ष्मी का ही आगमन प्रकट करते हैं।

यह माह होता है बैसाख का जब धूप की तपन थोड़ी बढ़ जाती है
और दिन हल्के से बोझिल हो जाते हैं,

तभी फिर से जीवन में नूतनता का संचार करता हुआ आता है अक्षय तृतीया का पर्व। अक्षय यानी कि जिसका क्षय न हो,

जो चिरस्थायी हो, नित नूतन हो, नित यौवन से भरा हो,
तपन से भरे हुए दिनों में यह मां भगवती अन्नपूर्णा के स्वागत का ही एक अवसर है,

यही फसल कटने का समय भी है और घर में धन-सम्पदा आने का भी। जो लक्ष्मी सैकड़ों-सैकड़ों दानों में खनकती हुई घर में ऐश्वर्य और लावण्य बिखेरती हुई आती है, यह उन्हीं के स्वागत का पर्व है, यह उन्हीं को चिरस्थायित्व भी देने का पर्व है, यह उन्हीं को अक्षय कर लेने का पर्व है।

इसे नवान्न पर्व भी कहा जाता है। यही भगवान विष्णु के हयग्रीव अवतरण का भी दिवस है और प्रखर पुरुष परशुराम के जयन्ती का दिवस भी। मां भगवती पार्वती का भी पूजन इसी दिवस पर किया जाता है और यदि तृतीया में चतुर्थी विद्ध हो जाए तो गणपति साधना का अनुपम अवसर उपलब्ध होता है।

सच पूछा जाय तो यह एक कर्मठ गृहस्थ व्यक्ति का ही पर्व है क्योंकि गृहस्थ ही अपने पूरे जीवन भर कर्मठता की मन्द ऊष्मा से लिपट कर गतिशील रहता है, उसी के लिए यह भी आवश्यक है कि जीवन में अक्षय स्थिति प्राप्त हो क्योंकि दायित्व भी उसके साथ सबसे अधिक होते हैं। अक्षय तृतीया गृहस्थ साधक के जीवन का सौभाग्य है। भविष्य पुराण में वर्णित है कि इस दिन जो भी साधना की जाए, जो भी कर्म किया जाए वह अक्षय ही होता है अर्थात् उसके शुभ फलों में कोई न्यूनता नहीं आती। बुंदेलखण्ड एवं मालवा में इसी से विशेष रूप से सौभाग्यवती स्त्रियां इस दिन पार्वती पूजा करती हैं और विवाह के मुहूर्त के रूप में भी यही दिवस सर्वश्रेष्ठ माना गया है जो इस वर्ष दिनांक 03.05.22 को पड़ रहा है।

गृहस्थ साधक के जीवन का आधार होता है लक्ष्मी अर्थात् धन-सम्पदा, श्री, वैभव एवं लक्ष्मी का प्रत्येक रूप और अक्षय तृतीया तो लक्ष्मी का मां भगवती अन्नपूर्णा का भगवान विष्णु का संयुक्त फलदायक दिवस है और इस अवसर को सफल बनाने के लिए, जीवन में लक्ष्मी को स्थायी करने के लिए सुख-सम्पदा की निरन्तर वृद्धि के लिए वैष्णव तंत्र एक विशेष प्रयोग वर्णित किया गया है जिसे अक्षय पात्र साधना कहा गया है।

विश्वामित्र संहिता में इसी साधना को कई नामों से पुकारा गया है-हेमगर्भ साधना, अक्षय पात्र साधना, कनक वर्षा साधना, मनोवांछा पूर्ति साधना इत्यादि। यदि इसका सार निकालें तो स्पष्ट होता है कि लक्ष्मी के सैकड़ों रूपों को जिस प्रकार से साधकों ने अलग-अलग ढंग से देखा उसे उन्होंने अपने-अपने ढंग से साधने का प्रयत्न किया। किन्तु इन सभी साधनाओं व इनकी पद्धतियों का सूक्ष्म विवेचन करने पर यह भी स्पष्ट होता है कि मूल रूप से सभी में अक्षय पात्र की आवश्यकता ही मुख्य है। जो लक्ष्मी के चिरस्थायीत्व का आधार बनता है। कुबेर तंत्र, वशिष्ठ संहिता, विश्वामित्र संहिता, कामदेव तंत्र, शंकराचार्य समुच्चय इन सभी महत्वपूर्ण ग्रन्थों में अक्षय पात्र को जीवन की मूलभूत आवश्यकता कहा गया है। यहां तक कि शंकराचार्य ने तो इसे गृहस्थ साधकों के साथ-साथ संन्यासी साधकों को भी सम्पन्न करने योग्य एक आवश्यक और समर्थ साधना कहा है, जिसके द्वारा उनके आश्रम में लक्ष्मी चिरस्थायी हो सके।

जब भगवान श्री राम राजसिंहासन में बैठने को हुए तब वशिष्ठ ने स्वयं राजसिंहासन से पहले राम को स्वयं अक्षय पात्र से सम्बन्धित साधना सम्पन्न करने की सलाह दी थी, जिससे उनका राज-कोष धन-धान्य से सम्पूर्ण और अक्षय बना रहे। इन्द्र ने स्वयं इस साधना को भगवान शिव से सीख कर पूर्णता के साथ सम्पन्न किया। कृष्ण ने अपने गुरु सांदीपन से यह साधना पूर्णता के साथ सीखी और द्वारिका जैसे नगर का निर्माण कर सके, जहां उन्होंने महाराजाओं के समान जीवन व्यतीत किया।

केवल यहीं तक नहीं नाथ सम्प्रदाय में और जैन सन्तों के मध्य भी अक्षय पात्र का सर्वाधिक वर्चस्व रहा। इसी को आधार बनाकर इन सभी साधुओं और योगियों ने थोड़े से परिवर्तन के साथ अलग-अलग साधना पद्धतियाँ ढूंढी किन्तु मूल साधना अक्षय पात्र साधना ही है, और यह अक्षय तृतीया के दिन सम्पन्न करने पर एक विशेष तादात्म्य बनता है, जिससे साधक को पूरे जीवन भर अक्षय फल प्राप्त होता है। यह मिथ्या धारणा है कि लक्ष्मी चंचला है और टिकती नहीं।

लक्ष्मी भी तो मां भगवती जगदम्बा का ही एक स्वरूप है किन्तु उसे स्थायित्व देने के लिए एक आधार चाहिए। साधनाएँ और विशेष उपकरण इसी क्रिया में सहायक बनते हैं।

न केवल धन व ऐश्वर्य वरन पूर्ण पौरुषता, बल और पराक्रम की प्रतीति भी होने लगती है,
कामदेव के समान मोहक और सक्षम,सभी को अपनी ओर आकर्षित करने में सफल....
यही अक्षय पात्र साधना का रहस्य है। –कामदेव तंत्र से

अक्षय पात्र

**यह विशेष प्रकार से प्रकृति द्वारा रचित शंख का एक प्रकार है,
जिसे स्वर्ण पात्र भी कहा गया है अर्थात् जो स्वर्ण के समान बहुमूल्य और लाभदायक हो।**

इसकी रचना अत्यन्त सुन्दर और सुडौल होती है
जैसी कि किसी अन्य शंख की नहीं होती।
इस शंख को प्राप्त कर इसे अक्षय तृतीया की साधना हेतु
अलग-अलग ढंग से प्राण-प्रतिष्ठित करना पड़ता है
और साधक ऐसे दुर्लभ शंख को अपने घर में स्थापित कर सकता है अथवा जहां अन्न भण्डार हो,
व्यापार स्थल, फैक्टरी का ऑफिस हो अथवा धन प्राप्ति का कोई भी स्थान हो वहां भी स्थापित कर सकता है।

साधना विधि

इस साधना में सर्वाधिक महत्वपूर्ण अक्षय पात्र ही है और इसका सम्बन्ध केवल दिवस विशेष अर्थात् अक्षय तृतीया से ही है। इस साधना को केवल 03.05.22 को ही सम्पन्न किया जा सकता है। साधक को चाहिए की वे पहले से ही चावल के 108 दाने चुनकर उसे एक पात्र में रख लें जिसमें कोई भी दाना खण्डित न हो। अक्षय पात्र को चावलों की ढेरी पर स्थापित कर घी के दीपक व अगरबत्ती से पूजन कर निम्न मंत्र का जप करता हुआ एक-एक दाना पात्र में डालते जाएं।

मंत्र

।। ॐ श्रीं ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं क्लीं अक्षयपात्र अधिपताय नमः।।

इसके बाद गुरु माला से चार माला गुरु मंत्र का जप करें। यह देखने में ही एक लघु साधना है किन्तु इसका प्रभाव अक्षय होता है, ध्यान रखना है कि चावल का कोई भी दाना साधना के दौरान बाहर न गिरे और मंत्र जप समाप्त होने पर पात्र को चावलों सहित किसी डिब्बी या ऐसी जगह सुरक्षित कर लें जहां चूहे आदि का डर न हो। आगे चलकर यह साधना पुनः अगले वर्ष सम्पन्न की जा सकती है। एक माह बीतने के बाद चावल के दानों को निकाल कर पवित्र सरोवर या पवित्र नदी में फूलों के साथ विसर्जित कर दें तथा इस दुर्लभ अक्षय पात्र को अपनी श्रद्धानुसार दुकान, व्यापारिक स्थल अथवा फैक्टरी में भी स्थापित कर सकते हैं।

साधना सामग्री- अक्षय लक्ष्मी पात्र- 300/-

सद्‌गुरु पूजन विधान

मैं तुम्हारे लिए बांहें फैलाए खड़ा हूं, और तुम्हारे आने का बेसब्री से इंतजार कर रहा हूँ,
तुम्हें मुझसे मिलकर मुझमें समाहित होना ही है, वह भी पूर्ण समर्पण के साथ...

क्योंकि तुम्हारे शरीर में मेरा ही रक्त प्रवाहित हो रहा है, क्योंकि तुम्हारे सीने में मेरा ही हृदय धड़क रहा है, क्योंकि तुम्हारी सांसों में मेरी ही श्वास है, इसीलिए तुम्हें तो केवल और केवल मुस्कराना है, थिरकना है और अपने जीवन के पूर्ण आनन्द को प्राप्त कर लेना है।

''तुम व्यर्थ ही चिन्ता करते हो, तुम्हें तो निश्चिन्त हो जाना है, और निश्चिन्त व मुक्त भाव से ही मृदुगान गाते हुए, नृत्यमय होकर, इस पृथ्वी तल पर प्रेममय वातावरण का विस्तार करना है... और यह तभी सम्भव हो सकता है, जब तुम मेरी सुगन्ध से आप्लावित होओगे, जब तुम पूर्ण श्रद्धा से समर्पित हो जाओगे, जब तुम्हारा अपना कोई अस्तित्व नहीं रहेगा, क्योंकि तुम्हारे चारों ओर मेरा ही अस्तित्व है... तभी तुम मेरे ज्ञानामृत को अपने हृदय में, अपने शरीर में समाहित कर सकोगे, तभी तुम जीवन के सौन्दर्य और सत्य का साक्षात्कार कर सकोगे।''

इस प्रकार पूर्ण समर्पित होते हुए लीन हो जाने की क्रिया व्यक्ति के सांसारिक प्रपंचों की मृत्यु होती है...

और जिस प्रकार रात्रि के गहन अन्धकार के बाद पुन: सूर्य अपनी रोशनी से जगत को प्रकाशवान करता है, उसी प्रकार गुरुदेव भी शिष्य के संचित पाप कर्मों की मृत्यु कर पुन: अपने ढंग से उसके जीवन का निर्माण करते हैं... फिर होता है उस शिष्य का पुनर्जन्म, जो सारे जगत को सूर्य की किरणों की ही भांति प्रकाशवान करने में समर्थ होता है।

...और इसीलिए 21 अप्रैल, जो कि पूज्य गुरुदेव के 'जन्म-दिवस' के रूप में मनाया जाता है, 'गुरु दिवस' भी कहलाता है, वास्तव में इसे 'गुरु दिवस' न कहकर 'शिष्य दिवस' ही कहा जाना ज्यादा उचित होगा, क्योंकि यह सही अर्थों में शिष्य के जीवन का पुनर्जन्म ही होता है, और हम सद्गुरुदेव का जन्म दिवस हर वर्ष 21 अप्रैल पर शिविर के रूप में मनाते हैं, जो कि पूरे जोश, उमंग और उत्साह के साथ मनाया जाता है।

यह पर्व तो उल्लास का पर्व है, अपने-आप को खो देने का पर्व है, गुरु को अपने हृदय में समाहित कर लेने का पर्व है, आत्म-तत्व से साक्षात्कार का पर्व है, क्योंकि इस दिवस विशेष पर एक नए शिशु का जन्म होता है, जिसमें गुरु द्वारा दिए सुसंस्कारों का समावेश होता है, और जो शक्ति द्वारा इस समाज को अपने प्रकाश से आलोकित कर देता है...क्योंकि उसका चिन्तन, उसका विचार, उसके अन्दर समाहित ज्ञान और प्रकाश सभी कुछ उस गुरु का होता है, जो रक्त बनकर उसकी धमनियों में प्रवाहित होने लग जाता है, क्योंकि गुरुदेव ही स्वयं पूर्णरूप से उसके हृदय, उसकी आत्मा, उसके रोम-रोम में समाहित हो जाते हैं...फिर उसमें और गुरु में कोई भेद नहीं रह जाता, क्योंकि 'गुरु का ज्ञान' ही सही अर्थों में 'गुरु' कहलाता है।

यह जागृति, यह चैतन्यता, यह हृदय स्थापन क्रिया गुरुदेव के जन्मदिवस पर ही सम्भव होती है, क्योंकि यह मात्र गुरु जन्मदिवस ही नहीं है, यह तो शिष्य जन्मदिवस भी है, और इस दिवस विशेष पर प्रत्येक शिष्य को चाहिए, कि वह गुरु चरण-कमलों में उपस्थित हो ही, क्योंकि यह उसके जन्म का पर्व है, यह उसके सौभाग्य का पर्व है, यह उसकी श्रेष्ठता का पर्व है।

इस विशेष पर्व को मानने के लिए तो ब्रह्माण्ड में व्याप्त समस्त देवी-देवता भी व्याकुल रहते हैं, क्योंकि सद्गुरुदेव कोई साधारण व्यक्ति नहीं अपितु ऐसी शाश्वत शक्ति हैं, जो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में हर क्षण विचरण करते रहते हैं। सांसारिक व्यक्ति के लिए तो यह आश्चर्यचकित कर देने वाली बात है, किन्तु यह मिथ्या नहीं है, कई गृहस्थ साधकों ने इस बात को अनुभव भी किया है, और वह भी पूर्णत: प्रामाणिकता के साथ।

उन साधकों व शिष्यों ने उनकी देह से निकलती अष्टगंध का अनुभव किया था, जो कि उनके देवमय होने की प्रामाणिकता को सिद्ध करती है, क्योंकि ऐसी दिव्य गंध किसी साधारण व्यक्ति की देह से नहीं आ सकती, वह तो किसी उच्चकोटि की देवात्मा के ही शरीर से प्रवाहित हो सकती थी, और कई शिष्यों ने तो, जिन पर गुरुदेव की असीम कृपा-दृष्टि पड़ी, उनके देवत्व स्वरूप के, उनके विराट स्वरूप के दर्शन भी किए, जो कि उनके जीवन की पूर्णता कही जा सकती है।

यों तो नवरात्रि पर्व, महाशिवरात्रि पर्व सभी वर्ष के विशेष दिवसों में से एक माने जाते हैं, किन्तु 21 अप्रैल (गुरु जन्मदिवस) इन सबसे श्रेष्ठ है। गुरु-चरणों में शिष्य का नया जीवन उसके जीवन की श्रेष्ठता ही तो है... और जो उनके वास्तविक स्वरूप से परिचित रहे हैं, उनके लिए तो यह एक विशेष सौभाग्य दिवस है।

यह सौभाग्यदायक दिवस इस युग के लिए एक बहुत बड़ी देन है, कि पूज्य गुरुदेव का जन्म इस धरा पर हुआ और यह कोई साधारण बात नहीं है, इसलिए इस दिन की विशेषता को तो शब्दों में भी नहीं बांधा जा सकता।

गुरुदेव के इस जन्मदिवस को मनाने के लिए, जो कि शिष्यों के ही अनुरोध द्वारा निर्धारित किया गया है... अलग-अलग स्थानों पर साधना शिविर के रूप में मनाते हैं.... शिविर तो माध्यम है गुरु और शिष्य के मिलन का, शिविर तो माध्यम है शिष्य को पूर्ण चैतन्यता प्रदान करने का, शिविर तो माध्यम है गुरु में पूर्णरूप में से एकाकार हो जाने का।

इन शिविरों में गुरुदेव विभिन्न प्रकार के नए-नए रहस्यों, दीक्षाओं और साधनाओं के द्वारा शिष्य की प्राणश्चेतना को जाग्रत करने का प्रयास करते हैं... और जब तक शिष्य उनसे मिलेगा नहीं, तब तक यह प्रक्रिया भी सम्भव नहीं है।

किन्तु कई बार ऐसा होता है, कि मनुष्य चाहकर भी इस विशेष दिवस पर उपस्थित नहीं हो पाता, वह सोचता तो है, परन्तु कई सामाजिक, मानसिक परिस्थितियाँ उसके आड़े आकर खड़ी हो जाती हैं, और उसे रुकने पर मजबूर कर देती हैं, जिस कारण वह इस अवसर पर नहीं पहुंच पाता और अकुलाकर रह जाता है, या फिर उसके पिछले जन्म के कई पाप और दुष्ट ग्रह उसके आगे आकर खड़े हो जाते हैं, जो उसके पांवों में जंजीर डाल देते हैं, कदम-कदम पर विपत्तियाँ उसके आगे दीवार बनकर खड़ी हो जाती हैं और वह विवशतापूर्ण आत्मा से तो गुरुदेव के चरणों में उपस्थित होता ही है, किन्तु शारीरिक रूप से उपस्थित न होकर उस चैतन्यता को, उस प्राणश्चेतना को, उस ज्ञानश्चेतना को ग्रहण कर पाने में असमर्थ ही रहता है।

ऐसे शिष्यों के लिए, जो वहां उपस्थित नहीं हो पायेंगे, उनके लिए एक विशेष साधना को यहां प्रस्तुत किया जा रहा है, जिसे वह व्यक्ति, साधक या शिष्य घर पर ही रहकर इस विशेष दिवस पर सम्पन्न करे, जो इस प्रकार है–

साधना विधान

सामग्री – **गुरु-कृपा माल्य, गुरु रहस्य माला, श्रीयत्व फल (27)।**

दिवस – 21 अप्रैल 2022

समय – प्रात: 4 से 8 बजे के मध्य

दोपहर – 10.48 से 01.12 तक

सांय – 7.36 से 10.00 तक

इन तीनों विशिष्ट मुहूर्तों में से किसी भी मुहूर्त में आप साधना प्रारम्भ कर सकते हैं।

विधि

21 अप्रैल से एक दिन पूर्व ही पूजा-कक्ष को अच्छी तरह स्वच्छ करें तथा फूल मालाओं से सुसज्जित करें। पूजन के लिए एक गुलाब के पुष्पों की माला अथवा अन्य कोई सुगन्धित माला ले आएं तथा अपनी सामर्थ्यानुसार फल तथा मिठाइयाँ ले आएं। 21 अप्रैल को विविध सुस्वादु भोजन बनाएं।

निर्धारित मुहूर्त में अपने आसन पर आकर बैठ जाएं तथा पूजन प्रारम्भ करें।

पूजन क्रम

अपने सामने बाजोट पर पीला वस्त्र बिछाकर **गुरु यंत्र** एवं **गुरु चित्र** स्थापित करें।

पवित्रीकरण

सर्वप्रथम बाएं हाथ में जल लेकर उसे दाईं हथेली से ढक कर निम्न मंत्र पढ़ें–

ॐ अपवित्र: पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
य: स्मरेत् पुण्डीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तर: शुचि:।।

इस अभिमंत्रित जल को दाहिने हाथ की उंगलियों से अपने सम्पूर्ण शरीर पर छिड़कें, जिससे आन्तरिक और बाह्य शुद्धि हो।

आचमन

मन, वाणी, अन्त:करण की शुद्धि के लिए पंचपात्र से आचमनी द्वारा जल लेकर तीन बार निम्न मंत्रों के उच्चारण के साथ पीयें–

ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।
ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा।
ॐ सत्यं यश: श्रीर्मयि श्री: श्रयतां स्वाहा।

शिखा बन्धन

तदुपरान्त शिखा पर दाहिना हाथ रखकर दैवी शक्ति की स्थापन करें, जिससे साधना पथ में प्रवृत्त होने के लिए आवश्यक ऊर्जा प्राप्त हो सके–

चिद्रूपिणि महामाये दिव्य तेज: समन्विते।
तिष्ठ देवि! शिखामध्ये तेजो वृद्धिं कुरुष्व मे।।

न्याय

इसके उपरान्त मन्त्रों के द्वारा अपने सम्पूर्ण शरीर को साधना के लिए पुष्ट व सबल बनाएं। प्रत्येक मंत्र उच्चारण के साथ सम्बन्धित अंग पर जल का स्पर्श करें–

ॐ वाङ्ग मे आस्येऽस्तु – मुख पर
ॐ नसोर्मे प्राणोऽस्तु – नासिका के दोनों छिद्रों पर
ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु – दोनों नेत्रों पर
ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु – दोनों कानों पर
ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु – दोनों बाजुओं पर
ॐ अरिष्टानि में अंगानि सन्तु – सम्पूर्ण शरीर पर

दिशा बन्धन

बाएं हाथ में जल या चावल लेकर, दाहिने हाथ से चारों दिशाओं में व ऊपर-नीचे छिड़कें–

ॐ अपसर्पन्तु ये भूता: ये भूता: भूमि संस्थिता:।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचा: सर्वतो दिशम्
सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे।

गणेशजी का स्मरण

तत्पश्चात् गणपति के बारह नामों का स्मरण करें, प्रत्येक कार्य करने के पूर्व भी इन बारह नामों का स्मरण सिद्धिदायक माना गया है–

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णक:।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायक:।।
धूम्रकेतु गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजानन:।
द्वादशैतानि नामानि य: पठेच्छृणुयादपि।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।

गणपति पूजन के पश्चात् गुरु-ध्यान करें।

ध्यान

येनीदात्ततप: चयेन सततं सन्यस्तमाभूषितं,
ब्रह्मानन्द रसेन सिक्तमनसा शिष्याश्च संभाषिता:।
ब्रह्माण्डं नवराग रंजितवपु: हस्तामलमकवद्धृतं
सोऽयंभूतिविभूषित: गुरुवर: निखिलेश्वर: पातु मां।
श्री ब्रह्मस्वरूपाया निखिलेश्वराय
गुरुभ्यो नम: ध्यानं समर्पयामि।

आह्वान

सर्वात्मने श्री निखिलेश्वराय गुरुभ्यो
नमः आह्वानं समर्पयामि।

आसन

शिष्यप्रियाय श्री निखिलेश्वराय गुरुभ्यो
नमः आसनं समर्पयामि।

अर्घ्य स्नान

विज्ञानात्मने श्री निखिलेश्वराय गुरुभ्यो नमः पाद्यं, अर्घ्यं, स्नानं च समर्पयामि।

वस्त्र, चन्दन, अक्षत

तत्वमस्यादि लक्ष्यात्मने श्री निखिलेश्वराय गुरुभ्यो नमः वस्त्रं, चन्दनम्, अक्षतान् च समर्पयामि।

पुष्प, बिल्वपत्र

परमानन्दरूपाय श्री निखिलेश्वराय गुरुभ्यो नमः पुष्पं, बिल्वपत्रं, पुष्पहारं च समर्पयामि।

धूप दीप

गुणमयातीताय श्री निखिलेश्वराय गुरुभ्यो नमः धूपं, दीपं, नैवेद्यं, च निवेदयामि।

(एक थाली में समस्त भोज्य पदार्थ तथा फल को सजा कर भोजन ग्रहण करने का निवेदन करें।)

ताम्बूल

देहध्यासातीताय श्री परमपुरुषाय निखिलेश्वराय गुरुभ्यो नमः ताम्बूल, दक्षिणा द्रव्यं च समर्पयामि।

नीराजन

कालमयातीताय सर्वदेवमयाय श्री निखिलेश्वराय गुरुभ्यो नमः, नीराजनं, प्रदक्षिणां च समर्पयामि।

उपरोक्त मंत्रों का उच्चारण करते हुए क्रमानुसार उसमें वर्णित सामग्रियों को श्री गुरुदेव के सम्मुख अर्पित करें। 'गुरु-कृपा माल्य' को गले में धारण कर 'गुरु रहस्य माला' से गुरु-मंत्र का तीन, सोलह, इक्कीस या एक सौ आठ माला (अपनी सामर्थ्यानुसार) मंत्र-जप सम्पन्न करें।

गुरु मंत्र

ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः

मंत्र-जप समाप्ति के उपरान्त हवन के लिए अग्नि प्रज्वलित करें तथा निम्न मंत्र बोलते हुए, सुख, सम्पदा व सिद्धि प्रदायक, 'श्रीयत्व फल' को एक-एक कर अग्नि में समर्पित करें–

ॐ नारायणाय नमः स्वाहा।
ॐ भुवनेश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ परमेश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ भाग्येश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ योगेश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ वागीश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ पूर्णेश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ मंत्रेश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ तंत्रेश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ यंत्रेश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ व्याप्येश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ श्रीं शेश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ ह्रीं शेश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ क्लीं शेश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ तपसेश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ कालेश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ निखिलेश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ यजनेश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ लेखेश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ करुणेश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ मदनेश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ सकलेश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ ज्ञानेश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ दिव्येश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ सिद्धेश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ अमलेश्वराय नमः स्वाहा।
ॐ इच्छेश्वराय नमः स्वाहा।

तत्पश्चात् गुरु-आरती सम्पन्न करें तथा आसन पर शांत चित्त से बैठ कर, गुरुदेव से हाथ जोड़ कर अपनी गलतियों के लिए क्षमा-प्रार्थना करते हुए, गुरुदेव की कृपा-प्राप्ति की कामना करें।

इस प्रकार पूजन सम्पन्न करने से निश्चित रूप से मनोवांछित फल प्राप्त होता है। गुरु-चित्र व यन्त्र को अपने पूजा स्थान में ही स्थापित रहने दें, गुरु रहस्य माला को नित्य पूजन के लिए प्रयोग करें।

गुरु कृपा माला- 300/-, श्रीयत्व फल(27)- 101/-,
गुरु रहस्य माला- 300/-

योग शब्द तो छोटा है, पर इसमें गजब की क्षमता है

और इसकी पहिचान एक गुरु ही करा सकता है

योग का चमत्कार

योग शब्द है तो छोटा, पर यह है पूर्ण शक्तिशाली क्रिया। हमारे दैनिक जीवन में अनेकों समस्याएं बनी रहती हैं... अगर हम एक का अनुपालन करते हैं, तो दूसरी खड़ी हो जाती है और हमारी मानसिक चेतना का स्वरूप बदलता रहता है।

हर मानव जीवन के 'भावनात्मक विचारों का स्वरूप' परिवर्तन का माध्यम बनता है, कभी-कभी हम अपनी पहचान और छवि को पीछे छोड़कर निकल जाते हैं, जिसे पश्चात की संज्ञा दी गई है।

लेकिन हमारी आत्मा हमें अच्छाई की ओर ही ले जाती है, जबकि बाह्य स्वरूप जिसका हम सबसे अधिक उपयोग करते हैं . . .वह इसी आत्मा की आवाज को नहीं सुन पाता और न ही इसे वश में कर पाता है, और हम अपनी चेतना को बीच रास्ते में ही छोड़कर मुड़ जाते हैं और हम क्रोध, लोभ, हीनता, अभाव, अज्ञानता जैसे स्वभाव को जन्म देकर अपने ही सुखों को अपने आप से छीन लिया करते हैं। हम अपनी पहचान को अक्सर भूल जाते हैं।

बड़े-बड़े 'ज्ञानी', अज्ञानी बन जाते हैं, क्योंकि वह तो अपने आपको भूल गया है, कि वह कौन है...? और विनाश की सीढ़ी की ओर चले जाते हैं।

स्वस्थता और मनोभाव का सकारात्मक रूप योग की उपज है। योग साधना और इसके अनेकों लाभ आपकी आंखों के सामने खड़े हैं, पर आप उसे पहचान नहीं पा रहे हैं, क्योंकि ऐसा हम सोच नहीं पाते हैं। जिस तरह अंधकार में रखा सामान बिना प्रकाश के दिखाई नहीं पड़ सकता है; ठीक उसी हमारे दैनिक जीवन के पहलुओं पर 'गुरु' ही सार्थक हैं, प्रकाशवत् हैं।

पूर्वकालीन और मध्यकालीन युगों से लेकर आज तक 'गुरु' का स्थान सर्वोत्तम रहा है और आगे भी रहेगा। कहा जाता है, गुरु का एक निश्चित स्थान नहीं होता, क्योंकि अगर सच्चे शिष्य उन्हें याद करेंगे, तो वे भला एक स्थान पर कैसे रह पायेंगे। इसीलिए कहा गया है - ''गुरु ही पत्थर को देव और निरर्थक को भी सार्थक रूप देने वाले हैं, जिन्हें भुलाया नहीं जा सकता है।''

योग का अर्थ होता है - ज्ञान का संचालन करना - और जिसकी जरूरत हम सबको है। योग को अगर हम अपनाते हैं, तो इससे अनेकों फायदों को हम अपनी चेतना में हासिल कर सकते हैं। अज्ञानी को भी प्रकाश मिल सकता है और यह प्राकृतिक प्रकाश जब उसे हासिल हो जायेगा, तो वह. . .ज्ञानी के मार्गदर्शनार्थ कहा जायेगा।

योग हमें पूर्ण रूप से स्वस्थ रख सकता है, क्योंकि योग ही प्रकृति का एक उत्तम मित्र है। जब दो मित्रों का सहयोग हमें पूर्ण रूप से मिलेगा, तो निश्चय ही हमारा जीवन सफल हो जायेगा।

हमारे अन्दर एक विशेष छवि होती है, जिसे हम खुद बनाते हैं और उसे तोड़ भी देते हैं। इसका असर हमारी भावनाओं पर पड़ता है, जिसके फलस्वरूप हम रात के अंधेरे में खो जाते हैं। जीवन की प्रत्येक शैली को सोच कर उसका संचालन करने का आधार हमें योग के माध्यम से प्राप्त हो सकता है।

योग हमारी स्मरण शक्ति का भी विशेष रूप में संचालन करता है एवं नई चेतना की

पूर्वकालीन और मध्यकालीन युगों से लेकर आज तक 'गुरु' का स्थान सर्वोत्तम रहा है और आगे भी रहेगा। कहा जाता है, गुरु का एक निश्चित स्थान नहीं होता, क्योंकि अगर सच्चे शिष्य उन्हें याद करेंगे, तो वे भला एक स्थान पर कैसे रह पायेंगे।

इसीलिए कहा गया है –

''गुरु ही पत्थर को देव और निरर्थक को भी सार्थक रूप देने वाले हैं, जिन्हें भुलाया नहीं जा सकता है।''

राह भी दिखाता है।

योग साधना के द्वारा असंभव को भी संभव में बदला जा सकता है। योग उपज का साकार रूप भी है।

योग साधना के माध्यम से स्मरण शक्ति पर विशेष अनुकूलताओं का मिश्रण प्राप्त किया जा सकता है।

लेकिन. . .योग आखिर है क्या?

योग एक चुम्बकीय शक्ति है, जिस तरह रेडियो ध्वनि-तरंगों को पकड़ कर स्वर प्रदान करता है; ठीक उसी तरह योग साधना में हमारे जीवन को तरंगों से भर देने की क्षमता है।

अनेक ढंगों से योग का अभ्यास किया जा सकता है, लेटकर, बेड पर बैठकर, चेयर पर बैठकर, अंत:ध्यान अवस्था में जाने के बाद साधक को ऐसा महसूस होता है, कि हमारा मस्तिष्क ब्रह्माण्ड में सैर कर रहा है और उस अवस्था में जाने के बाद आपको आपका मन और शरीर निरर्थक सा लगने लगेगा। इस प्रक्रिया के कम से कम आधे घण्टे बाद आपका मन चेतना अवस्था में लीन होने की कोशिश करेगा; लेकिन चेतना अवस्था में इतनी आसानी से साधक अग्रसर नहीं हो पाता है, क्योंकि सबसे पहले मन को एकत्र करना पड़ता है।

जब आप मन पर योग के द्वारा काबू पा लेंगे, तो आपके अन्दर एक नई किरण का उदय होगा, जिसके माध्यम से आपको प्राप्त होगा यश, सम्मान, शांति, सद्भाव, विवेक, चेतना, मौलिक विचारधारा, आस्था, स्मरण शक्ति।

साधना के माध्यम से जितने भी ज्ञानी पुरुष इस पृथ्वी पर अपनी छवि छोड़ गये हैं, उन्होंने . . .अगर सहारा लिया, तो केवल योग साधना का. . .क्योंकि योग साधना में अनेकों रहस्य छुपे हुए हैं. . .और बिना गुरु सेवा किये इस पर प्रभावी होना कठिन है, क्योंकि इस रहस्य को केवल गुरु ही अवगत करा सकते हैं।

क्योंकि गुरु को ही शास्त्रों में सर्वोपरि कहा गया हैं

यदि हम पूर्वकाल की ओर पलट कर देखते हैं, तो गुरु का मूल अर्थ आसानी से समझ में आ जाता है। भगवान राम हों या अन्य महासिद्ध पुरुष उन्होंने भी गुरु सेवा कर प्रसाद ग्रहण किया... फिर हम तो एक साधारण मानव हैं। गुरु वास्तव में ईश्वर का पहला रूप हैं, इसलिए इनसे ज्ञानी कोई दूसरा हो ही नहीं सकता।

योग साधना में विशेष ध्यान इस बात पर रखा गया है, कि इसका अभ्यास धीरे-धीरे करना चाहिए। सबसे पहले अपने मन पर काबू पाने का प्रयास करें।

योग हमें स्फूर्ति भी प्रदान करता है। इसकी तलाश तो सभी को रहती है। जिसने भी इसे अपनाया, वह सागर की ओर बढ़ता चला गया।

स्वस्थ चिंतन का प्रतीक योग है। हमारे जीवन में अगर कोई सच्चा दोस्त है, तो वह है 'योग'। जो कल पर्देकी ओट में छुपा हुआ था, आज वह हमारी आंखों के सामने है, फिर भी अगर हम इसे नहीं अपनाते हैं, तो हमारा दुर्भाग्य होगा। योग और साधना मित्र हैं। साधना के द्वारा हमारी चेतनाओं का उदय होता है और इसके उदय हो जाने से हमारे चिंतन स्वरूप का विकास बड़े ही आसान, सरल ढंग से हो जाता है। परित्याग जैसे अन्यवादों का भी योग संचालक है।

पूर्ण ध्यान केन्द्रित हो जाने पर आपकी चेतना 'ब्रह्माण्ड' में घूमने लगेगी और इसी ब्रह्माण्ड के द्वारा भविष्यवाणी व आश्चर्य जनक बातों का सामना करना पड़ता है, जो हमें चौंका दिया करता है। फलस्वरूप हमारी आत्मा भविष्यवाणियों का इंतजार बेताबी से करने लगती है। कठिनाइयों पर भी योग साधनाओं से काबू पाया जा सकता है, इस विशेष रहस्य का पता तो योग के मार्फत ही मिल सकता है और इसके संचालक गुरु ही होंगे।

जब आप मन पर योग के द्वारा काबू पा लेंगे, तो आपके अन्दर एक नई किरण का उदय होगा, जिसके माध्यम से आपको प्राप्त होगा यश, सम्मान, शांति, सद्भाव, विवेक, चेतना, मौलिक विचारधारा, आस्था, स्मरण शक्ति।

योग हमें पूर्ण रूप से स्वस्थ रख सकता है क्योंकि योग ही प्रकृति का एक सच्चा मित्र है। जब दो मित्रों का सहयोग हमें पूर्ण रूप से मिलेगा तो निश्चय ही हमारा जीवन सफल कहा जायेगा।

समस्त सिद्धियों का आधार है

गुरु साधना सिद्धि

जब व्यक्ति के पुण्य कर्म उदय होते हैं तब उसके मन में यह भावना जाग्रत होती है कि मैं आगे बढ़कर गुरु के चरणों में बैठूं, उनकी सामीप्यता प्राप्त करूँ, उनकी आज्ञानुसार कार्य करूँ। यह भाव ही सद्गुरुदेव के हृदय को द्रवित कर सकता है।

भावना के वश में भगवान होते हैं और एक प्रसिद्ध श्लोक में लिखा है कि–

मन्त्र, तीर्थ, वैद्य और गुरु में पूर्ण आस्था ही सिद्धिप्रद कही गई है।

सम्पूर्ण हृदय को चैतन्य और जाग्रत कर शंका और तर्क से रहित होकर सच्चे मन से की गई सेवा और आराधना द्वारा गुरु को पूर्ण रूप से प्राप्त किया जा सकता है।

यह तो एक सम्मोहन क्रिया है, जिसके द्वारा गुरु शिष्य के वश में हो जाता है और इस साधना में संवाद की आवश्यकता कहाँ है, गुरु की पैनी दृष्टि तो हर साधक पर, हर क्षण टिकी रहती है और गुरु शिष्य को परखते रहते हैं, उसे नीचे से आधार देकर कुम्हार की तरह ठोकते–पीटते रहते हैं और उसके पापों का क्षय करते रहते हैं और यही इच्छा रहती है कि शिष्य पूर्ण रूप से सिद्ध हो जाय, ब्रह्मानन्द को प्राप्त हो, उसके चक्रों का भेदन होकर वह सहस्रार सिद्धि प्राप्त करे।

शिष्य द्वारा अपने भटकने की स्थिति में हर एक को गुरु बना लेना उचित नहीं है, आजकल तो बातचीत में मित्र भी आपस में गुरु कहकर सम्बोधन करते हैं। क्या यह उचित है?

शास्त्रोक्त कथन है कि शिष्य को गुरु बनाने से पहले उसमें छः गुणों को अवश्य ही देखना चाहिए—

1. जो कुलीन, सौम्य भाव एवं सरल जीवन से युक्त हो।
2. जो शिष्य की समस्याओं को उसकी व्यावहारिक कठिनाइयों को समझता हो, और उन कठिनाइयों को को दूर करने का उपाय बताता हो।
3. जिसमें ज्ञान की गरिमा और गम्भीरता हो और अपने प्रवचनों के माध्यम से उस ज्ञान को शिष्यों को प्रदान करता रहे।
4. जो स्वस्थ, उन्नत शरीर का स्वामी हो और गरिमायुक्त हो।
5. जिसमें समस्त प्रकार की साधनाओं का सार हो।
6. और सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि जिसके पास बैठने से मन में अपूर्व शान्ति प्राप्त हो।

गुरु महिमा

रुद्रयामल तन्त्र के प्रथम खण्ड में लिखा है कि शिष्य के लिए संसार का आधार गुरु ही है, केवल मात्र गुरु की प्रसन्नता से ही साधक सिद्धाश्रम प्राप्त कर लेता है।

गुरु मूलं जगत् सर्वं गुरु मूलं परं तपः।
गुरोः प्रयास मात्रेण मोक्षपाप्नोति सद्-वशी।।

मुण्डमाल तन्त्र के पहले पटल पर कहा गया है कि एकमात्र गुरु ही शिष्य को भौतिक एवं आध्यात्मिक सभी कामनाओं में पूर्णता दिलाने वाले परम तत्व हैं और गुरु की प्रसन्नता के बिना करोड़ों साधनाओं तथा पुरश्चरण का कोई फल प्राप्त नहीं होता।

जो साधक गुरु साधना के बिना, केवल पुस्तक के आधार पर साधनाएँ और मन्त्र जप करता है, और उसे यदि गुरु कृपा का आधार प्राप्त नहीं है तो उसकी साधना व्यर्थ है। गुरु द्वारा दिये गये शब्द ही साधना का आधार हैं इसलिए साधक को पूर्ण प्रयत्न कर गुरु की सामीप्यता अवश्य ही प्राप्त करनी चाहिए।

गुरुदेव तो त्रिगुणात्मक स्वरूप हैं

ब्रह्मा, विष्णु, महेश, आद्या शक्ति रूप में स्वयं में समाहित किये हुए साधारण आम आदमी सा दिखने वाला व्यक्तित्व अत्यन्त विलक्षण लीलाधारी है, सेवा में रत सेवक, साधक एवं विशिष्ट शिष्यों को भी समय-समय पर भरमाया करते हैं, माया का पर्दा उनकी खुली आँखों पर भी डालते रहते हैं, और यह सब करते हुए बिल्कुल अनजान; कभी-कभी पूर्ण अज्ञानी की भूमिका निभाते हुए शिष्य से भी निचले स्तर पर स्वयं को प्रतिष्ठित कर मुस्कराते रहते हैं, अन्दर ही अन्दर कैसी अद्भुत माया है गुरु की, जो सहज ही जानी नहीं जा सकती, चर्म चक्षुओं से गुरु जैसा दिखता है, वैसा है नहीं, अन्तर्चक्षु खुलने पर ही कभी-कभी उसका दिव्य रूप परिलक्षित होता है, साक्षात्कार होता है उसके ब्रह्म रूप से, मगर हर पल गुरु का प्रयास रहता है कि शिष्य उसे समझे नहीं, उसे पहिचाने नहीं। इस दौर में जिस दिन गुरु अपनी हार स्वीकार कर लेता है, शिष्य का सौभाग्य उदय होता है, उसके जीवन के पुण्यों का फल उसके समक्ष होता है, गुरु शिष्य को सीने से लगा लेता है, वह सिद्धि जिसे ब्रह्म सिद्धि कहा जाता है, पूर्णता मिलते ही शिष्य, शिष्य नहीं रह जाता, गुरुत्व बन कर गुरु की ही आत्मा का पूर्ण चेतन अंश बन जाता है, शिव शिवा रूप में गुरु का वरद हस्त शिष्य के भाल पर आशीर्वाद की वर्षा करता है और यह वरदानमयी बेला ही शिष्य का शृंगार है और जीवन की पूर्णता है।

सांसारिक जीवन में तो नित्य नई बाधाएं आती ही हैं, क्योंकि साधक जब अपने गुरु की खोज में तल्लीन होता है तो उसके पाप कर्म कभी गृहस्थ रूप में, कभी सामाजिक आलोचना के रूप में उसके सामने आकर खड़े होते हैं और उसे रोकते हैं, लेकिन जो व्यक्ति यह ठान लेता है कि मुझे अपने इस जीवन में अपने पूर्व जन्म के गुरु की खोज करनी ही है और उनके चरणों में बैठकर पूर्णता से समर्पण कर देना है, तभी वह पूर्ण शिष्य बन सकता है, अपने गुरु को प्राप्त कर सकता है।

जीवन का वास्तविक सौन्दर्य

जीवन में और केवल इस छोटे से 60 साल के जीवन में बहुत कुछ प्राप्त किया जा सकता है। जीवन का लक्ष्य और प्रयोजन प्राप्त किया जा सकता है, और यह स्थिति गुरु शिष्य को अपने समीप बैठा कर स्पष्ट करते हैं, उसे वह मार्ग दिखाते हैं, जिस पर चल कर स्वस्थ और आनन्दयुक्त जीवन व्यतीत किया जा सके, उसके बाह्य और अन्तः दोनों शरीर को पवित्र कर आत्मा और ब्रह्म से साक्षात्कार कर सकता है। जिस उद्देश्य के लिए उसका जन्म हुआ है उस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए क्या आवश्यक है और किस प्रकार वह अपने उत्तरदायित्वों को पूर्ण रूप से निभा सकता है? यह मार्ग केवल सद्गुरु ही बता सकते हैं।

इसीलिये कहा गया है कि–

'जो कोई सेवे मूल को फूले फले अघाय'

पत्तों पर पानी डालने से पेड़ हरा-भरा नहीं होता, पेड़ हरा-भरा होता है जब उसकी जड़ में शुद्ध और निर्मल पानी डाला जाता है।

इसलिये शिष्य में प्रेम, समर्पण, श्रद्धा, विनम्रता एवं निर्मलता के साथ कर्तव्यनिष्ठा एवं अनुशासन जैसे गुणों का होना भी आवश्यक है। यह गुण शिष्य को गुरु के समीप लाते हैं और उसे एकाकार कर देते हैं।

गुरु से मन्त्र का जन्म होता है, और मन्त्र से देवता उत्पन्न होते

सेवा और समर्पण सिर्फ शब्दों से नहीं होते, यह सिर्फ होठों से उच्चारण की चीज नहीं है,

यह तो एक भाषा है। सेवा एवं समर्पण किसी दूसरे को नहीं देखता कि दूसरा अपना कर्त्तव्य पालन कैसे कर रहा है, उसे तो सिर्फ और सिर्फ गुरु और गुरु की आज्ञा का ही भान रहता है।

हैं, जो शिष्य गुरुमुख से महामन्त्र प्राप्त करता है और जो बीज देवता से उत्पन्न होता है उसको पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है, देवता का शरीर बीज से उत्पन्न होता है, और गुरु की आज्ञानुसार उसकी मुक्ति होती है, इस प्रकार गुरु भावना से तो पूर्णभाव सिद्धि होती है।

मन्त्रे वा गुरुदेवे वा न भेदं यस्तु कल्पते।
तस्य तुष्टा जगद्धात्री किन्न वद्याद् दिने दिने।।

गुरु के प्रसन्न होने पर ही परम प्रभु परमात्मा और देवी भगवती प्रसन्न होती है और गुरु के प्रसन्न न होने पर, उनकी कृपा न मिलने पर वे भी रुष्ट हो जाते हैं। इसलिए संसार सागर को पार करने में गुरु ही कर्ता, धर्ता और मोक्ष प्रदान करने वाले हैं।

गुरुः कर्ता गुरुर्हर्ता गुरु माता मही तले।
गुरु सन्तोष मात्रेण तुष्टाः स्युः सर्व देवताः।।
गुरु तुष्टे शिवस्तुष्टौ रुष्टे रुष्टस्त्रिलोचनः।
गुरौ तुष्टे शिवे तुष्टा तुष्टे रुष्टा च सुन्दरि।।

गुरु ही इष्ट

शास्त्रों में गुरु की महिमा को सर्वाधिक क्यों स्वीकार किया गया है। इसलिए कि हमने ईश्वर को देखा नहीं, हमने जगदम्बा भवानी, शिव या विष्णु के दर्शन भी नहीं किये, हम उन्हें पूर्ण रूप से पहिचानते भी नहीं और हमें इस बात का ज्ञान भी नहीं कि उनको प्राप्त करने के लिए क्या करना चाहिए। पर शिष्य और परम पिता परमात्मा अर्थात् सम्पूर्ण इष्ट के बीच एक कड़ी है जिसे गुरु कहा जाता है। वह गुरु आपको भी पहिचानता है और गुरु का परिचय इष्ट से भी है। इसलिए गुरु के माध्यम से ही इष्ट तक पहुँचा जा सकता है, उसके सम्पूर्ण स्वरूप के साक्षात् दर्शन किये जा सकते हैं। गुरु के बताये मार्ग पर चल कर ही हम अपने जीवन का लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं, केवल गुरु ही शिष्य को सही दिशा निर्देश दे सकते हैं, उसकी उंगली पकड़ कर सही रास्ते पर चला सकते हैं, इसीलिए शास्त्रों में गुरु के महत्व को एक स्वर में स्वीकार किया गया है।

'गुरु' शब्द कहने का अर्थ

रुद्रयामल तन्त्र में कहा गया है कि ग-कार सिद्धिदायक है और र पाप का दाह करने वाला है, उकार को शुभ कहा गया है, इस प्रकार इन तीनों के समन्वित स्वरूप को 'गुरु' शब्द से सम्बोधित किया गया है।

कंकाल मालिनी तन्त्र के पहले पटल में स्पष्ट रूप से बताया गया है कि 'गुरु' शब्द के दोनों अक्षर क्रमशः निर्गुण और परब्रह्म हैं, एक प्रकार से कहा जाय तो यह गोपनीय महामन्त्र है, और संसार के सभी मन्त्रों से श्रेष्ठ है।

गुरु तन्त्र में स्पष्ट रूप से बताया गया है कि जिसकी जीभ के अग्रभाग में गुरु शब्द रहता है, उसे जीवन में व्यर्थ का कोई मोह नहीं रहता, उसे वेद और शास्त्र पढ़ने की कोई आवश्यकता नहीं रहती, केवल मात्र 'गुरु' में एकत्व होने से ही ब्रह्म हत्या दूर हो जाती है परशुराम अपनी माता के वध से और इन्द्र ब्रह्म हिंसा के पाप से केवल 'गुरु' की कृपा से ही मुक्त हुए थे।

गकारः सिद्धिदः प्रोक्तो रेफः पापस्य दाहकः।
उकार शम्भुरित्युक्तस्त्रितयात्मा गुरुः स्मृताः।।
निर्गुणं च परं ब्रह्मं गुरुरित्यक्षर द्वयम्।
महामन्त्रं महादेवी गोपनीयं परात्परम्।।
गुरुरित्यक्षरं यस्य जिह्वाग्रे देवि वर्तते।
तस्य किं विद्यते मोहः पाठेवदस्व किं वृथा।।
गुकारोच्चारण मात्रेण ब्रह्महत्या व्यपोहति।
उकारोच्चारण मात्रेण मुच्यते जन्म पातकः।।

वस्तुतः गुरु की महत्ता और गुरु मन्त्र जप को तन्त्र ग्रन्थों में सर्वाधिक महत्व दिया है।

गुरु कृपा तो निरन्तर प्रवाहित है

जिस दिन शिष्य अपने आप को गुरु चरणों में समर्पित कर देता है। गुरु पूजन को आधार बना लेता है तथा गुरु साधना और गुरु मन्त्र उसके रोम-रोम बोलने लगते हैं, तब शिष्य एक नये सिद्धि के मार्ग पर चल पड़ता है और तब वह 'निगुरा' नहीं रहता। गुरु से युक्त हो जाता है, उसके जीवन में वास्तविक सौन्दर्य आ जाता है। मन के भ्रम एक के बाद एक दूर होने लगते हैं, भीतर ही भीतर एक नया प्रकाश उदय होने लगता है।

चिन्तन से, प्राणों से एक स्थिति बन जाती है तो गुरु सिद्धि की स्थिति शिष्य को प्राप्त हो जाती है। गुरु, प्रेम और भावातिरेक में शिष्य को हृदय से लगा सब कुछ न्यौछावर कर देता है, अपना चिन्तन, अपना ज्ञान, अपनी तपस्या, साधना सिद्धि सब कुछ प्रवाहित कर देता है शिष्य के सिर पर हाथ फेर ब्रह्मरंध्र खोल देता है, दे देता है वह ब्रह्म सिद्धि जिसे योगी, ऋषि-मुनि, देवी-देवता भी पाने को आतुर रहते हैं, ब्रह्म से साक्षात्कार की यही निष्काम सिद्धि, गुरु का आशीर्वाद और वरदान बन जाती है। शिष्य में, सेवक में, साधक में भोग और मोक्ष देकर पूर्णता देने वाली गुरु सिद्धि ही ब्रह्म सिद्धि कही गई है, शत् शत् नमन है, गुरु की अहैतुकी कृपा हो—

ध्यान मूलं गुरु मूर्ति पूजामूलं गुरुपदं।
वेद मूलं गुरोर्वाक्यं मोक्ष मूलं गुरु कृपा।।

'मन' लगामहीन अश्व की तरह हर दिशा में दौड़ता रहता है और व्यथित कर देता है व्यक्ति को।

यदि किसी ने इस अश्व पर आरुढ़ होने का प्रयास किया, तो उसे अनेकों भय दिखा कर अपनी पीठ पर से गिरा दिया

कठिन है 'मन' पर नियन्त्रण करना, लेकिन असम्भव नहीं, यदि सद्गुरु का आश्रय मिल जाय, यदि व्यक्ति अपने आपको गुरु के हाथों में सौंप दे, तो इस चंचल अश्व पर नियंत्रण प्राप्त हो ही जाता है।

• सद्गुरुदेव जन्मदिवस पर

हे रे मन! अब मुझे मत डरा

रे मन! कैसा है तू, क्यों मुझे हर क्षण डराता रहता है, सिवाय डराने के और तू करता भी क्या है? जब भी मैं कुछ प्राप्त करने चलता हूँ, तब तू मुझे डरा देता है कि मत कर, इसमें खतरा है... खतरा तो हर जगह है, जब मैं सड़क पर चलता हूँ, तो तू मुझे राह में कोई दुर्घटना न हो जाय, इसलिए डराता है, जब मैं घर में शांति से बैठने की सोचता हूं, तो भी तू हर क्षण मुझे किसी न किसी बात पर डराता ही रहता है। जो होना है, अब हो जाने दे, मुझे आजाद कर दे, मत हो मुझ पर हावी, क्योंकि जब-जब तू मुझ पर हावी होता है, मैं कुछ न कुछ खो देता हूँ... और इसी वजह से अभी तक मैं अधूरा हूँ। तूने मुझे इतना डरा दिया है, इतना अधिक भयभीत कर दिया है, कि मैं उस डर से मुक्त ही नहीं हो पा रहा हूँ। तू हर स्थिति को मेरे समक्ष भयावह और दुष्कर रूप में रख देता है। जब-जब मैंने तुझसे अलग हो कर अपने आप को जानने की कोशिश की है, तब-तब तूने कोई न कोई बहाना बना कर मुझे शांत कर दिया है... और अब तेरी ही वजह से मैं अपना साहस खो बैठा हूँ और एक कायर की भांति लोगों की भीड़ में चलने का आदी हो गया हूँ, उनसे अलग चलने की मेरी हिम्मत खत्म कर दी है तूने, मैं क्या हूँ, यह मैं भूल बैठा हूँ, तुमने मुझे अपने संकेतों से चलने वाला यंत्र बना दिया है।

-लेकिन अब मैं तेरे बहकावे में नहीं आऊँगा, क्योंकि अब मुझे मिल गया है मेरे अस्तित्व की पहिचान कराने वाला। अब मुझे मिला है वो, जिसने मुझे समझा दिया है-प्रेम क्या है, मैं क्या हूँ, क्या कर सकता हूँ? अब मैंने वह व्यक्तित्व पाया है, जिसे कई जन्मों के पुण्यों के फलस्वरूप ही पाया जा सकता है, मैंने अपने जीवन में सद्गुरु को पा लिया है, जिन्होंने मेरी क्षमता का ज्ञान करा दिया है, मुझे हर स्थिति में सबल बनने का उपाय बताया है... और अब मैं तुम्हारी कैद से आजाद हो जाऊँगा।

लेकिन अब तू अपने अस्तित्व को खतरे में पड़ता देख मेरे सामने कई प्रकार की भ्रांतियाँ रखने का प्रयत्न कर रहा है, इस बार मैं अडिग हूँ, चाहे तू कुछ भी कर ले, मैं उस स्थिति को प्राप्त कर ही लूंगा, जहां पर तू मेरे नियंत्रण में आ जायेगा।

अब मैं निरन्तर उस ओर बढ़ रहा हूं, जहां मुझ पर तेरा नियंत्रण समाप्त होकर मेरा नियंत्रण तुझ पर हो जायेगा... अरे!

मैंने अपने जीवन में सद्गुरु को पा लिया है, जिन्होंने मेरी क्षमता का ज्ञान करा दिया है, मुझे हर स्थिति में सबल बनने का उपाय बताया है... और अब मैं तुम्हारी कैद से आजाद हो जाऊँगा।

फिर तू अपनी चालबाजियों पर उतर आया, तभी तो मुझ से तू कह रहा है, कि इस रास्ते की मंजिल पता नहीं कहां है, हर कोई बुद्ध, मीरा या शंकराचार्य नहीं बन सकता, भ्रमित उद्देश्य बना कर चलने से तू अपने लक्ष्य को नहीं प्राप्त कर सकता है।

लेकिन ऐ मेरे मन! इस बार मैं तेरी एक न सुनूंगा, क्योंकि मेरे गुरु ने मुझे सत्य से परिचित कराकर मुझ में साहस का संचार कर दिया है, इसलिए यदि मैं अपने लक्ष्य को इस जीवन में नहीं प्राप्त कर सका, तो भी कोई बात नहीं है, क्योंकि ललिता को मीरा बनने में हजारों वर्ष लग गये, पर जब वह मीरा बनी, तो बहुत कुछ कर पाई। **मैं समझता हूं, कि मीरा को भी तूने डराया होगा, लेकिन उसके संकल्प के आगे तू हार गया, तू डर गया। तेरे बहकावे में आकर जिस समाज ने उस पर लांछन लगाये थे, आज वही समाज उसके रचे पद गाता है–कृष्ण को रिझाने के लिए..**

–और अब मैंने भी ऐसा ही निश्चय कर लिया है, लेकिन तू अपने कुप्रयासों से पीछे नहीं हट रहा है, तभी तो मेरे रास्ते में अवरोध बन कर खड़ा हो जाता है। मेरी बात ध्यान से सुन, जो मैं कर रहा हूँ, करने दे, क्या होगा, ज्यादा से ज्यादा मेरा सब कुछ समाप्त हो जायेगा... और यही तो मैं चाहता हूँ, क्योंकि तब मैं समाज की भेड़चाल से हट कर कुछ सकूंगा। जब भी तेरा अस्तित्व समाप्त होने को होता है, तो तू डर जाता है और इसीलिए मुझे और अधिक डराने लगता है–पर अब मुझे मिल गया है मेरा सम्बल, जो मुझे ले जायेगा उस जगह जहां तू मुझे नहीं पहुंचा सकता है।

मैंने प्रेम के रास्ते पर पांव रख दिया है, प्रेम करने लगा हूं अपने भगवान से, अपने इष्ट से–और तू यह सहन नहीं कर पा रहा है, क्योंकि यह मार्ग तो ऐसा ही है, कि **'तामे दो न समाय'** मैं अपने इष्ट, अपने प्रिय से अलग अस्तित्व मान कर इस मार्ग पर चल ही नहीं सकता, क्योंकि वहां तो सिर्फ वही होगा... **और तू है, कि अपने साथ–साथ काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या और अहं–सब कुछ लेकर चलना चाहता है–ऐसा संभव नहीं है। अब तू चाहे कुछ भी कर, क्योंकि साम, दाम, दंड, भेद हर प्रकार के गुण में माहिर है तू, लेकिन मैं भी अब दृढ़ प्रतिज्ञ हो चुका हूं, कि तू चाहे कितने भी प्रयत्न कर ले, कितना भी डर दिखा ले, पर अब मैं इन सबकी परवाह किये बगैर प्रेम पथ पर बढ़ता ही रहंगा, तेरे डराने का अब मुझ पर कोई असर नहीं होगा।** जानना चाहता है, कि ऐसा कैसे सम्भव है? तो सुन ! मैंने अपने आपको अपने गुरु के हाथों में सौंप दिया है, इसलिए मैं निश्चिन्त हो गया हूं, कि मेरा अब जरा भी अहित नहीं हो सकता, क्योंकि अब मेरे जीवन की बागड़ोर मेरे गुरु ने संभाल ली है। अभी तक तू लगामहीन अश्व की तरह जिस दिशा में भी चाहता था, फिरता रहता था, लेकिन अब तू ऐसा नहीं कर सकता, **क्योंकि मेरे प्रभु, मेरे इष्ट ने लगाम कस दी है तेरी, और अपने हाथों में नियंत्रण ले लिया है तेरा, अब तू विवश हो गया है मेरी बात मानने को... और अब तू मुझे विचलित नहीं कर सकता प्रेमपथ का अनुगामी बन लक्ष्य प्राप्त करने से।**

शिष्य के जीवन में गुरु ही सर्वस्व होता है। इसलिए देवी-देवताओं की साधना करने के साथ गुरु साधना को ही जीवन में प्राथमिकता देनी चाहिए।

शिष्य धर्म

दीक्षाविधिं प्रवक्ष्यामि साधकानां हितेच्छया।
विधाय विधिवद् दीक्षा पशुत्वात् स विमुच्यते।।1।।

शास्त्रोक्त विधि द्वारा दीक्षा ग्रहण के बाद साधक पशुत्व भाव से मुक्त होकर विशिष्ट भाव में प्रवेश करता है।

दीयते परमा सिद्धिः क्षीयते कर्मवासना।
आप्यते परमं धाम तेन दीक्षा स्मृता शिवे।।2।।

हे पार्वति! जिस क्रिया के माध्यम से सांसारिक भोग वासना की समाप्ति व परम तत्व की प्राप्ति संभव होती है, उसे दीक्षा कहते हैं।

ब्रह्मादिकीटपर्यन्तं जगत्सर्वं महेश्वरि।
पशुत्वं मोहितं देव्यास्तस्माद् दीक्षां चरेत् कलौ।।3।।

हे महेश्वरि! ब्रह्मा से लेकर कीट पर्यन्त समस्त प्राणि पशु भावे से आवेष्ठित हैं, उससे मुक्त होने के लिए दीक्षा ग्रहण करना चाहिए।

दीक्षितो याति शरणं दीक्षाहीनो भवेत् पशुः।
दीक्षितस्तु भवेज्ज्ञानी पशुभावोज्झितो विभुः।।4।।

दीक्षा के बिना पशुभाव की समाप्ति हो ही नहीं सकती, दीक्षा के बाद पशुभाव से मुक्त होकर वह साधक ज्ञान एवं ब्रह्मत्व को प्राप्त कर सिद्धि पुरुष बन जाता है।

सर्वपातकमुक्तो हि लभेत् स परमां गतिम्।
यस्य दीक्षा शिवे! नास्ति जीवनान्तं च जन्मिनः।।5।।

दीक्षित साधक सभी पापों से मुक्त होकर परम स्थिति को प्राप्त करता है। हे पार्वती! जिस व्यक्ति की दीक्षा नहीं हो पाती, उसका जीवन व्यर्थ होता है।

स जातु नोत्तरेद् देवि! निरयाम्बुनिधेः क्वचित्।
दीक्षाहीनस्य देवेशि! पशोः कुत्सितजन्मिन्।।6।।

हे पार्वति! दीक्षा के बिना पाप रूपी समुद्र को पार नहीं किया जा सकता, अतः दीक्षा प्राप्त करनी ही चाहिए।

पापौघोऽन्तिकमायाति पुण्यं दूरं पलायते।
तस्माद्यत्नेन दीक्षैषा ग्राह्या कृतिभिरुत्तमैः।।7।।

दीक्षा के बिना साधना की प्रवृत्ति पापों की ओर होती जाती है, पुण्य कर्म छूट जाते हैं, अतः हर प्रयास से दीक्षा लेने का प्रयत्न करना चाहिए।

बाल्ये वा यौवने वापि वार्धकेऽपि सुरेश्वरि!
अन्यथा निरयी पापी पितृन् स्वान्निरयं नयेत्।।8।।

साधक, बाल, युवा अथवा वार्धक्य किसी भी अवस्था में दीक्षा ले सकता है, अन्यथा वह स्वयं पापी होता है तथा अपने समस्त पितृ समुदाय को नरकगामी बना लेता है।

अन्ते पशुर्मनुष्यः सन् पशुयोनिं व्रजेच्छिवे।
पूर्व पुण्यार्जितां प्राप्यं वासनां परमार्थदाम्।।9।।

दीक्षा के बिना व्यक्ति अन्दर परमार्थ की ओर जाने की भावनाएं नहीं आती हैं और अंत में पशुयोनि को वह प्राप्त होता है।

गुरु कुलीनं तंत्रज्ञं सर्वाङ्गैः सुमनोहरम्।
लब्ध्वा भक्तया प्रणम्यादौ तोषयित्वा विशेषतः।।10।।

सत्कुल में उत्पन्न, सुनदर शरीर वाले गुरु की शरण में जाकर, उन्हें प्रणाम करे, सेवा से उन्हें प्रसन्न करे, गुरु दक्षिणा देकर सुनिर्णीत मुहूर्त में साधक श्रद्धापूर्वक दीक्षा ग्रहण करें।

जो शिष्य अपने अहम, छल, कपट आदि को छोड़कर भौतिक श्रेष्ठताओं को भुलाकर गुरुचरणों में झुक जाता है वही सफल होता है।

गुरु वाणी

- जीवन में स्वयं के प्रयत्नों से साधना में सफलता प्राप्त नहीं हो सकती। उसके लिए तो एक सही मार्गदर्शक, एक सद्गुरु की आवश्यकता होगी।
- आपके भाग्य में अनेकों कष्ट, दु:ख, दारिद्र्य लिखा हो सकता है और उनका सबका कारण है आपके पूर्वजन्म कृत दोष। उस भाग्य लिपि को बदलने का एकमात्र साधन है मंत्र साधना।
- साधना के माध्यम से गरीबी को अमीरी में परिवर्तित किया जा सकता है। साधना द्वारा बीमारी को दूर कर सकते हैं तथा साधना के माध्यम से जीवन के भोग, सुख, ऐश्वर्य, सम्पन्नता, वैभव, प्रभु दर्शन सभी कुछ प्राप्त किया जा सकता है।
- अगर भाग्य में नहीं भी हो तो भी मंत्र साधना द्वारा लिखा जा सकता है कि आपके भाग्य में ऐसा हो। साधना द्वारा तो असंभव को भी संभव किया जा सकता है। परंतु पोथी पढ़कर आप साधना नहीं कर सकते। पुस्तक से प्राप्त किया गया मंत्र आपको सफलता प्रदान कर दे कोई गारंटी नहीं है।
- परन्तु सद्गुरु द्वारा प्रदत्त मंत्र पूर्ण सफलतादायक होता ही है योंकि सद्गुरु पहले स्वयं उस मंत्र को उस साधना को टेस्ट करता है और तभी आगे शिष्यों को वह साधना प्रदान करता है।
- गुरु दीक्षा प्राप्त साधक या शिष्य जब गुरु द्वारा बताए मंत्र से साधना सम्पन्न करता है तो उसे लाभ प्राप्त होता ही है क्योंकि उसके द्वारा साधना में कोई त्रुटि रह भी जाए तो भी सद्गुरु उन त्रुटियों के प्रभाव को समाप्त कर अपनी दिव्य साधनात्मक शक्ति द्वारा उसे सफलता प्रदान कर देते हैं।

शत्रु एवं बाधा निवारण हेतु

बगलामुखी सिद्धि

आज का जीवन अत्यधिक असुरक्षित और भयप्रद बन गया है समाज में जरूरत से ज्यादा द्वेष, छल, हिंसा और शत्रुता का वातावरण बन गया है

फलस्वरूप यदि व्यक्ति शान्तिपूर्वक रहना चाहे भी तब भी सम्भव नहीं होता

यह साधना शत्रुओं को परास्त करने, उन्हें निस्तेज करने तथा लड़ाई-झगड़े,
मुकदमे आदि में पूर्ण सफलता देने में विशेष रूप से सहायक है,
यही नहीं अपितु यदि अचानक कोई संकट आ गया है
तब भी यह साधना संपन्न करने पर वह संकट समाप्त हो जाता है
और सामने वाला व्यक्ति शत्रु भाव भूल जाता है।

जीवन की सुरक्षा और शत्रुओं पर निर्मम प्रहार करने और उन्हें नेस्तनाबूद करने की दृष्टि से यह अपने आपमें अद्वितीय साधना है।

प्रत्येक साधक को यह साधना अपने जीवन में अवश्य सम्पन्न करना चाहिए। इससे जहां एक ओर महाविद्या तो सिद्ध होती है, वहीं दूसरी ओर व्यक्ति शत्रुओं की तरफ से निश्चिन्त हो जाता है। यदि कोई व्यापार में बाधक बन रहा हो या बॉस अथवा ऑफिसर नुकसान पहुंचाने की कोशिश कर रहा हो या किसी ने आप पर मुकदमा कर दिया हो अथवा आपको प्राणों का भय हो या आप किसी भी दृष्टि से असुरक्षित अनुभव कर रहे हो तो यह साधना सर्वश्रेष्ठ साधना है।

यदि निष्ठापूर्वक इस साधना को सम्पन्न किया जाय तो हाथों हाथ फल प्राप्त होता है तथा जीवन में पूर्ण अभयता प्राप्त होती है।

साधना रहस्य

बगलामुखी जयंती से या किसी भी महीने के मंगलवार से रात्रि को यह साधना प्रारम्भ की जा सकती है, इसमें निम्न उपकरण होने चाहिए- 1. जल पात्र, 2. कुंकुम (रोली), 3. चावल, 4. आधा मीटर, चौकोर पीला वस्त्र, 5. मन्त्रसिद्ध प्राणप्रतिष्ठायुक्त 'बगलामुखी यंत्र व चित्र', 'हरिद्रा हंसराज' एवं पीली हकीक की माला।

साधना विधि

मंगलवार की रात्रि को स्नान कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर आसन पर बैठ जाएं, साधक पीली धोती ही पहनें और यज्ञोपवीत को पीले रंग में रंग कर गले में धारण कर लें।

फिर सामने पीले वस्त्र पर **'बगलामुखी यंत्र व चित्र'** स्थापित कर दें और उसके सामने ही **'हरिद्रा हंसराज'** स्थापित कर दें, तत्पश्चात् धूपबत्ती ओर दीपक लगा लें। इसमें शुद्ध घी का ही दीपक लगाया जाना चाहिए और दीपक के घी में चुटकी भर हल्दी डाल दें। साधना में यदि **'हल्दी की माला'** का प्रयोग करें तो ज्यादा उचित रहता है।

सर्वप्रथम जल से यंत्र चित्र को धोकर केसर लगावें और फिर हरिद्रा हंसराज पर निम्न मंत्र दियासलाई की सलाका से या किसी तिनके से केसर के द्वारा अंकित करें-

।। ॐ पीताम्बरा देव्यै नमः ।।

फिर मंत्र जप प्रारम्भ करें। नित्य 21 माला निम्न मंत्र का जप 11 दिन तक करें तो शत्रु निस्तेज हो जाते हैं। पूर्ण सिद्धि हेतु ग्यारह दिनों में सवा लाख मंत्र जप करने होते हैं।

मंत्र

।। ॐ ह्लीं बगलामुखीं (अमुक) शत्रुणां नाशय मर्दय ह्लीं फट्।।

यह मंत्र छोटा सा है पर अपने आप में अत्यधिक महत्वपूर्ण है। निष्ठापूर्वक इस साधना को सम्पन्न करना चाहिए और साथ ही साथ ग्यारह दिनों तक पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। इस मंत्र में अमुक शब्द के स्थान पर शत्रु के नाम का उल्लेख करना चाहिए। जब ग्यारह दिन में मंत्र जप पूरा हो जाय तो उस **हरिद्रा हंसराज** को जंगल में जाकर लकड़ियां जला कर उसमें उसे जला देना चाहिए।

इस प्रकार करने पर तुरन्त मनोवांछित कार्य सिद्धि हो जाती है और जीवन में हम जो कुछ चाहते हैं, वैसा हो जाता है। वास्तव में ही यह साधना अपने आपमें अत्यन्त महत्वपूर्ण और शीघ्र सिद्धिदायक है। भूलकर भी इस प्रयोग को द्वेषवश या किसी को हानि पहुँचाने की दृष्टि से कदापि नहीं करना चाहिए अन्यथा विपरीत प्रभाव भी हो सकता है।

यंत्र, पीली हकीक माला, हरिद्रा हंसराज 550/-

अद्भुत अचरज भरी भौतिक उन्नति के लिए

शंकराचार्य जयंती पर सम्पन्न करें

परिस्थितियाँ दिन पर दिन
बिगड़ती जा रही थीं,
प्रयत्न करने पर भी कुछ हाथ में
नहीं आ रहा था। हर तरफ से प्रहार,
अपमान ही झेलने पड़ रहे थे।किसी से सहायता
की उम्मीद नहीं थी,
सिर्फ भटकता ही जा रहा था,
कई मन्दिरों में गया, देवताओं की
आराधना की, तीर्थ स्थानों पर गया;
जिसने जिस प्रकार का उपाय बताया,
उसी प्रकार से करता रहा...
लेकिन कोई सुधार नहीं हो रहा था।

कार्तिकेय

यंत्र साधना

शायद उस साधु का मेरे द्वार पर आना मेरे पुण्यों का फल ही रहा होगा या फिर भगवान को मेरी स्थिति पर तरस आ गया होगा। उन्होंने मुझसे मेरी इस स्थिति को विस्तारपूर्वक बताने के लिये कहा और मेरे सिर पर अत्यन्त स्नेहपूर्वक हाथ फेरा। उनका स्पर्श मुझे मेरे पिता की याद दिला गया और मैं उनकी गोद में गिर फूट-फूट कर रोने लगा...

अपनी पत्नी और पुत्र का मुख देखता, तो मन में स्वयं से ही वितृष्णा सी होने लगती, कि कैसा पति हूँ, अपनी पत्नी को कुछ नहीं दे पा रहा हूँ; भूख से व्याकुल पुत्र की ओर देखता, तो हृदय आत्मग्लानि से भर जाता, फिर भी वे दोनों मुझे हर क्षण ढांढस बंधाते, कि आज नहीं तो कल सब कुछ ठीक हो ही जायेगा–

और मैं झल्ला पड़ता–'न जाने वह कल कब आयेगा? जब मैं तुम लोगों को खाने के लिए भरपेट भोजन दे पाऊंगा, पहनने के लिए वस्त्र दे सकूंगा।'

मेरी पत्नी समझाती–'हो सकता है, कि यह भगवान की इच्छा हो या भगवान हमारी परीक्षा ले रहा है।'

लेकिन मैं उसकी इन बातों पर चिढ़ जाता और कहता–'जाओ, मुझसे बात मत करो, पता नहीं तुम्हारा भगवान कैसा है, जिसे तरस नहीं आता इस बच्चे पर जो दो दिन से भूखा है।'

जगह-जगह पूजा करके, आराधना करके, अनुष्ठान कराके कुछ भी फर्क न पड़ने से मेरे अन्दर भगवान के प्रति जो विश्वास था, वह रह-रह कर संशय में पड़ जाता और उसी की वजह से मैं अपनी पत्नी पर झल्ला जाता... और कभी-कभी तो भगवान के लिए कुछ न कुछ अपशब्द भी बोल देता; स्वयं को बहुत समझाता, लेकिन वास्तविकता मुझे कल्पना में जीने न देती, क्योंकि तभी दूसरा मन अविश्वास के घेरे में तन कर खड़ा हो जाता और बोल उठता–अपने भाग्य का दोष ईश्वर को मत दो, क्योंकि जो दोषी नहीं है, उसे तुम क्यों दोष दे रहे हो; अगर वह दोषी होता, तो तुम्हारी अवस्था पर उसे तरस न आता।

–वास्तव में यह मेरे भाग्य का दोष ही तो था वरना क्या किसी का भरापूरा व्यापार, एक कुलीन संभ्रान्त धन-धान्य से युक्त परिवार देखते ही देखते एक झटके में ही खाक में मिल जाता।

कुछ वर्ष पूर्व ही तो पिताजी और हम चारों भाई मिलकर व्यापार करते थे और आनन्दपूर्वक रहते थे, लेकिन एक दिन अचानक पिताजी की मृत्यु हो गई, जिससे घर की सारी स्थितियाँ ही बदल गईं।

उस दिन ही मैं व्यापार के कार्य से बाहर चला गया था, अत: पिताजी की मृत्यु की खबर मेरे पास दो-तीन दिन बाद पहुँची। मैं व्यापार का कार्य छोड़कर बीच में ही घर वापस आ गया और अत्यंत व्यथित हृदय से सारे कार्य को सम्पन्न किया।

पिताजी के मृत्यु के पन्द्रह दिन बाद ही जो भाई राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न की तरह माने जाते थे, आपस में अलग-अलग हो गये। उन्होंने पिताजी की सारी जायदाद सिर्फ स्वयं तीनों के नाम करवा ली और मुझे घर से यह कहकर बाहर निकाल दिया, कि 'तुझ पर तो पिताजी का अत्यधिक स्नेह था, इसलिए पिताजी ने तेरे नाम से कई जगह सम्पत्ति रखी ही होगी और हमें इस बात से हमेशा अंजान रखा, तभी तो पिताजी तुझे ही हमेशा व्यापारिक कार्यों से बाहर भेजते थे और अगर हम कभी जाने को भी कहते, तो कोई न कोई बहाना बना देते; इसलिए यहाँ से जाओ, वापस कभी भी कुछ भी मांगने मत आना।'

मैंने उन्हें समझाने की चेष्टा की, कि आप लोगों के मन में व्यर्थ का संशय है, पिताजी ने मुझे कभी आप लोगों से अलग नहीं समझा और पिताजी मुझे केवल इसलिए ही बाहर भेजते थे, क्योंकि बचपन से ही पिताजी मुझे घर में अकेला न छोड़, अपने साथ व्यापारिक कार्यों में बाहर लेकर जाते, जिसके कारण मुझे उन व्यापारियों से जान-पहचान और बातचीत का सन्दर्भ पता था। लेकिन मेरे भाइयों ने कुछ न सुन कर मुझे, मेरी पत्नी और मेरे पुत्र को बाहर निकाल दिया और मेरे अत्यधिक प्रार्थना पर गाँव में थोड़ी सी जमीन, वहाँ का पुराना मकान और कुछ रुपये देकर भेज दिया।

शायद समाज के भय से उन्होंने इतनी सम्पत्ति मेरे नाम कर दी। वहाँ से निकाल कर मैं गांव गया, तो पता चला कि बंजर हो चुकी जमीन और अत्यन्त जीर्ण अवस्था में घर.... कुछ नहीं के स्थान पर कुछ तो था। मैंने अपनी पहचान के व्यापारियों से सारी स्थिति बताकर व्यापार करना चाहा, लेकिन मेरे भाइयों ने हर जगह मुझे धूर्त और मक्कार कहकर बदनाम कर दिया।

अत: कोई भी व्यापारी मुझे सहयोग नहीं दे रहा था और जो मुझे सहयोग देना चाहते थे, उन्हें भाइयों ने धमका दिया था। कोई भी आय का साधन नहीं बन पा रहा था, मैंने मजदूरी भी की, बोझ भी उठाये, लेकिन कुछ भी कार्य स्थायित्व नहीं प्राप्त कर सका। हमने घर और जमीन बेच कर उस गाँव से जाने का निर्णय ले लिया था, कि अचानक उसी दिन शाम को दरवाजे पर किसी साधु ने भिक्षा के लिये आवाज लगाई, यह सुनकर मेरी पत्नी रो पड़ी...

कहने लगी–'आज तो घर में कुछ भी नहीं है, जो भिक्षा में दे सकूं और बिना भिक्षा दिये साधु को कैसे विदा करूं?'

कार्तिकेय के कई रूप हैं–'मुरुगन', 'स्कन्द', 'सुब्रह्मण्य' और प्रत्येक रूप में ये अत्यन्त फलदायी भी हैं। दक्षिण देशों में विशेषकर इनकी ही आराधना की जाती है, वहाँ पर ये श्रेष्ठतम देव कहलाते हैं। इनका सम्बन्ध परब्रह्म से मान कर घर में इनकी पूजा होती ही है।

उसे रोता हुआ छोड़ कर मैं बाहर निकला और उन संन्यासी से अत्यन्त रुंधे हुए स्वर में कहा–'बाबा! हमारे घर में कुछ भी खाने को नहीं है, हम तुम्हें क्या दान दें? हो सके, तो मुझे तुम आशीर्वाद ही देते जाओ, कि मैं अपने परिवार के प्रति जितने भी कर्त्तव्य हैं, उनको निर्वाह करने में समर्थ बन सकूँ।'

पूरी स्थिति जानकर उन्होंने मुझे अपने साथ चलने के लिए कहा और मेरी पत्नी से बोले–''यह कल सुबह तुम्हारे पास आयेगा।''

पता नहीं क्यों हमने उनकी किसी भी बात का विरोध नहीं किया।

....और वह संन्यासी अपने साथ मुझे एक सघन वन में गुफा जैसी जगह में ले गये, जिसे शायद वे अपनी साधना करने के लिये प्रयुक्त करते थे। वहाँ पर एक शिला पर उत्कीर्ण कुछ रेखा जैसी थी, पूछने पर पता चला, कि यह 'भगवान कार्तिकेय' का यंत्र है। उनका महत्त्व बताते हुए वे बोले–

''भगवान कार्तिकेय षणमुख ओंकार स्वरूप है। और वेदरूप ही उनका वाहन मयूर है। इनकी साधना सम्पन्न करने से तुम कीर्तिमान, दीर्घायु, सौभाग्यशाली, श्री सम्पन्न, कान्तिमान, सभी प्राणियों से निर्भय और सम्पूर्ण दु:खों से मुक्त हो जाओगे।''

''कार्तिकेय को 'मुरुगन' भी कहते हैं, जिसका अर्थ है–सौन्दर्य, ताजगी, दिव्यता, माधुर्य, आनन्द, सौरभ। अत: तुम्हें जीवन में सफलता दिलाने के लिये यही साधना सम्पन्न करवाऊंगा।''

–और यह साधना सम्पन्न कर मैं वापस घर आ गया। कुछ दिनों बाद ही मेरा भाग्योदय होने लगा और एक पुराने व्यापारी ने मुझे अपने व्यापार में पार्टनर बना लिया, मेरे जीवन में नित्यप्रति परिवर्तन आने लगा और मेरी आर्थिक स्थिति भी सुदृढ़ हो गई। एक दिन सद्गुरुदेव डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली जी की पत्रिका मेरे हाथ लगी, जिसमें उन्हीं संन्यासी का चित्र था, जिन्होंने मुझे साधना सम्पन्न करवाई थी। जोधपुर आने पर पता चला, कि वह संन्यासी ही अब पूज्य गुरुदेव डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली जी के रूप में गृहस्थ रूप में विद्यमान हैं।

इस संसार में मेरे जैसे ठुकराये हुए अनेकों लोग होंगे, उन्हें दर-दर भटकना न पड़े और वे अपने जीवन का नव-निर्माण कर सकें, इसी उद्देश्य से इस साधना को पत्रिका के माध्यम से प्रस्तुत कर रहा हूँ। मेरा नाम जानने से कहीं बेहतर है, कि आप अपने नाम को रोशन करें, इस साधना को सम्पन्न करें।

साधना विधि

- यह साधना 06.05.2022 शंकराचार्य जयंती को अथवा किसी भी माह की शुक्लपक्ष की पंचमी को भी सम्पन्न की जा सकती है।
- यह एक दिवसीय साधना है, जिसे सुबह या शाम किसी भी समय कर सकते हैं।
- इसमें प्रयुक्त सामग्री है–'कार्तिकेय यंत्र' और 'सौभाग्य माला'। साधक शुद्ध स्वच्छ वस्त्र पहनकर यह साधना सम्पन्न करें, वस्त्रों का रंग आसमानी होना चाहिए।
- अपने सामने लकड़ी के बाजोट पर आसमानी (हल्का नीला) आसन बिछायें और लाल रंग से रंगे अक्षत से अष्टदल कमल बना कर यंत्र को स्थापित करें।
- पूजन में घी का दीपक और सुगंधित धूप लगायें।
- फिर यंत्र का पुष्प, अक्षत, कुंकुम व गुलाल से पूजन करें।
- भगवान कार्तिकेय का ध्यान करें–

सिन्देरारुणकान्तिमिन्दुवदनं केयूरहारादिभि-
र्दित्यैरामरणैर्विभूषिततनुं स्वर्गस्य सौख्यप्रदम्।
अम्योजाभशक्तिकुक्कुधरं रक्तांगरागांशुकं,
सुब्रह्मण्यमुपास्महे प्रणमतां मभीतिप्रणाशोधतम्।।

- साधना के प्रारम्भ में गुरु मंत्र की 4 माला और मंत्र के बाद गुरु मंत्र की 4 माला अवश्य करें।
- तत्पश्चात् निम्न मंत्र का 13 माला जप करें–

मंत्र

ॐ कं क्षं कं कार्तिकियाय फट्

- पूजन समाप्ति पर गणपति वंदन, पूजन करें और लड्डू का भोग लगायें।
- साधना समाप्ति पर भोग स्वयं ही खायें।
- यंत्र और माला किसी गणपति मंदिर में चढ़ा दें अथवा नदी में विसर्जित करें।
- 6 से 8 वर्षीय किसी एक बालक को कार्तिकेय का रूप मानकर अपने घर बुलाकर भोजन करावें और यथासम्भव उसे दक्षिणा दें।

इस प्रकार यह साधना पूर्ण होती है और साधक को जीवन में इच्छित फल की प्राप्ति होती है।

साधना सामग्री न्यौछावर– 500/-

राम रक्षा स्तोत्रम्

प्रसिद्ध संत स्वामी महेशानन्दजी भारत की दिव्य विभूति हैं। उनसे इस जीवन में कई बार मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

वे उच्च कोटि के साधक एवं योगी हैं। एक बार जब 'राम रक्षा स्तोत्र' की बात चल पड़ी तो उन्होंने अपने अनुभव बताते हुए कहा कि 'रामरक्षा स्तोत्र' इस युग का सर्वश्रेष्ठ स्तोत्र है।

मैंने अपने जीवन में इस स्तोत्र का विभिन्न अवसरों पर विभिन्न स्थितियों में प्रयोग किया है और वे सभी प्रयोग शत-प्रतिशत सही रहे हैं। बिच्छू काटने से लेकर भयंकर विष का सेवन कर लेने की परिस्थितियों तक में इस स्तोत्र के पाठ से लाभ पहुँचा है। घोर आर्थिक संकट से ग्रस्त व्यक्ति भी इसका पाठ करके कुछ ही समय में ऋण से उबर जाते हैं। नौकरी छूटना, बुखार आना, जी मिचलाना, मुसीबत, व्यर्थ की परेशानी तथा संकटकालीन परिस्थितियों में मात्र एक दो पाठ करने से ही व्यक्ति परेशानी से मुक्त हो जाता है और उसे उसी समय नई राह सूझने लग जाती है।

एक बार महेशानन्दजी के परिचित ने बताया कि मैं एक बार भयानक बीमारी से परेशान था और सैकड़ों उपचार कराकर हार गया था। मन बड़ा उद्विग्न था और उन दिनों मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था। साल भर बाद मेरी स्थिति ऐसी हो गई कि मैं आसानी से चल फिर भी नहीं सकता था। कमजोरी तथा बीमारी ने मेरे जीवन का आनन्द तथा प्रसन्नता समाप्त कर दी थी। एक दिन मैंने इसका जिक्र अपने एक मित्र से किया तो उन्होंने मुझे महेशानन्दजी से मिलने का उपाय सुझाया। मैंने जब महेशानन्दजी से मिलकर अपनी समस्या उनके सामने रखी तो उन्होंने मुझे अपने सामने बिठाकर इस स्तोत्र का पाठ किया और दस मिनट में ही मुझे अपूर्व मानसिक बल मिला। लगभग एक महीने बाद मैं इतना अधिक ठीक हो गया था कि मैं आसानी से मील भर टहल सकता था। मेरे जीवन की जिन खुशियों

का अन्त हो गया था, वे पुन: लौट आईं।

एक दिन जब मैंने महात्माजी से इस स्तोत्र का रहस्य जानना चाहा तो उन्होंने मुझे बताया कि मैंने केवल मात्र राम रक्षा स्तोत्र का ही पाठ किया है। उन्होंने विस्तार से इसका अर्थ भी मुझे बताया, इसके बाद से 'राम रक्षा स्तोत्र' मेरे जीवन की पेटेन्ट दवाई बन चुकी है। जब भी मैं जीवन की किसी भी परेशानी से ग्रस्त होता हूँ तो मैं 'राम रक्षा स्तोत्र' का पाठ करने लग जाता हूँ। एक पाठ से ही मुझे अपूर्व मानसिक बल मिलता है तथा एक सप्ताह के भीतर-भीतर मैं उस समस्या पर विजय प्राप्त कर लेता हूँ।

अब तो मैं स्वयं इस स्तोत्र का प्रयोग कई व्यक्तियों पर कर चुका हूँ। भूत-प्रेत भगाने से लेकर विष उतारने की बाधाओं में लोगों को इसके पाठ की सलाह देता हूँ। वे सदैव इससे लाभ उठाते हैं तथा सफलता प्राप्त करते हैं। इस स्तोत्र के एक-एक शब्द में अपूर्व शक्ति, साहस तथा अमूल्य गुण छिपे हुए हैं। इसके एक-एक शब्द में नई शक्ति है, नई क्षमताएँ हैं बाधाओं पर विजय प्राप्त करने का यह अमोघ साधन है।

कई साल पुरानी बात है। एक दिन मेरी माता जी की हालत अत्यन्त गम्भीर हो गई। वे पिछले काफी वर्षों से बीमार चल रही थीं और उन्हें गुर्दों की बीमारी थीं। अनेक इलाज करवाये तथा तरह-तरह के वैद्यों और डाक्टरों से उपचार भी करवाया, मगर रोग-नियंत्रण में आ ही नहीं रहा था। वह थोड़ा बहुत इलाज कराने पर स्वस्थ हो जाती थी, पर जब वह पथ्यापथ्य का ध्यान न रखती तो बीमारी पुन: उन्हें दबोच लेती।

21 अप्रेल को सुबह जब मैं चाय लेकर उनके पास पहुँचा तब व लगभग संज्ञाशून्य सी बिस्तर पर पड़ी थी। उनकी नाड़ी अत्यन्त मंद गति से चल रही थी। उन्हें हिलाया-डुलाया तो उनके शरीर में किसी प्रकार की हरकत मुझे दिखाई नहीं दी। मैं चिन्तित हो उठा। उसी समय अपने लड़के को भेजकर अपने चिकित्सक को बुलवाया। उन्होंने आकर जब उनकी परीक्षा की तो पता चला कि वह संज्ञा शून्य अवस्था में तीन चार घण्टे से चल रही हैं। नाड़ी स्पन्दन इतना कमजोर हो रहा है कि संभवत: रोगी 3-4 घण्टों से ज्यादा जीवित नहीं रह सकता। मैंने वैद्य जी से प्रार्थना की कि क्या इन्हें शहर के बड़े अस्पताल में ले जाना ठीक रहेगा?
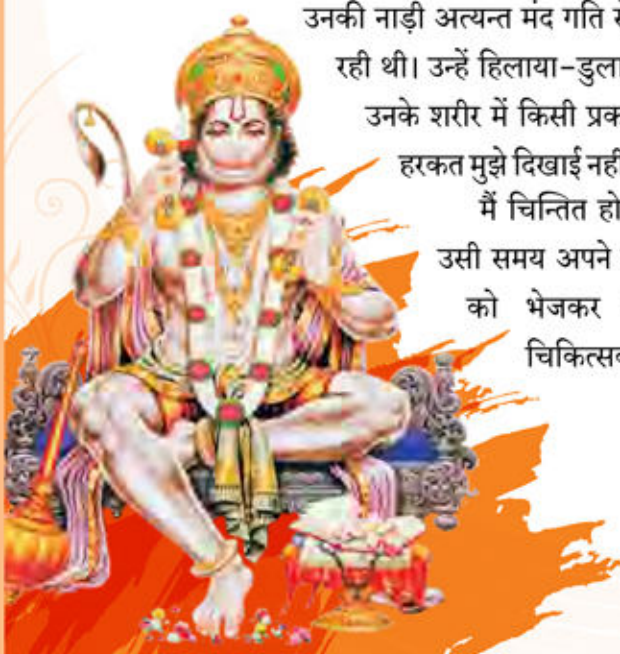
उन्होंने उत्तर दिया कि मेरी राय में वहाँ ले जाना अपने आप में कोई अर्थ नहीं रखता, क्योंकि ऐसा करने से मार्ग में ही प्राण-विसर्जन होने का खतरा है। वैद्य जी अपने घर लौट गये। मैंने आंगन में गंगाजल छिड़कर माताजी को उस पर लिटा दिया। उनके सारे शरीर पर गंगाजल छिड़का, और पास में भगवान रामचन्द्रजी की बड़ी तस्वीर लाकर रख दी। सामने घृत का दीपक लगा दिया एवं सुगन्धित अगरबत्ती जला दी। इसके बाद मैं सस्वर राम रक्षा स्तोत्र का पाठ करने लग गया।

इस प्रकार पाठ करते-करते लगभग तीन घण्टे बीत गए तो मैंने देखा कि माँ ने आँखें खोल दी हैं। वह मुझसे पुन: पलंग पर सोने को कहने लगीं। मैंने उन्हें वहां से उठा कर पलंग पर लिटाया। उन्होंने बताया कि मुझे कुछ ऐसा प्रतीत हुआ कि जैसे मैं इस देह से मुक्त होकर कहीं दूर जा रही हूँ। परन्तु इसके कुछ समय बाद पीछे से श्री राम मुझे वापस बुलाने लगे और ज्यों ही मैं पुन: शरीर में आई, त्यों ही मेरी आँख खुल गई।

राम रक्षा स्तोत्र की अनन्य शक्ति पर मैं श्रद्धा विनीत हो गया और एक प्रकार से इस स्तोत्र के कारण ही माताजी को पुनर्जन्म मिला।

इसके बाद भी अनेक विपत्तियाँ आई, पर राम रक्षा स्तोत्र ने हमेशा मेरी सहायता की।

मेरी ऐसी धारणा है कि असंभव कार्य में भी राम रक्षा स्तोत्र अत्यन्त सहायक तथा सिद्धिप्रद रहता है।

राम रक्षा स्तोत्र

नवरात्रि के प्रारम्भ से रामनवमी तक नौ दिनों तक प्रतिदिन ब्रह्म मुहूर्त में नित्य कर्म से निवृत होकर, शुद्ध वस्त्र धारण कर गुरु पीताम्बर ओढ़कर सुखासन में बैठें और भगवान श्रीराम के स्वरूप का ध्यान कर एकाग्रचित्त होकर इस महान फलदायी स्तोत्र का 11 पाठ नित्य नौ दिनों तक करें यदि न हो सके तो कम से कम 4 पाठ ही करें। श्रद्धा और विश्वास के साथ पाठ सम्पन्न करें।

विनियोग

अस्य श्रीराम रक्षा स्तोत्रमन्त्रस्य बुधकौशिक ऋषि: श्रीसीतारामचन्द्रो देवता अनुष्टुप् छन्द: सीता शक्ति: श्रीमान् हनुमान् कीलकं श्रीरामचन्द्रप्रीत्यर्थे रामरक्षास्तोत्रजपे विनियोग:।

इस राम रक्षा स्तोत्र मन्त्र के ऋषि बुधकौशिक हैं। सीता और रामचन्द्र देवता हैं। अनुष्टुप् छन्द है, सीता शक्ति हैं। श्री हनुमान कीलक हैं तथा श्री राम की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए राम रक्षा स्तोत्र के जप में विनियोग किया जाता है।

ध्यानम्

ध्यायेदाजानुबाहुँ धृतशरधनुषं बद्धपद्मासनस्थं। पीतं वासो वसानं नवकमलदलस्पर्धि नेत्रं प्रसन्नम्।
वामांकारूढसीतामुखकमलमिलल्लोचनं नीरदाभं। नानालंकारदीप्तं दधतमुरुजटामण्डलं रामचन्द्रम्।।

जो धनुष बाण धारण किये हुये हैं। बद्ध पद्मासन में विराजमान हैं, पीताम्बर पहने हुये हैं, जिनके प्रसन्न नयन नूतन कमल दल से स्पर्धा करते तथा वाम भाग में विराजमान श्री सीताजी के मुख कमल से मिले हुये हैं, उन अजानबाहु, मेघश्याम, नाना प्रकार के अलंकारों से विभूषित तथा विशाल जटाजूटधारी श्रीरामचन्द्रजी का ध्यान करें।

स्तोत्रम्

चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम्। एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम्।।1।।
ध्यात्वा नीलोत्पलश्यामं रामं राजीवलोचनम्। जानकीलक्ष्मणोपेतं जटामुकुटमण्डितम्।।2।।
सासितूणधनुर्बाणपाणिं नक्तंचरान्तकम्। स्वलीलया जगत्त्रातुमाविर्भूतमजं विभुम्।।3।।
रामरक्षां पठेत्प्राज्ञ: पापघ्नीं सर्वकामदाम्। शिरो मे राघव: पातु भालं दशरथात्मज:।।4।।
कौसल्येयो दृशौ पातु विश्वामित्रप्रिय: श्रुती। घ्राणं पातु मखत्राता मुखं सौमित्रिवत्सल:।।5।।
जिह्वां विद्यानिधि: पातु कण्ठं भरतवन्दित: स्कन्धौ दिव्यायुध: पातु भुजौ भग्नेशकार्मुक:।।6।।
करौ सीतापति: पातु हृदयं जामदग्न्यजित्। मध्यं पातु खरध्वंसी नाभिं जाम्बवदाश्रय:।।7।।
सुग्रीवेश: कटी पातु सक्थिनी हनुमत्प्रभु:। ऊरू रघूत्तम: पातु रक्ष: कुलविनाशकृत।।8।।

जानुनी सेतुकृत्पातु जंघे दशमुखान्तक:। पादौ विभीषणश्रीद: पातु रामोऽखिलं वपु:।।9।।
एतां रामबलोपेतां रक्षां य: सुकृती पठेत्। स चिरायु: सुखी पुत्री विजयी विनयी भवेत्।।10।।
पाताल भूतलव्योमचारिणश्छद्मचारिण:। न द्रष्टुमपि शक्तास्ते रक्षितं रामनामभि:।।11।।
रामेति रामभद्रेति रामचन्द्रेति वा स्मरन्। नरो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति।।12।।
जगज्जैत्रैकमन्त्रेण रामनाम्नाभिरक्षितम्। य: कण्ठेधारयेत्तस्य करस्था: सर्वसिद्धय:।।13।।
वज्रपंजरनामेदं यो रामकवचं स्मरेत्। अव्याहताज्ञ: सर्वत्र लभते जयमंगलम्।।14।।
आदिष्टवान्यथा स्वप्ने रामरक्षामिमां हर:। तथा लिखितवान्प्रात: प्रबुद्धो बुधकौशिक:।।15।।
आराम: कल्पवृक्षाणां विराम: सकलापदाम्। अभिरामस्त्रिलोकानां रमा: श्रीमान्स: न: प्रभु:।।16।।
तरुणौ रूपसम्पन्नौ सुकुमारौ महाबलौ। पुण्डरीकविशालाक्षौ चीरकृष्णाजिनाम्बरौ।।17।।
फलमूलाशिनौ दान्तौ तापसौ ब्रह्मचारिणौ। पुत्रौ दशरथस्यतौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ।।18।।
शरण्यौ सर्वसत्त्वानां श्रेष्ठौ सर्वधनुष्मताम्। रक्ष: कुलनिहन्तारौ त्रायेतां नो रघूत्तमौ।।19।।
आत्तसज्जधनुषाविषुस्पृशावक्षयाशुगनिषंगसंगिनौ। रक्षणाय मम रामलक्ष्मणावग्रत: पथि सदैव गच्छताम्
संनद्ध: कवची खंगी चापबाणधरो युवा। गच्छन्मनोरथान्नश्च राम: पातु सलक्ष्मण:।।21।।
रामो दाशरथि: शूरो लक्ष्मणानुचरो बली। काकुत्स्थ: पुरुष:पूर्ण: कौसल्येयोरघूत्तम:।।22।।
वेदान्तवेद्यो यज्ञेश: पुराणपुरुषोत्तम:। जानकीवल्लभ: श्रीमानप्रमेयपराक्रम:।।23।।
इत्येतानि जपन्नित्यं मद्भक्त: श्रद्धयान्वित:। अश्वमेधाधिकं पुण्यं सम्प्राप्नोति न संशय।।24।।
रामं दूर्वादलश्यामं पद्माक्षं पीतवाससम्। स्तुवन्ति नामभिर्दिव्यैर्नते संसारिणो नरा:।।25।।
रामं लक्ष्मणपूर्वजं रघुवरं सीतापतिं सुन्दरं। काकुत्स्थं करुणार्णवं गुणनिधिं विप्रप्रियं धार्मिकम्।
राजेन्द्रं सत्यसंधं दशरथतनयं श्यामलं शान्तमूर्तिं। वन्दे लोकाभिरामं रघुकुलतिलकं राघवं रावणारिम्
रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे। रघुनाथाय नाथाय सीताया: पतये नम:।।27।।
श्रीराम राम रघुनन्दन राम राम, श्रीराम राम भरताग्रज राम राम।
श्रीराम राम रणकर्कश राम राम। श्रीराम राम शरणं भव राम राम।।28।।
श्रीरामचन्द्रचरणौ मनसा स्मरामि । श्रीरामचन्द्रचरणौ वचसा गृणामि।
श्रीरामचन्द्रचरणौ शिरसा नमामि। श्रीरामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये।।29।।
माता रामो मत्पिता रामचन्द्र: स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्र:।
सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालुर्नान्यं जाने नैव जाने न जाने।।30।।
दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे च जनकात्मजा। पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम्।।31।।
लोकाभिरामं रणरंगधीरं राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम्। कारुण्यरूपं करुणाकरं तं श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये।।32।।
मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्। वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये।।33।।
कूजन्तं रामरामेति मधुरं मधुराक्षरम्। आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम्।।34।।
आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्। लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम्।।35।।
भर्जनं भवबीजानामर्जनं सुखसम्पदाम्। तर्जनं यमदूतानां रामरामेति गर्जनम्।।36।।
रामो राजमणि: सदा विजयते रामं रमेशं भजे। रामेणाभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नम:।
रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोऽस्म्यहं। रामे चित्तलय: सदा भवतु मे भो राममामुद्धर।।37।।
राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे। सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने।।38।।

।। इति श्री राम रक्षा स्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

पूज्य सद्गुरुदेव का ध्यान करके इस स्तोत्र का पाठ करें और इसका प्रभाव अपने जीवन में प्रत्यक्ष अनुभव करें, यह सद्गुरुदेव की तरफ से आप सभी शिष्यों एवं साधकों को कृपा-प्रसाद स्वरूप है। अत: मनोरथ सिद्ध होने पर दक्षिणा स्वरूप अपने पत्रिका परिवार से और सदस्यों को जोड़कर गुरुदेव की कृपा प्राप्त करें।

ईश्वर/सद्गुरु

एक गाय घास चरने के लिए जंगल में चली गई। शाम ढलने के करीब थी। उसने देखा कि एक बाघ उसकी तरफ दबे पांव बढ़ रहा है।

वह डर के मारे इधर-उधर भागने लगी। वह बाघ भी उसके पीछे दौड़ने लगा। दौड़ते हुए गाय को सामने एक तालाब दिखाई दिया। घबराई हुई गाय उस तालाब के अंदर घुस गई।

वह बाघ भी उसका पीछा करते हुए तालाब के अंदर घुस गया। तब उन्होंने देखा कि वह तालाब बहुत गहरा नहीं था। उसमें पानी कम था और वह कीचड़ से भरा हुआ था।

उन दोनों के बीच की दूरी काफी कम थी। लेकिन अब वह कुछ नहीं कर पा रहे थे। वह गाय उस कीचड़ के अंदर धीरे-धीरे धंसने लगी। वह बाघ भी उसके पास होते हुए भी उसे पकड़ नहीं सका। वह भी धीरे-धीरे कीचड़ के अंदर धंसने लगा। दोनों ही करीब-करीब गले तक उस कीचड़ के अंदर फंस गए। दोनों हिल भी नहीं पा रहे थे। गाय के करीब होने के बावजूद वह बाघ उसे पकड़ नहीं सकता था। थोड़ी देर बाद गाय ने उस बाघ से पूछा, क्या तुम्हारा कोई गुरु या मालिक है ?

बाघ ने गुर्राते हुए कहा, मैं तो जंगल का राजा हूँ, मेरा कोई मालिक नहीं। मैं खुद ही जंगल का मालिक हूँ। गाय ने कहा, लेकिन तुम्हारी उस शक्ति का यहां पर क्या उपयोग है ?

उस बाघ ने कहा, तुम भी तो फंस गई हो और मरने के करीब हो। तुम्हारी भी तो हालत मेरे जैसी ही है। गाय ने मुस्कुराते हुए कहा-बिल्कुल नहीं। मेरा मालिक जब शाम को घर आएगा और मुझे वहां पर नहीं पाएगा तो वह ढूंढते हुए यहां जरूर आएगा और मुझे इस कीचड़ से निकाल कर अपने घर ले जाएगा। परन्तु तुम्हें कौन ले जाएगा ?

थोड़ी ही देर में सच में ही एक आदमी वहां पर आया और गाय को कीचड़ से निकाल कर अपने साथ ले चला। जाते समय गाय और उसका मालिक दोनों एक दूसरे की तरफ कृतज्ञतापूर्वक देख रहे थे। वे चाहते हुए भी उस बाघ को कीचड़ से नहीं निकाल सकते थे, क्योंकि वह उनकी जान के लिए खतरा था।

गाय - समर्पित हृदय का प्रतीक है।

बाघ - अहंकारी मन है।

और

मालिक - ईश्वर/सद्गुरु का प्रतीक है।

कीचड़ - यह संसार है।

और यह संघर्ष - अस्तित्व की लड़ाई है।

किसी पर निर्भर नहीं होना अच्छी बात है, लेकिन मैं ही सब कुछ हूँ, मुझे किसी के सहयोग की आवश्यकता नहीं है, यही अहंकार है और यहीं से विनाश का बीजारोपण हो जाता है।

ईश्वर से बड़ा इस दुनिया में सच्चा हितैषी कोई नहीं होता, क्योंकि वही अनेक रूपों में हमारी रक्षा करता है।

इसलिये मनुष्य के जीवन में सद्गुरु का होना अत्यन्त आवश्यक कहा गया है। क्योंकि गुरु शिष्य के साथ प्रत्येक क्षण खड़ा रहता है। व्यक्ति के जीवन में कर्मानुसार सुख-दुख तो आयेंगे ही परन्तु गुरु प्रत्येक ऐसी परिस्थितियों से उसे निकलने की शक्ति देता है, उसका पथ प्रदर्शन करता है। आवश्यकता है कि हम निस्वार्थ एवं पवित्र हृदय से अपने जीवन में प्रत्येक क्षण उसका स्मरण करें और उसके बताये मार्ग पर चलते रहें।

राजेश गुप्ता 'निखिल'

मेष - माह का प्रारम्भ सतोषप्रद नहीं रहेगा। दाम्पत्य में तनाव हो सकता है, मन अशांत रहेगा। सोच-समझकर निर्णय लें। विद्यार्थी वर्ग को सफलता मिलेगी। आय के स्रोतों में वृद्धि होगी। आपकी स्पष्टवादिता से लोग प्रभावित होंगे। दूसरे सप्ताह में कोई परेशानी आ सकती है, किसी कागजात पर बिना पढे हस्ताक्षर न करें। यात्रा से लाभ होगा। कोई शुभ समाचार मिलेगा। अनावश्यक खर्च पर नियंत्रण रखें। स्वास्थ्य के हिसाब से समय ठीक नहीं है। नशीले पदार्थों का सेवन न करें। तीसरे सप्ताह में मनोवांछित कार्य होंगे। मित्रों का सहयोग मिलेगा। विदेश में सम्पर्क बनेंगे। इस समय नया वाहन न खरीदें। कोई पुरानी बीमारी परेशान कर सकती है। लाभ के साथ-साथ हानि भी उठानी पड़ सकती है। महत्वपूर्ण व्यक्तियों से सम्पर्क बनेगा। आप **कायाकल्प दीक्षा प्राप्त** करें।

शुभ तिथियाँ - 5, 6, 7, 14, 15, 16, 23, 24

वृष -माह का प्रारम्भ सुखद रहेगा। रोजगार के उचित मौके सामने आयेंगे। कोई भी योजना सोच-समझकर कर बनायें। आवेश में कोई निर्णय न लें। कुछ मानसिक टेंशन रहेगा। दूसरे सप्ताह में महत्वपूर्ण कार्य निपटेंगे। सरकारी कर्मचारियों को पदोन्नति मिल सकती है। दोस्तों से सहयोग मिलेगा, अविवाहितों के विवाह के अवसर बनेंगे। कोई अशुभ समाचार मिल सकता है, किसी कारणवश कार्य रुक सकते हैं। अशांति रहेगी, शत्रु यह देखकर प्रसन्न होंगे। विद्यार्थियों के लिए अनुकूल समय है। यात्रा से लाभ होगा। प्यार में सफलता मिलेगी, किसी भी प्रकार की नशे से सम्बन्धित कार्य न करें। मान-मर्यादा को ठेस पहुंच सकती है। काम-धंधा का फैलाव विदेश तक सम्भव है। पत्नी व्यापार में हाथ बंटायेगी। परेशानियां दूर होंगी। स्वास्थ्य का ख्याल रखें। माह का अन्तिम समय पक्ष में न होने से किसी भी अनजान से बिना वजह न उलझें। इस माह आप **सर्व मनोकामना दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 7, 8, 9, 17, 18, 25, 26, 27

मिथुन - प्रारम्भ शुभ है। जमीन-जायदाद के विवाद सुलझेंगे। विद्यार्थी वर्ग पढ़ाई में रुचि लेगा। उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग मिलेगा। अनावश्यक खर्च से बचें। परिश्रम का फल पूरा नहीं मिलेगा। उतार-चढ़ाव की स्थिति रहेगी। जीवनसाथी से मतभेद दूर होकर प्रेम की भावना का संचार होगा। बेरोजगारों को रोजगार के अवसर हैं। माह के मध्य में कोई नया रोजगार न करें। वाहन चालन में सावधानी रखें। सेहत के प्रति सावधान रहें। किसी अनजान व्यक्ति से मुलाकात लाभ पहुंचायेगी। अविवाहितों की सगाई होगी। विरोधी परास्त होंगे। मुसीबत में मित्रों का सहयोग मिलेगा। आखिरी सप्ताह में अनावश्यक परेशानी उठानी पड़ सकती है। अवांछित स्रोतों से धन कमाने की कोशिश न करें। संतान पक्ष का सहयोग मिलेगा। आप **सर्व बाधा निवारण दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 1, 2, 10, 11, 12, 19, 20, 27, 28, 29

कर्क - माह का प्रारम्भ मध्यम फलदायक है। नई आशायें जगेंगी। कामयाबी मिलेगी। वर्षों के सपने पूर्ण हो सकते हैं। किसी नये व्यक्ति से मुलाकात दिनचर्या में बदलाव लायेगी। इस समय सावधान रहने की आवश्यकता है। स्वास्थ्य में गिरावट सम्भव है, सावधान रहें। संतान पक्ष का सहयोग नहीं मिलेगा। व्यापार में गिरावट रहेगी। माह के मध्य में जीवनसाथी से गलतफहमी दूर हो कर प्यार का वातावरण बनेगा। परिवार का सहयोग मिलेगा, कोई अनुबंध भी मिल सकता है। तीसरा सप्ताह शुभ समाचार लगेगा। उत्साह जाग्रत होगा, किसी बात को लेकर टेंशन हो सकता है। आखिर सप्ताह में कोई भी निर्णय बहुत सोच-विचार कर लें। आर्थिक हानि हो सकती है। विद्यार्थी को परिश्रम का परिणाम अच्छा मिलेगा। आप इस समय कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। आप **कुण्डलिनी जागरण दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 2, 3, 4, 12, 13, 14, 21, 22, 29, 30

सिंह - माह की शुरुआत कष्टप्रद है। कोई अशुभ समाचार मिल सकता है। कोई पुराना रोग उभर सकता है। चेहरे पर उदासी रहेगी। आय की आवक रुकेगी। भाइयों में प्रॉपर्टी का बंटवारा खुशी से हो जायेगा। विद्यार्थियों को परिश्रम का पूरा फल मिलेगा। ऋण से मुक्ति मिलेगी। माह के मध्य से पर्व कुछ अशांति का वातावरण हो सकता है, शत्रु पक्ष परेशान कर सकता है। धीरे-धीरे कार्यों को निपटाने में सफल होंगे। मित्रों का सहयोग मिलेगा। मानसिक परेशान होने पर भी आप सूझबूझ से हल निकाल लेंगे। बेरोजगारों को आप रोजगार प्रदान करेंगे। आय के स्रोतों में वृद्धि होगी। स्वास्थ्य का ख्याल रखें। विश्वास सोच-समझकर कर करें, धोखा मिल सकता है। खर्च पर अंकुश लगायें। आकस्मिक धन प्राप्ति के योग हैं, विद्यार्थी वर्ग सफलता पाकर प्रसन्न होगा। आप दूसरों की सहायता करेंगे। आप **गुरु हृदय धारण दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 2, 3, 4, 12, 13, 20, 21, 22, 29, 30

कन्या - माह का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। व्यापार में लाभ के अवसर हैं। मानसिक परेशानियों से छुटकारा मिलेगा। अपनी ऊर्जा को अच्छे कार्यों में लगायें। तीर्थ यात्रा का प्रोग्राम बन सकता है। नौकरीपेशा लोगों पर जिम्मेदारी बढेगी। आप अपने व्यापार में बेरोजगारों को रोजगार देने में सक्षम होंगे। अदालतों के चक्कर से छुटकारा मिलेगा। झूठे लक्ष्य में

भ्रमित न हों, किसी भी प्रकार के सट्टेबाजी में धन न लगायें। विद्यार्थी वर्ग अच्छे नम्बर पाकर प्रसन्न होगा। जमीन के कार्य में लाभ होगा। अचानक किसी उलझन में फंस सकते हैं। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें। किसी वरिष्ठ अधिकारी का सहयोग मिलेगा। प्यार में सफलता मिलेगी। ज्यादा लालच में न आयें, नुकसान हो सकता है। इस माह आप **महालक्ष्मी दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 7, 8, 9, 17, 18, 25, 26, 27

तुला - सप्ताह की शुरूआत लाभप्रद होगी। आत्मविश्वास बढ़ा हुआ रहेगा। मित्रों का साथ मिलेगा। परिवार में सहयोग पूर्ण वातावरण रहेगा। यात्रा में कष्ट हो सकता है। कुछ टेंशन का समय रहेगा। परिश्रम के परिणाम अच्छे रहेंगे। इस समय का सद्प्रयोग करें। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आर्थिक लाभ होगा। समय अनुकूल है। माह के मध्य में सोच-समझकर कार्य करें। अवांछित साधनों से पैसे कमाने का प्रयास न करें। सहयोगी से मन मुटाव हो सकता है। भाषा पर संयम रखें, किसी कागजात पर बिना पढ़े हस्ताक्षर न करें। अनैतिक कार्यों से बचें। विद्यार्थी वर्ग अच्छे नम्बर पाकर प्रसन्न होगा। अनावश्यक खर्च से परेशानी पैदा होगी। आखिरी सप्ताह में परिस्थितियां विपरीत हैं, परेशानियों से मन विचलित होगा परन्तु टेंशन में न आयें। आय के स्रोतों में वृद्धि होगी। आप **भैरव दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 1, 2, 10, 11, 12, 19, 20, 27, 28

वृश्चिक - सप्ताह का प्रारम्भ लाभकारी रहेगा। रुके हुए रुपये प्राप्त होंगे। आय के स्रोत बढ़ेंगे। विद्यार्थी वर्ग को मनचाहा रिजल्ट मिलेगा, परिवार में अनबन रहेगी। फालतू के कार्यों में समय व्यतीत करेंगे। फालतू के खर्च न करें। दूसरा सप्ताह प्रतिकूल परिस्थितियां लायेगा, कार्यों में रुकावट रहेगी। उधारी देने से बचें। माह के मध्य में रुके कार्य पूर्ण होंगे, व्यस्तता रहेगी। राजनीतिक क्षेत्र में सहभागिता रहेगी। कोई अनहोनी घटना हो सकती है। शत्रुओं से सावधान रहें। उलझनों में फसेंगे। तीसरे सप्ताह में धन लाभ के अवसर हैं। विद्यार्थियों के लिए कोई शुभ सूचना मिलेगी। कोई जमीन का सौदा हो सकता है। गलत सोहबत के दोस्तों से दूर रहें अन्यथा विपरीत परिणाम मिलेगा। माह के अंत में कार्यों में आ रही बाधाएं दूर होंगी। आप **बगलामुखी दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 2, 3, 4, 12, 13, 14, 21, 22, 29, 30

धनु - सप्ताह की शुरुआत में परिस्थितियाँ प्रतिकूल रहेगी। वाहन चालन से सावधानी बरतें। मन अशांत रहेगा। वांछित सहयोग नहीं मिलेगा। बाद के समय में आपकी अच्छी छवि बनने से शत्रु परेशान रहेंगे। जीवनसाथी का सहयोग व्यापार में मिलेगा। प्रतियोगी परीक्षा में सफलता के अवसर हैं। दूसरे सप्ताह के अंत में कोई अशुभ समाचार मिल सकता है, कार्य भी रुक सकते हैं। विद्यार्थी वर्ग के ज्ञान में वृद्धि होगी, दृढ़ इच्छा शक्ति से आप आगे बढ़ेंगे। यात्रा से लाभ होगा। नशीली चीजों से दूर रहें। कोई लांछन लग सकता है। सूझ-बूझ से बिगड़े काम बना सकेंगे। कोई केस के फैसले आपके अनुकूल रहेंगे। माह के आखिरी में उतार-चढ़ाव की स्थिति रहेगी। स्वास्थ्य पर ध्यान दें। सोच-समझकर ही कोई निर्णय लें। आमदनी में वृद्धि होगी। मित्रों का सहयोग मिलेगा। आप **अष्ट लक्ष्मी दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 5, 6, 7, 14, 15, 16, 23, 24

मकर - माह का प्रारम्भ सुखप्रद रहेगा। बाधायें दूर होंगी, अपनों का साथ मिलेगा। संतान आपके कहे अनुसार कार्य करेगी। स्वास्थ्य के प्रति सतर्क रहें। किसी और के कार्य में टांग न अड़ायें। किसी अन्य के लिए किसी वजह से परेशान रहेंगे। रोजगार के अवसर मिलेंगे। जीवन में अनुकूलता आयेगी। माह के मध्य में कोई अप्रिय समाचार मिल सकता है। नौकरी पेशा का अधिकारियों से वाद-विवाद हो सकता है,

सर्वार्थ सिद्धि योग	- अप्रैल-1, 3, 5, 6, 10, 12, 29
अमृत सिद्धि योग	- अप्रैल-1, 29
रवि योग	- अप्रैल-5, 7, 10, 11, 15, 22
रवि पुष्य योग	- अप्रैल-10 (प्रातः 6.23 से 11 अप्रैल प्रातः 6.21 तक)

कहीं से रुके हुए पैसे प्राप्त होंगे। विरोधी हानि पहुंचाने की कोशिश करेंगे। पारिवारिक समस्या को लेकर चिंतित रहेंगे। कार्यों में सफलता न मिलने पर उदासी छा जायेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। जमीन-जायदाद का बंटवारा राजी-खुशी से हो जायेगा। आय के स्रोतों में वृद्धि होगी। परिवार में सहयोग होगा। माह के अंत में किसी अन्जान से झगड़े की स्थिति बन सकती है। आप **हनुमान दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 7, 8, 9, 17, 18, 25, 26, 27

कुम्भ - माह का प्रथम सप्ताह शुभकारी है। व्यापार में नये तरीके सीखने को मिलेंगे। ज्ञान में वृद्धि होगी। आय के स्रोतों में वृद्धि होगी। इस समय के फैसले सफलता देंगे। दुखी लोगों की मदद करेंगे। कोई उलझन पैदा हो सकती है। विद्यार्थियों को सफलता मिलेगी। आप दृढ़ निश्चय से कार्यों को पूरा कर सकेंगे। माह के मध्य में किसी मुसीबत में फंस सकते हैं। शत्रु पक्ष हावी होने की कोशिश करेगा। कर्ज से मुक्ति मिलेगी। दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा। फालतू के खर्चों से बचे। आखिरी सप्ताह में कोई अशुभ घटना हो सकती है। महत्वपूर्ण कार्यों को कल पर न छोड़ें। सूझ-बूझ से समस्या सुलझा लेंगे। माह का अंत ध्यान एवं योग क्रियाओं के लिए शुभ है। परिवार का सहारा मिलेगा। **कुण्डलिनी जागरण दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 1, 2, 10, 11, 12, 19, 20, 27, 28, 29

मीन - सप्ताह का प्रारम्भ शुभ होगा।वाहन की खरीददारी हो सकती है। उन्नति की ओर बढ़ेंगे। घर में सुख-सुविधओं की वृद्धि होगी। दूसरे सप्ताह में परिवार में अशांति रहेगी। खर्च पर संयम रखें। किसी प्रकार का जोखिपूर्ण कार्य न करें। कोई छुपी हुई बात उजागर हो सकती है। मन अस्थिर रहेगा। लेन-देन में सावधानी बरतें। पुराने मित्र से मुलाकात होगी। आर्थिक स्रोतों में वृद्धि होगी। पति-पत्नी में गलतफहमी दूर हो जायेगी। साझेदारी व्यापार में गलतफहमी हो सकती है। रुपये की आवक कम होने से मन उदास रहेगा। किसी पर अत्यधिक विश्वास न करें, कठिनाइयां दूर करने में सक्षम होंगे। आलस्य की वजह से महत्वपूर्ण कार्यों को कल पर न छोड़ें। व्यापार में नए अवसर मिलेंगे। आप **व्यापार वृद्धि दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 4, 12, 13, 14, 21, 22, 29, 30

इस मास व्रत, पर्व एवं त्यौहार

02.04.22	शनिवार	चैत्र नवरात्रि प्रारम्भ
04.04.22	सोमवार	गणगौरी तृतीया
05.04.22	मंगलवार	श्री पंचमी
10.04.22	रविवार	राम नवमी/तारा जयंती
12.04.22	मंगलवार	कामदा एकादशी
14.04.22	गुरुवार	अनंग त्र्योदशी
16.04.22	शनिवार	पूर्णिमा/हनुमान जयंती
21.04.22	गुरुवार	सद्गुरुदेव जन्म दिवस
26.04.22	मंगलवार	वरुथिनी एकादशी
30.04.22	शनिवार	शनैश्चरी अमावस्या

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है; जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत **99.9%** आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (अप्रैल-3, 10, 17, 24)	दिन 06:00 से 10:00 तक रात 06:48 से 07:36 तक 08:24 से 10:00 तक 03:36 से 06:00 तक
सोमवार (अप्रैल-4, 11, 18, 25)	दिन 06:00 से 07:30 तक 10:48 से 01:12 तक 03:36 से 05:12 तक रात 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक
मंगलवार (अप्रैल-5, 12, 19, 26)	दिन 06:00 से 08:24 तक 10:00 से 12:24 तक 04:30 से 05:12 तक रात 07:36 से 10:00 तक 12:24 से 02:00 तक 03:36 से 06:00 तक
बुधवार (अप्रैल-6, 13, 20, 27)	दिन 07:36 से 09:12 तक 11:36 से 12:00 तक 03:36 से 06:00 तक रात 06:48 से 10:48 तक 02:00 से 06:00 तक
गुरूवार (अप्रैल-7, 14, 21, 28)	दिन 06:00 से 08:24 तक 10:48 से 01:12 तक 04:24 से 06:00 तक रात 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक 04:24 से 06:00 तक
शुक्रवार (अप्रैल-1, 8, 15, 22, 29)	दिन 06:48 से 10:30 तक 12:00 से 01:12 तक 04:24 से 05:12 तक रात 08:24 से 10:48 तक 01:12 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक
शनिवार (अप्रैल-2, 9, 16, 23, 30)	दिन 10:30 से 12:24 तक 03:36 से 05:12 तक रात 08:24 से 10:48 तक 02:00 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक

यह हमने नहीं वराहमिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

अप्रैल-22

11. आज शिवलिंग पर दूध मिश्रित जल से अभिषेक करें।
12. आज निम्न मंत्र का 51 बार जप करके जाएं-ॐ सर्व कार्य सिद्धये नमः।
13. आज माँ लक्ष्मी के सामने घी का दीपक जलायें और आरती करके जाएं।
14. आज आप कायाकल्प गुटिका (न्यौ. 300) धारण कर सकते हैं।
15. घर से जाने से पूर्व दही खाकर जाएं, कार्य पूर्ण होंगे।
16. आज हनुमान जयंती है, हनुमानजी की साधना करें।
17. प्रातः पूजन के उपरांत भगवान सूर्य को अर्घ्य दें।
18. आप अपने वस्त्रों में सफेद रंग को प्रधानता दें, दिन शुभ रहेगा।
19. हनुमान चालीसा का एक पाठ कर के जाएं।
20. प्रत्येक कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व इष्ट मंत्र का जप करें।
21. आज सद्गुरुदेव जन्मदिवस है, पत्रिका में प्रकाशित साधना सम्पन्न करें।
22. किसी दुर्गा मनिदर में लाल रंग के तीन पुष्प अर्पित करें।
23. सरसों का तेल कुछ दक्षिणा के साथ दान करें।
24. प्रातः स्नान करके जल में पीले पुष्प डालकर सूर्य को अर्घ्य दें।
25. आज पक्षियों को दाना चुगायें।
26. किसी हनुमान मन्दिर में लड्डुओं का भोग लगाकर बच्चों में बांटें।
27. प्रातःकाल उठते ही सबसे पहले अपनी हथेलियों को देखकर निम्न मंत्र का उच्चारण करें-

    कराग्रे वसते लक्ष्मी कर मध्ये सरस्वती।
    करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते कर दर्शनम्।।
28. आज पीपल या केले के पेड़ में जल चढ़ायें।
29. अपनी किसी इच्छा को ध्यान में रखकर मनोकामना गुटिका (150/-) धारण करें।
30. आज अमावस्या को अन्न दान करें।

मई-22

1. आज प्रातःकालीन उच्चरित वेद ध्वनि सी.डी. का श्रवण करें।
2. प्रातः ॐ नमः शिवाय का एक माला मंत्र जप करके जाएं।
3. आज मातंगी महाविद्या जयंती है, साधना करें या ॐ ह्रीं ॐ का एक माला करके जाएं।
4. पूजन में तीन लघु नारियल स्थापित करके पूजन करें और निम्न मंत्र का 15 मिनट जप करे किसी देवी मन्दिर में चढ़ा दें (न्यौ; 90/-)-
   ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ।
5. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय मंत्र का 21 बार उच्चारण करके जाएं।
6. आज किसी एक व्यक्ति को सद्गुरुदेव के ज्ञान से जोड़ें।
7. किसी काले कुत्ते को रोटी खिलायें।
8. आज गंगा जयंती है। अन्न, फल, वस्त्रादि दान करें।
9. आज बगलामुखी जयंती है, साधना करें या बगलामुखी मंत्र का 1 माला मंत्र जप करके जाएं।
10. आज प्रातः रां रामाय नमः का 108 बार उच्चारण करके जाएं।

हम अपने इतिहास पर दृष्टिपात करें, तो हमारे समक्ष अनेक ऐसे रहस्योद्घाटन होते हैं, जिनके विषय में वर्तमान वैज्ञानिक शोधरत हैं या सफलता को किसी हद तक प्राप्त कर चुके हैं,

फिर भी अभी उन सोपानों को प्राप्त नहीं कर सके हैं जिसे ऋषियों ने आज से हजारों वर्ष पूर्व प्राप्त कर लिया था।

यदि हम पूर्वकाल से वर्तमान की तुलना करें, तो हम आज भी अत्याधुनिक सुविधाओं के होते हुए भी वैज्ञानिक रूप से अत्यन्त पिछड़े हुए हैं और ऐसा ही उदाहरण प्राप्त होता है सौन्दर्य के क्षेत्र में। सौन्दर्यवान होना तो ईश्वर की ओर से मानव के लिए अमूल्य वरदान है, परन्तु साधारण नैन-नक्श होते हुए भी अद्वितीय सौन्दर्यवान दिखना बिल्कुल ही अलग बात है। हमारे पूर्वज कितने सौन्दर्यप्रेमी थे इसका उदाहरण उनके समय की साहित्यिक कृतियों से मिलता है।

आज भी कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ पर कुछ ऐसे रहस्यमय तथ्य हैं जो अत्यन्त विस्मयकारी हैं।

मेरा सरकारी पद ही कुछ ऐसा है, जिसके कारण मुझे सदा आदिवासी या सूदूर क्षेत्रों में ही जाना पड़ता है। मेरा स्थानान्तरण हिमाञ्चल के एक सुदूर गांव में हुआ, वहाँ पर बस... या अन्य किसी वाहनादि की व्यवस्था नहीं थी। वहाँ से कई किलोमीटर दूर पैदल चलकर आने पर ही आवश्यक सामान उपलब्ध हो पाता था, मेरे पास स्वयं का वाहन होने के कारण मुझे कभी इस प्रकार की समस्या से जूझना नहीं पड़ा, पर इस बार जहाँ मेरी नियुक्ति हुई। वह स्थल मेरे लिए एक प्रकार से आश्चर्यजनक बन गया, क्योंकि वहाँ की प्रकृति में सौन्दर्य बिखरा पड़ा था, प्रत्येक स्त्री का रंग गोरा तो नहीं था, पर ऐसा जैसे स्वर्ण की कान्तिमय किरणों से वातावरण प्रकाशित हो रहा हो...

लावण्यता लिए हुए चेहरा, नेत्रों की चपलता ऐसी कि प्रकृति भी अधीर हो उठे, उनकी देह से निःस्सृत सुगन्ध ने वहाँ के वातावरण को और भी अधिक मादक बना दिया था। अद्बितीय तथा अत्यन्त आकर्षक व्यक्तित्व की स्वामिनी थीं वे सभी या यूं कहें, कि वहाँ की प्रत्येक स्त्री सौन्दर्य के मापदण्ड पर पूर्ण थी।

मेरे लिए यह आश्चर्य ही था, एक भी साधारण स्त्री नहीं दिख रही थी सभी देवतुल्य अप्सरा की भांति वन में इधर-उधर विचरण करती दिख रही थी। वहां के पुरुषों में भी पूर्ण रूप से पौरुषत्व था-दृढ़ स्कन्ध..... लम्बी भुजाएं नेत्रों में प्रेम का सागर, तो वहीं अवसर पड़ने पर क्रोध की ज्वाला भी दिखाई पड़ती थी। मैंने सौन्दर्य तो देखा था, पर ऐसा नहीं, कि पूरा का पूरा गाँव ही अद्बितीय सौन्दर्य से युक्त हो। एक भी व्यक्ति सामान्य नहीं दिख रहा था।

प्रमुख बात तो यह थी, कि वहाँ की जलवायु के अनुसार सुडौलता सम्भव ही नहीं थी, प्रत्येक व्यक्ति श्यामवर्ण तथा थोड़ी सी स्थूलता लिए हुए ही होने चाहिए था।

उस गांव के ही एक पुरोहित परिवार से मेरी घनिष्ठता स्थापित हो गई थी। धार्मिक प्रवृत्ति का होने के कारण मेरे घर में किसी न किसी प्रकार का पूजन होता ही रहता था। वे पुरोहित अक्सर घर पर आते ही रहते थे। इसके साथ ही वे तंत्र के विशेष जानकार भी थे, मेरी भी रुचि तंत्र में थी। इस कारण कभी-कभी साथ बैठकर उनसे तंत्र से सम्बन्धित विषयों पर चर्चा हो ही जाती थी।

एक दिन उनसे तंत्र के माध्यम से सौन्दर्य प्राप्ति के विषय पर चर्चा छिड़ गई, मेरे ज्ञान के अनुसार तंत्र के माध्यम से सौन्दर्य प्राप्त किया जा सकता था, पर पूर्णत कायाकल्प होना सम्भव नहीं था। उनका मत था, कि कैसी भी स्त्री या पुरुष हो, वह तंत्र के माध्यम से कायाकल्प कर सकता है। मैं उनसे सहमत नहीं था, इस पर उन्होंने स्वयं ही कहा-आप क्या समझते हैं, कि किसी गाँव में प्रत्येक स्त्री तथा पुरुष सौन्दर्यवान हो सकता है, जिसे सौन्दर्य की पराकाष्ठा कहा जा सकता है, क्या वह हमारे गाँव में विद्यमान नहीं है?

वास्तव में यह सत्य था, कि उस गाँव में किसी भी स्त्री या पुरुष को सौन्दर्य की दृष्टि से न्यून नहीं कहा जा सकता था। उन्होंने स्पष्ट किया, कि इस प्रकार सौन्दर्य की प्राप्ति तंत्र के माध्मय से ही सम्भव हो सकी है।

जब मैंने उनसे इसके रहस्य को जानने की इच्छा व्यक्त की, तो उन्होंने स्पष्ट मना कर दिया, कि यह हमारे गाँव की अमूल्य तथा गोपनीय धरोहर है, जिसे हम आपको नहीं बता सकते। अतः मैंने उनसे उनका शिष्यत्व स्वीकार करने की इच्छा प्रकट की, तो उन्होंने स्पष्ट मना कर दिया। तंत्र के क्षेत्र में गुरु कृपा से ही पूर्णता प्राप्त की जा सकती है, मेरे समक्ष यह स्थिति स्पष्ट नहीं हो रही थी, जिससे मैं इस साधना विशेष को प्राप्त कर सकूं।

कुछ समय पश्चात् वहाँ के मुखिया, जिन्हें उस गाँव के लोग देवता

फॉर्म नं. 4
(नियम-8 देखिए)

1. प्रकाशन का स्थान : जोधपुर
2. प्रकाशन की अवधि : मासिक
3. मुद्रक : श्री अरविन्द श्रीमाली
4. प्रकाशक : श्री अरविन्द श्रीमाली
5. सम्पादक का नाम : श्री अरविन्द श्रीमाली
   क्या भारत के नागरिक है : हाँ
   पूरा पता : 1 हाईकोर्ट कॉलोनी, डॉ. श्रीमाली मार्ग, जोधपुर-432201 (राज.)
6. उन व्यक्तियों के नाम और पते जो समाचार पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के हिस्सेदार या साझेदार हों : श्री अरविन्द श्रीमाली

मैं अरविन्द श्रीमाली एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी के अनुसार दिया गया विवरण सत्य है।

अरविन्द श्रीमाली
(मुद्रक प्रकाशक)

यह 'मोहिनी प्रयोग' विश्व का श्रेष्ठ प्रयोग है, जो अपने आप में हीरक खण्ड है और नागार्जुन की यह भेंट विश्व की समस्त स्त्रियों के लिए वरदान स्वरूप है, जो स्त्रियों के लिए तो है ही पुरुषों के लिए भी पूर्ण पौरुषत्व और कामदेव बनने के लिए अपूर्व सौगात है, विश्व की एक दुर्लभ अनूठी गोपनीय साधना...

के समान पूजते थे, उनका स्वास्थ्य गिरने लगा, जड़ी-बूटियों से उनको स्वास्थ्य लाभ बहुत कम ही हो पा रहा था और उनको शीघ्र ही किसी विशेष उपचार की आवश्यकता थी।

जब मुझे मुखिया की स्थिति ज्ञात हुई, तो मैंने उन्हें अपने एक डॉक्टर मित्र को दिखाया, जिसके उपचार से उनका स्वास्थ्य दो दिनों में ही ठीक होने लग गया, उसके उपरान्त उन्हें वहाँ के वैद्यो ने ठीक कर दिया, ऐसी स्थिति में जब उनके देवता सदृश मुखिया ठीक हुए, तो पुरोहित ने मुझे अपने पास बुलवाया और कहा–आपके इस कार्य से मेरा पूरा गांव ही आपका ऋणी हो गया है अत: आपको उपहार स्वरूप वह अद्वितीय साधना देना चाहता हूँ, जिसे आपने कुछ समय पूर्व जानने की इच्छा व्यक्त की थी,

और इसके पश्चात् पुरोहित ने मुझे उस अद्वितीय सौन्दर्य प्राप्ति प्रयोग के विषय में बताया।

पुरोहित ने उस सौन्दर्य प्राप्ति प्रयोग का नाम 'मोहनी प्रयोग' बताया। उसने बताया, कि ऐसा नहीं है, कि यहाँ पर उत्पन्न होने वाले सभी बच्चे सुन्दर ही होते हैं, पर साधारण नैन-नक्श वाले स्त्री-पुरुष भी उस प्रयोग को सम्पन्न कर अद्वितीय सुन्दरता प्राप्त कर लेते हैं। इस प्रयोग की महत्वपूर्ण विशेषता यह है, कि साधक जब इसे सम्पन्न कर लेता है, तो उसे निराशा, उदासी, बेचैनी नहीं घेरती, वह सदैव प्रसन्न, आत्मविश्वास से युक्त तथा उत्साही बना रहता है।

फिर इसके बाद उन्होंने मुझे वह पूर्ण विधि बताई तथा स्वयं मुझे वह प्रयोग विधि सम्पन्न करवाई, उसी विधि को मैं साधकों के लाभार्थ प्रस्तुत कर रहा हूँ—

प्रयोग विधि

- इस साधना में आवश्यक सामग्री है–'मोहिनी यंत्र', 'रतिराज गुटिका' तथा 'मोहिनी माला'।
- यह साधना आप मोहिनी एकादशी 12.05.22 को सम्पन्न कर सकते हैं या फिर किसी भी माह के तृतीय शुक्रवार को भी सम्पन्न कर सकते हैं।
- यह एक दिवसीय साधना है। इसे आप रात्रि में ही सम्पन्न करें।
- साधक सफेद वस्त्र धारण करें तथा साधिका गुलाबी वस्त्र धारण कर तथा पूर्ण सुसज्जित होकर, यह साधना आरम्भ करें।
- लकड़ी के बाजोट पर गुलाबी रंग का वस्त्र बिछाकर उस पर 'मोहिनी यंत्र' को गुलाब के पुष्प का आसन बनाकर स्थापित करें एवं अपने चारों ओर इत्र छिड़क लें।
- 'रतिराज गुटिका' को भी यंत्र के एक ओर स्थापित कर दें तथा गुटिका तथा यंत्र का पूजन केसर, पुष्प, अक्षत, धूप व दीप से करें।
- गुरु पूजन एवं गुरु ध्यान करने के उपरान्त भगवान कामदेव का स्मरण करें तथा सौन्दर्य प्रदान करने की प्रार्थना करें—

सौन्दर्य देहि कामेश! मोद मंगल्य संयुतं।
सर्व काम्यं सदाभव्यं विश्ववन्द्यं रतिप्रियम्।।

फिर चार माला गुरु मंत्र जप करें।

- इसके पश्चात् निम्न मंत्र का 51 माला जप करें—

मंत्र

।। ॐ ह्रीं श्रीं रति सौन्दर्याय फट्।।

OM HREEM SHREEM RATI SAUNDARYAY PHAT

- जप के पश्चात् गुटिका तथा यंत्र को जल में विसर्जित कर दें।
- माला को 51 दिन तक पहने रखें तथा नित्य एक माला जप करें। **न्यौछावर- 600/-**

इस साधना को शनैश्चरी अमावस्या से प्रारम्भ करें

जीवन में मनुष्य को कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जिसकी वजह से उसे कई प्रकार की परेशानियों को भोगना पड़ता है, और उनके समाधान के लिए वह प्रयत्न भी करता है।

ग्रह दोष निवारण

अब यह सिद्ध हो चुका है, कि ग्रहों का प्रभाव मानव जीवन पर पड़ता ही है, और उसकी वजह से मानव को विविध प्रकार के कष्ट भोगने पड़ते हैं, नवग्रहों में भी सूर्य, मंगल, राहु और शनि अत्यन्त क्रूर एवं घातक ग्रह हैं, इनके प्रभाव से विविध प्रकार के कष्ट एवं दुख भोगने पड़ सकते हैं। शनि की दशा आने पर भगवान राम तक को वनवास भोगना पड़ा। इन ग्रहों की शांति के लिए 'शनैश्चरी अमावस्या' का प्रयोग एक दुर्लभ और तुरन्त अनुकूलता देने वाला प्रयोग है।

रोग वृद्धि

कभी-कभी घर में ऐसी बीमारी घर कर जाती है, कि घर का कोई न कोई सदस्य बीमार बना ही रहता है, और काफी बड़ा बजट उन लोगों की चिकित्सा में व्यय हो जाता है। इलाज कराने पर दो चार दिन तो अनुकूलता दिखाई देती है, इसके बाद फिर वैसा ही दृश्य या वैसी ही स्थिति बन जाती है। इस प्रकार से घर के मालिक को, उसकी पत्नी को, बहू को, बेटी को, पुत्र को या पोते-पोतियों को विविध प्रकार के कष्ट भोगने पड़ते हैं और इन बीमारियों से कोई छुटकारा दिखाई नहीं देता इसके लिए भी शास्त्रों में शनैश्चरी अमावस्या का प्रयोग बताया है।

शनैश्चरी अमावस्या

ज्योतिष गणना के अनुसार वर्षों बाद शनैश्चरी अमावस्या की स्थिति बनती है। जिस अमावस्या को शनिवार हो उसे 'शनैश्चरी अमावस्या' कहते हैं। सौभाग्य से इस बार 30.04.2022 को शनैश्चरी अमावस्या है, इस दिन वैसाष कृष्ण अमावस्या है और शनिवार भी है। ऐसा सुयोग काफी समय बाद आया है, अत: इसका महत्त्व बहुत अधिक बन गया है।

उपरोक्त समस्याओं के समाधान के लिए प्रत्येक साधक को इस मुहूर्त का और इस दिन का प्रयोग करना चाहिए और इससे संबंधित साधना सम्पन्न करनी चाहिए जिससे कि जीवन में रोग, शोक-दु:ख, दारिद्र्य आदि से मुक्ति पा सके और परिवार में सभी दृष्टियों से अनुकूलता आ सके।

साधना सामग्री

इसके लिए कोई विशेष साधना सामग्री की आवश्यकता नहीं होती, घर में जितने भी सदस्य हैं, उन सभी के नाम की 'तांत्रोक्त शनैश्चरी मुद्रिका' प्राप्त कर लेनी चाहिये जो कि तांत्रोक्त दोष निवारण से सिद्ध और रोगादि बाधाओं से निवृत्ति प्राण प्रतिष्ठायुक्त होनी चाहिए। यह मुद्रिका ऐसी होनी चाहिए जिस पर तांत्रोक्त नवग्रह मंत्र के पांच हजार जप सम्पन्न किए हुए हों। इस प्रकार से सिद्ध मुद्रिका इस अद्भुत अवसर पर प्रयोग की जाती है।

इसके लिए आपको पहले से ही व्यवस्था करके रखनी चाहिए और पत्रिका कार्यालय को पत्र लिखते समय स्वयं का नाम और परिवार के सदस्यों का नाम लिख भेजें जिनके लिए यह प्रयोग सम्पन्न करना है।

रात्रि को साधना करने के बाद संबंधित मुद्रिकाएँ या तो संबंधित व्यक्ति धारण कर ले या अपने-अपने सन्दूक में रख दें अथवा घर का मुखिया इन सभी मुद्रिकाओं को लाल कपड़े में बांधकर एक स्थान पर रख दें, जिससे कि समस्त प्रकार के उपद्रव और बाधाएँ शान्त हो सके।

साधना प्रयोग

यह साधना शनैश्चरी अमावस्या 30.04.2022 के दिन शनिवार से प्रारम्भ करनी है एवं यह चार दिन की साधना है जिसका समापन 03.05.2022 मंगलवार को करना है। इस दिन अक्षय तृतीया है।

30.04.2022 की रात्रि को साधक स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय, सामने एक थाली में सभी मुद्रिकाओं को रख दें और तेल का दीपक लगावे।

इसके बाद हाथ में जल ले कर संकल्प करें, कि मैं अमुक गौत्र, अमुक जाति का व्यक्ति, घर के अमुक नाम के सभी सदस्यों के रोगों, ग्रह बाधाओं और बीमारियों को दूर करने के लिए शनैश्चरी अमावस्या प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूँ।

इसके बाद पुन: हाथ में जल ले कर विनियोग करें, विनियोग का तात्पर्य हाथ में जल ले कर निम्नलिखित उच्चारण कर जल छोड़ दें।

विनियोग

ॐ अस्य श्री बगलामुखी-मन्त्रस्य नारद-ऋषि:। त्रिष्टुप् छन्द: बगलामुखी देवता। ह्लीं बीजं। स्वाहा शक्ति:। मम शरीरे एवं समस्त परिवार शरीरे नाना ग्रहोपग्रह सम्पूर्ण रोग-समूह-नाना दुष्ट रोग शान्त्यर्थं सर्व दुष्ट बाधा कष्ट-कारक-ग्रहस्य उच्चाटनार्थे शीघ्रारोग्य लाभार्थे कार्य सिद्यर्थे मन्त्र जपे विनियोग:।

ऋष्यादिन्यास

निम्न उच्चारण करते हुए अपने शरीर के अंगों पर दाहिने हाथ से स्पर्श करें-

नारद ऋषये नम: शिरसि।
त्रिष्टुप्छन्दसे नम: मुखे।
बगलामुखी देवतायै नम: हृदि।
ह्लीं बीजाय नम: गुह्ये।
स्वाहा-शक्तयै नम: पादयो:।

इसके बाद साधक बताये हुए अंगों को स्पर्श करते हुए अंग न्यास, कर न्यास करें।

अंग न्यास	कर न्यास	हृदयादि-न्यास
ॐ ह्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नम:	ह्रदयाय नम:
बगलामुखी	तर्जनीभ्यां नम:	शिरसे स्वाहा
सर्व-दुष्टानां	मध्यमाभ्यां नम:	शिखायै वषट्
वांच मुखं पदम् स्तम्भय	अनामिकाभ्यां नम:	कवचाय हुम्
जिह्वां कीलय कीलय	कनिष्ठिकाभ्यां नम:	नेत्र-त्रयाय वौषट्
बुद्धि नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा	करतल-करपृष्ठाभ्यां नम:	अस्त्राय फट्

ध्यान

फिर हाथ में अक्षत लेकर इन यन्त्रों के सामने चढ़ाते हुए निम्न ध्यान उच्चारण करें-

जिह्वा ग्रमादाय करेण देवीं वामेन शत्रून् परि-पीडयन्तीम्
गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि।।

इसके बाद मूंगे की माला से निम्न मंत्र की 5 माला मंत्र जप करें।

यह चार दिन की साधना है।

मंत्र

ॐ ह्लीं बगलामुखीं परिवार स्य देह स्थित नाना रोगान् प्रतिबन्धक ग्रहान् फट् उच्चाटनं कुरू कुरू ह्लीं ॐ स्वाहा।

04.05.2022 बुधवार को साधक को चाहिए कि वह सात कुमारी बालिकाओं तथा एक छोटे बालक का पूजन कर भोजन कराये और भोजनोपरान्त उन्हें यथाशक्ति दक्षिणा दें, भोजन में केवल बेसन के लड्डू हो सकते हैं, इसके अलावा अन्य किसी भी प्रकार का भोजन न दें।

मैंने अपने जीवन में कई प्रकार की समस्याओं, बाधाओं और अड़चनों के समय कठिन और असाध्य रोगों से लोगों को इस प्रयोग से मुक्ति दिलाई है, किसी भी प्रकार की ग्रह बाधा या रोग हो तो निश्चय ही इस प्रयोग से पूर्ण अनुकूलता प्राप्त होती है।

निखिलं मधुरं

अधरं मधुरं वदनं मधुरं, नयनं मधुरं हसितं मधुरं
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं, मधुराधिपते निखिलं मधुरं।
वचनं मधुरं चरितं मधुरं, वसनं मधुरं वलितं मधुरं
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं, मधुराधिपते निखिलं मधुरं।।

दन्त्यं मधुरं जिह्वा मधुरं, चितवन मधुरं, भृकुटि मधुरं
कर्ण मधुरं हास्यं मधुरं, मधुराधिपते निखिलं मधुरं।
पाणिर्मधुरं पादौ मधुरं, नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं
इत वै मधुरं उतवै मधुरं, मधुराधिपते निखिलं मधुरं।।

गीतं मधुरं पीतं मधुरं, मुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरं
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं, मधुराधिपते निखिलं मधुरं।
करणं मधुरं तरणं मधुरं, हरणं मधुरं रमणं मधुरं
वमितं मधुरं शमितं मधुरं, मधुराधिपते निखिलं मधुरं।।

रामं मधुरं हस्तं मधुरं, भुज वै मधुरं बाहु मधुरं
चितवन मधुरं भृकुटी मधुरं, मधुराधिपते निखिलं मधुरं।
यष्टिर्मधुरं सृष्टिर्मधुरं, प्रिय वै मधुरं प्रियतं मधुरं
मम वै मधुरं त्वामं मधुरं, मधुराधिपते निखिलं मधुरं।।

कामं मधुरं चिन्त्यं मधुरं, दृष्टिर्मधुरं जंघा मधुरं
गति वै मधुरं कार्यमधुरं, मधुराधिपते निखिलं मधुरं।
कांति मधुरं रंजन मधुरं, अंजन मधुरं रोमं मधुरं
नाट्यं मधुरं लीला मधुरं, मधुराधिपते निखिलं मधुरं।।

वेणु मधुरं केशं मधुरं, गीतं मधुरं गेयं मधुरं
चित्तं मधुरं रंजन मधुरं, मधुराधिपते निखिलं मधुरं।
दिव्या मधुरं कृष्णा मधुरं, चेतन मधुरं अंगी मधुरं
प्रिय वै मधुरं वेणुमधुरं, मधुराधिपते निखिलं मधुरं।।

आहं मधुरं वाहं मधुरं, मोदं मधुरं कुम्भं मधुरं
श्रीं श्रीं मधुरं अंगम मधुरं, मधुराधिपते निखिलं मधुरं।
गुणकर मधुरं सुखकर मधुरं, आशीर्मधुरं श्रीर्वै मधुरं
संगम मधुरं संगिन मधुरं, मधुराधिपते निखिलं मधुरं।

सौन्दर मधुरं लीला मधुरं, प्रगटं मधुरं प्रच्छं मधुरं
यष्टि मधुरं तृष्टि मधुरं मधुराधिपते निखिलं मधुरं।
मधुरं मधुरं मधुरं मधुरं, मधुरं मधुरं सर्वं मधुरं
मम प्राण चरण त्वं वै मधुरं, मधुराधिपते निखिलं मधुरं।।

सद्गुरु जन्मदिवस पर एक पाठ अवश्य करें।

आयुर्वेद सुधा

नीम

जीवन है, तो सब कुछ है, आयु है, स्वास्थ्य है, तभी संसार में किसी अन्य वस्तु की कल्पना की जा सकती है, इसी को कहा गया है – 'जान है तो जहान है।' और इसी तथ्य को बहुत समय पूर्व ही ऋषियों ने अनुभव कर जड़ी-बूटियों एवं अन्य पदार्थों के औषधीय गुणों को संकलित किया और जन्म दिया एक अद्भुत शास्त्र को जिसकी तुलना वेद जैसे सर्वोच्च ग्रंथ से की गई और नाम दिया गया आयुर्वेद।

नीम के रूप में प्रकृति ने हमें एक अद्भुत वरदान दिया है, यह भारतवर्ष की एक अनोखी नियामत है। इसके वृक्ष भारत में सब जगह पैदा होते हैं और यहां के जनसमाज में रात दिन काम में आने वाली एक घरेलू दवा है। इसे सब कोई जानते हैं। इसलिए इसके विशेष वर्णन की आवश्यकता नहीं है। रात्रि में नीम के पेड़ के नीचे सोना अत्यंत लाभदायक है जहां अन्य वृक्ष रात्रि में कार्बनडाई आक्साइड छोड़ते हैं वहीं नीम का पेड़ प्राणदायक, स्वास्थ्यवर्धक और रोगनाशक वायु उत्सर्जित करता है।

नाम – संस्कृत-निम्ब। हिन्दी-नीम। बंगाली -नीमगाछ। मराठी – कडु निम्ब। गुजराती-लीमड़ो। तेलगू-वेष। उर्दू-नीम। अंग्रेजी – Indian Lilac (इण्डियन लिलाक)।

गुण, दोष और प्रभाव – आयुर्वेदिक मत से नीम हलका, शीतल, कड़ुवा, व्रणशोधक, बालकों के लिये हितकारी तथा कृमि, वमन, व्रण, कफ, शोथ, पित्त, विष, वात, कुष्ठ, हृदय की जलन, श्रम, खांसी, ज्वर, अरुचि, रुधिर विकार और प्रमेह को नष्ट करता है।

नीम के बीजों का तेल कड़वा और कुष्ठ तथा कृमिरोग को नष्ट करने वाला होता है।

द्रव्य गुण विवेचन – नीम तिक्त रस है, शीतवीर्य है और विपाक में कड़वा है। तिक्त रस होने पर भी लोगों को इसे खाने के बाद अरुचि नहीं होती। अधिकतर जितने तिक्त रस वाले पदार्थ होते हैं सभी अरुचिकर होते हैं। परंतु नीम में यह खास विशेषता है कि वह स्वयं अरुचिकर होते हुए भी अरुचिका नाशक है। यह खाने में बुरा मालूम होता है परंतु अरुचि वालों के लिए तुरंत लाभ पहुँचाने वाला और अमृत तुल्य है। नीम की कोमल पत्तियों को भी घी में भूनकर खाने से भयंकर से भयंकर अरुचि तुरंत नष्ट हो जाती है।

नीम के पचांग

1. नीम के पत्ते – नेत्रों के लिए हितकारी, कृमि, पित्त एवं विष के नाशक, पाक में कटुरस युक्त तथा सभी प्रकार की अरुचि और कुष्ठ को दूर करने वाले होते हैं। कोपलें संकोचक, नेत्र रोग, गर्मी, कोढ़ और कफनाशक हैं। सूखे पत्ते मनुष्य के कपड़ों और अनाजों को कीड़ों से बचाते हैं।
2. नीम के फूल – कड़वे, कफ, पित्त और कृमिनाशक है।
3. नीम के फल – कच्ची निबोली कटुरस, विपाक में तिक्त, स्निग्ध, लघु, उष्णवीर्य तथा गुल्म, कृमि और प्रमेह को दूर करने वाली होती है। पक्की निबोली मधुर, कटु, स्निग्ध तथा रक्तपित्त, नेत्ररोग तथा क्षयरोग नाशक है।
4. नीम की छाल – स्वाद में कटु, संकोचक व कफनाशक, अरुचि, वमन, ग्रहणी, कृमि तथा यकृत विकारों में लाभकारी है।
5. नीम का बीज – कृमिनाशक तथा पुरानी गठिया और खुजली पर इसका लेप करने से लाभ होता है।

चर्मरोग एवं कुष्ठ – वैसे तो नीम मनुष्य के शरीर में होने वाले अनेक रोगों में काम आता है। मगर इसका प्रधान क्षेत्र कुष्ठ, चर्मरोग और रक्तरोग है। यह विश्वास किया जा सकता है कि चर्मरोगों को दूर करने के लिये संसार में इसके बराबर दूसरी औषधियां नहीं है।

चेचक – नीम की लाल रंग की कोमल पत्तियां 7 और काली मिर्च 7 इनको नियमपूर्वक 1 महीने तक खाने से 1 साल तक चेचक निकलने का डर नहीं रहता।

बवासीर – बवासीर के ऊपर भी यह औषधि उपयोगी काफी लाभदायक साबित हुआ है। प्रतिदिन नीम के 21 पत्तों को लेकर मूँग की भिगोई और धोई हुई दाल के साथ पीसकर बिना किसी प्रकार का मसाला डाले हुए उसकी पकौड़ी बनाकर, घी में तलकर खाना चाहिए। इस प्रकार 21 दिन तक इन पकौड़ियों को खाने से हर तरह के बवासीर निर्बल होकर गिर जाते है। इस औषधि का सेवन करने वाले को पथ्य में सिर्फ ताजा मट्ठा ही पीकर रहना चाहिए। दूसरी कोई चीज नहीं खाना चाहिए। अगर इस प्रकार न रहा जाए तो भात और मट्ठा इन दो चीजों पर रहना चाहिए। अगर नमक के बिना न रहा जाए तो थोड़ा बहुत सेंधा

नमक लेना चाहिए।

नीम की निम्बोली और एलुवे को मिलाकर 6-7 ग्राम की मात्रा में खाने से बवासीर के मस्से सूख जाते है।

कृमि – नीम के तेल की 5 बूँद बालकों की आयु के अनुसार देने से पेट के कीड़े मर जाते हैं।

मधुमेह – नीम की छाल का काढ़ा सेवन करने से मधुमेह में लाभ होता है।

गठिया – नीम के तेल की मालिश करना बहुत ही लाभकारी है।

रक्त को शुद्ध करने में नीम विश्वविख्यात है। बसंत ऋतु में नीम की कोपलें और काली मिर्च 5-7 नग पीसकर सेवन करने से रक्त पूर्णरूपेण शुद्ध हो जाता है एवं त्वचा निर्मल होती है।

दंत रोग – प्रतिदिन प्रात: नीम की दातुन करने से दांतों के समस्त विकार नष्ट हो जाते हैं एवं इसके पंचाग के काढ़े से कुल्ला करने से दांत एवं मसूढ़ों का दर्द एवं सूजन नष्ट होती है।

जीर्ण ज्वर – जो ज्वर शरीर में हमेशा बना रहे और दूसरी किसी औषधि से लाभ न हो तो नीम की अंतर छाल को एक तोले की मात्रा में लेकर आधा लीटर पानी में औटाकर जब दसवां भाग पानी शेष रह जाए तब उसको छानकर प्रात:काल के समय में रोगी को पिला देना चाहिए। इस प्रकार कुछ दिनों तक पिलाने से रोगों के अंदर रहने वाला ज्वरांश निकल जाता है।

मलेरिया ज्वर – मलेरिया ज्वर में नीम की छाल का काढ़ा दिन में तीन बार पिलाने से बड़ा लाभ होता है। इससे ज्वर के बाद की दुर्बलता भी मिट जाती है।

बिगड़े हुए घाव – जो बिगड़े हुए फोड़े दूसरी औषधियों से शांत न होते हों उन पर नीम की पत्तियों का पुल्टिस बांधने से बहुत लाभ होता है।

कुष्ठ और चर्मरोग – नीम की छाल का क्वाथ पीने से और नीम के बीजों के तेल की मालिश करने से चमड़े के सभी रोग अच्छे होते हैं।

विषैले घाव – नीम की पत्तियों का रस, सरसों का तेल और पानी। इनको पकाकर लगाने से विषैले घाव अच्छे हो जाते हैं।

दमा – नीम के बीजों का शुद्ध तेल 30 से 60 बूंद तक की मात्रा में पान में रखकर खाने से दमे के रोग में बहुत लाभ होता है।

बहने वाले फोड़े – जो फोड़े हमेशा बहते रहते हो उन पर नीम की छाल की भस्म लगाने से लाभ होता है।

हैजे की ऐंठन – हैजे में हाथ पाँव में जो ऐंठन होती है उसमें नीम के तेल की मालिश करने से बहुत लाभ होता है।

मोच और गिल्टियों की सूजन – चोट लगने के कारण आई हुई मोच और गिल्टियों के शोथ पर नीम की पत्तियों का बफारा देने से बड़ा लाभ होता है।

नासूर और पीव वाले फोड़े – जिस घाव में नासूर पड़ गया हो और उसमें से बराबर पीब निकलता हो तो उस पर नीम की पत्तियों का पुल्टिस बांधने से बड़ा लाभ होता है।

मासिक धर्म की रुकावट – नीम की छाल 5 ग्राम, पुराना गुड़, 25 ग्राम और पानी 350 ग्राम इनको औटाकर जब तीसरा भाग जल रहे तब छानकर पिलावे। इससे रुका हुआ मासिक धर्म फिर होने लगता है।

कष्टार्तव – यदि मासिक धर्म के दिनों में दर्द अधिक होता हो तो उन दिनों में नित्य नीम के पत्तों का रस 6 ग्राम, अदरक का रस, 12 ग्राम और उतना ही पानी मिलाकर पिलाये दर्द में तुरंत आराम होगा।

पक्षाघात – नीम के बीजों का तेल निकाल कर रोगी के पक्षाघात वाले अंगों पर मालिश करने से धीरे-धीरे पक्षाघात में लाभ होता है।

दाद – नीम के पत्तों को दही में पीस कर लेप करने से दाद मिट जाता है।

प्रसूति कष्ट – नीम की जड़ को गर्भवती स्त्री की कमर में बांधने से बच्चा आसानी से पैदा हो जाता है। किन्तु बच्चा पैदा होते ही नीम की जड़ को खोल कर तुरंत फेंक देना चाहिए।

वमन – नीम की पत्तियों का स्वरस पिलाने से वमन होना बन्द हो जाता है।

नीम का महलम – नीम का तेल 1 पाव, मोम आधा पाव, नीम की हरी पत्तियों का रस 900 ग्राम, नीम की जड़ की छाल का चूर्ण 60 ग्राम, नीम की पत्तियों की राख 30 ग्राम। एक लोहे की कढ़ाई में नीम का तेल और नीम की हरी पत्तियों का रस डालकर हलकी आंच से पकावे। जब रस जलते-जलते 50 ग्राम रह जाए तब उसमें मोम डाल दे। जब मोम गलकर तेल में मिल जाए, तब कढ़ाही को चूल्हे से नीचे उतारकर कपड़े से छानकर तेल की गाद को अलग कर दे। फिर नीम की छाल का चूर्ण और नीम की पत्तियों की राख उसमें मिला दे।

यह नीम का मरहम जहरीले तथा दूसरे घावों पर लगाने के योग्य है। इस एक वस्तु से घावों का शोधन और रोपण दोनों काम एक ही साथ हो जाते हैं। सड़े हुए पुराने घाव, नासूर तथा पशुओं के घावों पर भी इसका उपयोग किया जाता है।

जिनकी कामशक्ति दुर्बल हो उन लोगों को नीम का अधिक सेवन नहीं करना चाहिए।

(उपयोग से पूर्व अपने वैद्य की सलाह अवश्य लें)

Any Thursday or 21st of any Month

Guru Hridyasth Sthapan Sadhana

Most Powerful Sadhana of this universe !

The essence of the divine is the Guru element. The Guru is not merely a human body. He is Divine incarnate. He is an ocean of divine consciousness because he is on a higher spiritual plane, because his Kundalini is fully activated and his Sahastrar is too.

Such great souls need not eat or drink anything, though they might just to keep the people around them under a veil of Maya. Or they might eat and drink so as not to become 'showmen for miracle seekers'. Such great souls can perform Sadhanas seated in mid air six feet above ground. There is no place on earth where blood has not been shed out of hatred and jealously. True Sadhanas cannot be tried seated on ground.

What is the process of reaching such a stage ? How can one realise the full potential of human life ?

For this one has to achieve purity of mind, body and spirit. Without it one cannot live to thousands of years or reach divine spiritual land called Siddhashram.

The type of life you are leading is nothing spcial. You are just headed towards the funeral ground where all your ancestors ended up. If you want to lead such a life then you do not need a Guru.

It is said that divine fragrance called Ashtgandh used to emanate from Lord Krishna, Lord Buddha and other great Yogis and Rishis. Your body on the other hand starts to stink if you do not have a bath for just one day. Why can't such fragrance emanate from your form ? Why can't you have a divine personality ?

Even gods yearn to be born as humans because it is the medium through which highest spiritual progress is possible. And the way to do it is entering **Prann Tatva** or getting linked to Guru element that is within. Then true knoledge would pour out on its own without you having to read ancient texts. There are thousands of Sadhanas and no human could try all in order to rise spiritually. Is there no Sadhana that can bestow all boons spiritual & worldly at one go ?

There sure is. Presented here is a unique Sadhana that cannot be found anywhere and is very difficult to procure. It is the highest Sadhana and hence kept secret. It might appear simple but through it one could get linked to the Guru element, to one's soul and its amazing infinite capabilities.

Early morning have a bath and wear fresh yellow clothes. Sit on a yellow mat facing North. Cover a wooden seat with yellow cloth. On some yellow flowers place **Guru Hridyasth Sthaapana Yantra.** Light a ghee lamp. Then chant thus.

Deergho Sadaam, Vei Paripoornna Roopam, Gurutvam Sadeivam Bhagwat Prannamyam. Tvam Brahma Vishnu Rudra Swaroopam. Tvadeeyam Prannamyam, Tvadeeyam Prannayam. Na Cheto Bhavaabdhe Ravi Netra Netram, Ganagaa Sadeiv Paramam Cha Rudram. Vishnnorvataam Mevatmev Sindhum, Eko Hi Naamam Gurutvam Prannamyam. Aatmo Vataam Poornna Madeiv Nityam, Siddhaashramoyam Bhagwat Swaroopam. Deergho Vataam Nitya Sadevam Tureeyam, Tvamevam Sharannyam Tvadeeyam Sharannyam. Eko Hi Kaaryan Eko Hi Naamam, Eko He Chintyam Eko Vichintyam. Eko Hi Shabd Eko Hi Poorva, Gurutvam Sharannayam Gurutvam Sharannyam.

Offer Saffron, rice grains, flowers and sweet made from milk on Yantra. Then standing on the toes with the heels raised chant one round of this Mantra.

Om Hreem Nrim Mam Rakta Bindu Hridyasth Guru Sthaapitam Nrim Hreem Om.

Do this regularly for 21 days by **Guru Rahasya Mala**. Then drop the Yantra and rosary in river or pond. Through this Sadhana the Guru element is established in each atom of one's body and one starts the journey towards spiritual enlightenment.

Sadhana articles-540/-

Dhanvarshini Lakshmi Sadhana

03.05.22 or Any Wednesday

DRIVE AWAY POVERTY

For leading a balanced life there should be a balance in Dharma (righteousness). Arth (wealth), Kaam (pleasures) and Moksh (freedom from attachments) in one's life. This is the view of our ancient texts and Rishis. No where have our ancestors emphasized a life of paucity and poverty. Wealth they say is most important whether one is leading a material life or a spiritual one.

Sometimes fate forces one to lead a life of poverty and misery and sometimes it is one's own view about money that deprives one of a good comfortable life. Then there are people who might try any worship but they fail to please the divine powers that rule over wealth.

Permanent prosperity is possible even if one's planets suggest otherwise. But for that one needs to have determination and faith to try Sadhanas. Wealth does not mean only money but also house, food, fame and all comforts. If the Goddess of lakshmi is appeased through powerful rituals. She is compelled to grace the house of the Sadhak and bless him with all comforts in life.

Even the great Rishi Vishwamitra once had to face utter poverty but through a powerful Lakshmi Sadhana he went on to become the most prosperous Rishi so much so that kings used to come to him intime of need to seek monetary help.

Bhagwatpaad Shankaracharya has praised the folowing Lakshmi Sadhana sky high and he made all his householder disciples accomplish the ritual in order to make them well off.

This is the Dhanvarshini Lakshmi Sadhana-a ritual of Dhanvarshini, one of the most benevolent forms of Goddess Lakshmi, who literally makes wealth rain in one's home.
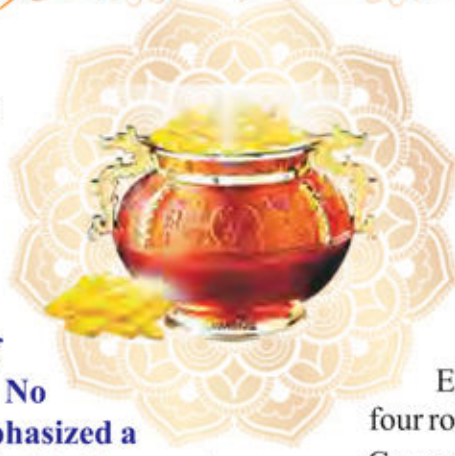
On any **Wednesday** get up early in the morning at 4 am and have a bath. Wear fresh clothes. Sit facing East on a yellow mat. First of all chant four rounds of Guru Mantra.

Cover a wooden seat with white cloth and on it place a steel plate. On it inscribe Jha with vermilion. Then take a **Lakshmi Yantra** and bathe it with water. Place it in the plate and offer rice grains, vermilion and flowers. Light a ghee lamp and incense.

Then take water in the right palm and speaking your name and surname pray to Goddess lakshmi for success in the Sadhana.

Then chant the following Mantra.

Braahmeem Cha Veishnnaveem Bhadraam Shadbhujaam Cha Chaturmukheem. Trinetraam Khadag Trishool Padam Chakra Gadaa Dharaam. Peetaambar Dharaam Deveem Naanaalankaar Bhooshitaam. Tejah Punj dhareem Shreshtthaam Dhyaayed Baal Kumaareekaam.

Next with a **Dhanakshi rosary** chant 11 rounds of the following Mantra.

Om Shreem Hreem Kleem Dhanvarshinnee Lakshmeer-aagachh-aagachh mam Grihe Tishtth Tishtth Swaahaa.

After the Mantra chanting offer rice grains on the Yantra. Also offer flowers. Also chant one round of Guru Mantra once again. Let the Sadhana articles remain in place of worship for one month and then drop them in a river or pond. if tried with devotion this Sadhana simply cannot fail and is a real boon for everyone today.

Sadhana Articles- 500/-

उपहारस्वरुप प्राप्त करें

गुरु हृदय धारण दीक्षा

जब शिष्य को यह बोध हो जाता है, कि सद्गुरु के बिना जीवन में अन्य कुछ भी नहीं है, समस्त साधनाओं और सिद्धियों के आधार मात्र सद्गुरुदेव ही हैं, तो वह अपने हृदय की एक-एक रग में ही उन्हें उतार लेना चाहता है।

जब शिष्य को यह बोध हो जाता है, कि सद्गुरु के बिना जीवन में अन्य कुछ भी नहीं है, समस्त साधनाओं और सिद्धियों के आधार मात्र सद्गुरुदेव ही हैं, तो वह अपने हृदय की एक-एक रग में ही उन्हें उतार लेना चाहता है। उसके भाव होते हैं, कि हर हाल में वह गुरुदेव में निमग्न हो जाए। यह एक प्रकार की छटपटाहट होती है, विरह की भाव भंगिमा होती है, और ऐसे में गुरु हृदयस्थ धारण दीक्षा वही कार्य करती है, जैसे प्यासे को पानी, अंधे को दो नैन। इस दीक्षा के उपरान्त शिष्य को यह नहीं लगता कि गुरुदेव मुझसे दूर हैं। इस दीक्षा में जब गुरुदेव हृदय में ही स्थापित हो जाते हैं, तो फिर हृदय में बैठे-बैठे ही शिष्य का कल्याण करते रहते हैं। वस्तुतः शिष्य-जीवन का प्रारम्भ तो गुरु दीक्षा से होता है, परन्तु इस दीक्षा को लिए बिना गुरुदेव से पूर्ण रूप से जुड़ने की क्रिया सम्भव हो ही नहीं पाती। एक तरह से यह दीक्षा साक्षात गुरु कृपा ही होती है।

वस्तुतः शिष्य-जीवन का प्रारम्भ तो गुरु दीक्षा से होता है,
परन्तु इस दीक्षा को लिए
बिना गुरुदेव से पूर्ण रूप से जुड़ने की क्रिया सम्भव हो ही नहीं पाती।
एक तरह से यह दीक्षा साक्षात गुरु कृपा ही होती है।

योजना केवल 12, 23, 24 अप्रैल इन दिनों के लिए है

किन्हीं पांच व्यक्तियों को पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क 2250/- **'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'**, जोधपुर के बैंक के खाते में जमा करवा कर आप यह दीक्षा उपहार स्वरूप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं। दीक्षा के लिए फोटो आप हमें संस्था के वाट्स अप नम्बर 8890543002 पर भेज दें। इसी वाट्स अप नम्बर पर पांचों सदस्यों के नाम एवं पते भी भेज दे। संस्था के बैंक खाते का विवरण पेज संख्या 2 पर देखें।

दिव्य आनन्द और उल्लास का पर्व

और तुम्हें आना ही है....

21 अप्रैल शिष्य के लिये पावनतम पर्व है। यह हर्ष एवं उल्लास का पर्व है जिस दिन हमारे सद्गुरुदेव इस पृथ्वी ग्रह पर पधारे। देह रूप में माया फैलाई, लीला की शुरुआत की, धर्म की पुनर्स्थापना की शुरुआत की और मंत्र साधना को पुनर्जीवित किया। साधक-शिष्यों को यह अहसास कराया कि तुम शेर हो और साधना के बल पर अपने 'स्व' का जागरण किया और फिर कोटि-कोटि हृदयों में विराजमान हो गये।

सद्गुरुदेव के शब्दों में, ''मुख्य बात तो यह है कि तुम वह स्वरूप स्वयं साक्षात् कर लो, उस स्वरूप का दर्शन प्राप्त कर लो जिसे निहारने के बाद समाधि कोई पृथक भावभूमि रह ही नहीं जाती।'' गुरु से मिलना, ऐसा ही साक्षात् करने का क्षण होता है और वे क्षण दिव्यता, आनन्द और समाधि के क्षण ही होंगे, जिन्हें किसी परिभाषा से नहीं बांधा जा सकता। न वह निर्विकल्प होती है, न सविकल्प, यह तो जड़ समाधि की स्थितियां हैं। किन्तु यह स्थिति तो प्रत्येक जड़ता से सजीवता की ओर बढ़ने की प्रक्रिया है, एक घटना है।

21 अप्रैल वस्तुतः हमारे लिए नूतन जन्म लेने का पर्व है क्योंकि ऐसे क्षणों में गुरु आतुर रहते हैं अपने शिष्यों को नया रूप देने के लिए, उन्हें सब कुछ प्रदान करने के लिए एवं अपने शिष्यों के हृदय में स्वयं समाहित होने के लिए।

यही है गुरु-शिष्य का सम्बन्ध जो कि संसार के किसी भी सम्बन्ध से ज्यादा पवित्र होता है अतः इस बार आप को मिलना है, सिर्फ शब्दों से नहीं। सिर्फ कहने मात्र को नहीं। तुम्हारा मिलना सार्थक हो सके इसके लिए गुरु को अपने हृदय में उतारना है। गहराई तक समर्पित कर देना है, उसी तरह जैसे नदी तेजी से बहती हुई सागर में विलीन हो जाती है, तब वह समुद्र बन जाती है। जब हम अपने स्व को विलीन करेंगे तो समुद्र बन सकेंगे। ऐसा नहीं है कि तुम प्रयास नहीं करते, तुम प्रयास तो करते हो परन्तु इस बार थोड़ी और क्षमता से प्रयास करो और मैं तुम्हारे साथ हूं तुम्हारे प्रयास को सार्थक करने के लिए।

यह दिवस तो प्रेम का दिवस है। यह अमृत दिवस है। इस दिवस के साथ, आप शिष्यों की धड़कनें जुड़ी हुई

21 अप्रैल सद्गुरुदेव अवतरण दिवस महोत्सव

और फिर आ गया 21 अप्रैल जो शिष्यों और साधकों के लिए दीवानगी का दिवस है

इन्तजार रहता है
उन्हें इस दिन का कि कब यह दिवस आये और
हम हुलस कर गुरु के चरणों में पहुँच जायें।
क्योंकि यह दिवस एक अद्वितीय व्यक्तित्व के
अवतरण का दिवस है

और गुरु तो इन क्षणों में बाहें फैलाये इन्तजार करते ही रहते हैं शिष्यों का..........

हैं। यह दिवस अपने भावों को प्रकट करने का दिवस है और यह पवित्र दिवस हमारे लिए जीवन का सर्वश्रेषठ दिवस है। जहाँ यह होली के रंगों से पूर्णता लिए हुए है तो दीपावली के दीपों से एवं साधना की दिव्यता से युक्त है तो राम की मर्यादा से एवं भगवान कृष्ण की प्रेम दृष्टि से आप्लावित है। यही कारण है कि योगियों एवं संन्यासियों ने इस दिवस को महोत्सव के नाम से विभूषित किया है।

अतः इस दिन हम सब एकत्र होकर सद्‌गुरुदेव का आवाहन करेंगे। उनकी प्रसन्नता के लिए मंत्रों के माध्यम से संकल्प लेंगे और विश्वास दिला देंगे, सद्‌गुरु नारायण के इस अवतरण दिवस पर, कि आप द्वारा प्रवाहित ज्ञान गंगा की धारा आज भी अविरल रूप से तीव्र गति से प्रवाहमान है।

सद्‌गुरुदेव ने कहा था, ''मेरी उपस्थिति को तुम्हें मंगलमय बनाना है तो मेरी अनुपस्थिति को भी मंगलमय बनाने की कला सीखो, तुम मेरी आशा हो, मेरा स्वप्न हो, मेरा चिंतन हो। मैं रहूँ या न रहूँ इसकी चिन्ता न करो, तुम मुझे स्मरण करो मैं हर क्षण तुम्हें पीछे खड़ा तैयार मिलूँगा।

तुम्हारे इस शरीर में कुछ भी सार नहीं है। यह मल-मूत्र, विष्ठा, लार, थूक से भरा है। तुम इसमें मुझे आत्मसात कर लो, मैं इसे स्वर्णिम बना दूँगा। तुम मुझे अत्यधिक प्रेम करते हो, इसका मुझे अहसास है तभी तो मैं निश्चिन्त हूँ, बस तुम्हें परिश्रम, समर्पण के साथ निडर होकर मेरे बताये मार्ग पर चलते रहना है।

यह आमंत्रण उन सभी शिष्यों के लिए है, जिन्होंने सद्‌गुरुदेव के ज्ञान को समझा है, जिन्होंने गुरुदेव को अपने हृदय कमल पर स्थापित किया है, जिन्होंने सद्‌गुरुदेव की वाणी सुनी है वह रुक ही नहीं सकता क्योंकि यह दिवस गुरु और शिष्य का आत्मीय मिलन का दिवस है, साधना की ऊँचाइयों को स्पर्श करने का दिवस है। इस दिवस से सभी शिष्यों की धड़कनें जुड़ी हुई हैं।

पूरे भारतवर्ष के साधक एक स्थान पर इकट्ठे होकर मनायेंगे यह महोत्सव और होगा नृत्य, संगीत, भजन, आनन्द और मस्ती और इन सबके साथ गंगा के तट पर गढ़मुक्तेश्वर स्थित टिगरी धाम में हर-हर महादेव की गूंज।

इस बार सिद्धाश्रम साधक परिवार गजरौला के शिष्य आपको आमन्त्रित कर रहे हैं और पलकें बिछाये आप सभी गुरु भाइयों का इन्तजार कर रहे हैं कि आप आयें और हमारे साथ मिलकर मनायें अपने सद्‌गुरुदेव के इस अवतरण दिवस के उल्लास पर्व को।

शिविर स्थल

रमाबाई राजकीय महाविद्यालय ग्राउण्ड, इन्दिरा चौक, गजरौला, जिला–अमरोहा

शिविर स्थल गजरौला रेलवे स्टेशन/बस स्टैंड से 1.5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

टिगरी धाम – यहाँ कार्तिक पूर्णिमा पर मेला लगता है। इस अवसर पर यहाँ लाखों लोग स्नान करते हैं। यह स्थान शिविर स्थल से मात्र 7-8 किलोमीटर दूर है। यह वही पुण्य स्थान है जहाँ पर 20 अप्रैल को पूज्य गुरुदेव सहस्त्राक्षी महालक्ष्मी दीक्षा, गुरु रक्त कण-कण स्थापन दीक्षा एवं अन्य शक्तिपात दीक्षाएं प्रदान करेंगे।

यहाँ साधकों को ले जाने की व्यवस्था आयोजकों द्वारा की गई है। गजरौला दिल्ली से 100 किलोमीटर की दूरी पर है जो कि दिल्ली-गाजियाबाद-गजरौला-मुरादाबाद रूट पर स्थित है।

10 अप्रैल 2022

धूमावती सायुज्य बगलामुखी साधना शिविर

शिविर स्थल :

नामधारी गार्डेन सीसमो होटल, कल्पना एसकोयर, **भुवनेश्वर** (उड़ीसा)

आयोजक मण्डल : इन्द्र जीत राय-8210257911, 9199409003 चैतन्य गुंजन योगी जी (भुवनेश्वर)-8144904640, डॉ. लक्ष्मी नारायण पानी ग्राही एवं प्रतिमा कुमारी पत्रा (ब्रह्मपुर) - 9437616301, वैष्णो चरण साहू (बलांगीर) 8249804350, सुत ध्रुवा एवं सत्यवती ध्रुवा, (बाण्डामुण्डा)-9337852925, दीलिप मिश्रा (सम्बलपुर)-9438202003, **कटक**-शिव विरचरण नारायण त्रिपाठी, 8895972932, अभिषेक शर्मा-8847857125, **भुवनेश्वर**-किशोर कुमार बरिहा-9937056155, प्रदीप कुमार महापात्रा, टुन्ना भाई, अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार **ब्रह्मपुर**-सत्यवादी भंजो देव, संतोष कुमार पति, मनोज कुमार पात्रा, ध्रोनी दास, संतोष कुमार सेठी एवं **बरकतपुर** के सभी गुरू भाई एवं गुरू बहन, **कालाहांडी**-प्रदीप साहू-9777830254, सुजीत जी, **कटक**-मंगेश बेहेरा, उपेन्द्र मलिक, **राउरकेला**-नरेश राजगड़िया-8018406882, सरोज कुमार प्रधान, गौर सिंह भूमिज, वृंदावन ताती, रोहित कुमार पेलई, **बांडामुण्डा**-जयदीप नायक, सूरज मलाकार, **झारसुगड़ा**-हरि बाग बाबू लाल साहू, वेंकेट राव, राजू मेहर, जगरनाथ साहू, नीतिन जी, **सुन्दरगढ़**-अशोक कुमार, श्री नाथ समल, सुनील कुमार पटेल, **सम्बलपुर**-गोविन्द पंडा, लिंग राज प्रधान, चन्द्रशेखर डोरा, **बलांगीर**-सुब्रत बोहिदार, अशोक राउत, बासुदेव रता, अश्विनी त्रिपाठी, विजय भुषण बघेल, सेषा देव मेहर, सुशील कुमार तांदी, विकास मिश्रा, वरूण थनाप्ति, कामदेव बारिक, अनिल कुमार मिश्रा, सत्य बागरति, गजेन्द्र साहू, रविन्द्र मेहर, विजय पानी, नन्दी मिश्रा, **पूरी**-संतोष कुमार परिदा, **तेतलागढ़**-ऋषिकेश नाग एवं जमुना नाग, **धर्मगढ़**-नेहारिका नाग, **बिहार लखीसराय** - मुरारी महतो, पप्पू महतो, नन्दकिशोर कुमार, **बेगुसराय बिहार** - लुटन जी

14 अप्रैल 2022

गुरु शिष्य मिलन समारोह

शिविर स्थल :

जानोलकर मंगल कार्यालय, केशव नगर, रिंग रोड, जिला : **अकोला** (महाराष्ट्र)

(निखिल स्तवन पाठ सुबह 9.00 बजे से 10 बजे तक)

आयोजक मण्डल : राजेश सोनोने-9823033719, रविंद्र अवचार-99211 38349, 9423468059, भास्कर कापडे-9623454354, विष्णु जायले- 9623454353, आनंद गुप्ता, विनायकराव देशमुख- 94229 37169, पुंजाजी गावंडे-9527570406, श्याम दायमा-8805710711, राजू चिंचोळकर -9850574122, श्रीनिवास पावसाळे-9767605061, शंकरराव अंभोरे- 99601 52144, राजेश राऊत-9145860760, दिनेश कोरे-98225 60901, संतोष दांडगे-9822730441, संजय शेन्डे-96044 83029, दयाराम घोडे-7350655850, धीरज टापरे-9975054742, गुणवंत जानोरकर -9226070462, किशोर नरहर पाटिल-97667 75911, राजेश पाटिल- 9028465950, सुनील खंडारे-9623744190, सुनील जामनारे-9850333769, शरद पवार-9696323452, शशिकांत लोंढे- 7798130130, मनीष येन्डे- 9326917415, गणेश काळे-98506 63935, संदीप बढे-7387393556, प्रह्लाद भरसाळदे-9766333084, गजानन बलोदे-9822716368, मंगेश सोनोने-9623454352, धनराज माळी- 8007727479, प्रवीण सोनोने- 9405674015, ज्ञानेश्वर लिखार-9860972211, अरुण म्हैसने-99233 13939, नारायण इंगळे-9922072683, अरुण रावरकर- 9822943520, प्रवीण वाघमारे-7249390312, पांडुरंग मास्कर-9860279267, सौ. ममता घाटोळ-9552658461, अरुण पवार-9822808593, मुरलीधर शेटे-9850251078, दिलीप कुमरे-8975255794, कृष्णा रावणकार -9011883645, विजय भगत- 9075072619, शकील सर्जेकर- 78419 69809, पुरुषोत्तम निंबाळकर- 9011929278, अवधूत सिरसाट-9766451677, किशोर चव्हाण- 9975957702, रामकृष्ण नवघरे-9850159069, प्रमोद सोनोने-9370549394, हरीभाऊ उकर्डे-9325811463, दीपक मालोकार-9921964053, सुधाकर पुंडकर -9637384570, विजय लोहकरे-81494 83987, राजेश सरोदे-9623408967, अंकुश मिसाळ- 9860674496, निलेश चव्हाण-9579034331, महेंद्र पवार-8788364330, मनीष कनोजिया- 94229 88945, अशोक चव्हाण- 9226893205, चंद्रपुर-वतन कोकास-9422114621, बालाघाट-नरेन्द्र बोम्प्रे- 9406751186, गडचिरोली-दुल्लुराज वुइक-9422615423, यवतमाळ- श्रीकांत चौधरी-9822728916, अमरावती-रोहित काळे-8551975547, वर्धा-चंद्रकांत दौड-8379080867, नागपुर-वासुदेव ठाकरे -9764662006, किशोर वैद्य, सारंग चौधरी- 9921672114, भण्डारा -देवेन्द्र काटखाये-7020221640, नरेन्द्र काटेखाये-9403419979, गोंदिया -डी.के. सिंह-9226270872

16 अप्रैल 2022

निखिल सायुज्य
राजराजेश्वरी ललिताम्बा साधना शिविर

शिविर स्थल :

जोरावर स्टेट पार्टी प्लाट, वाघोडिया क्रॉसिंग एवं डभोई क्रॉसिंग के बीच, नेशनल हाईवे नं. 8 बाईपास, नियर ईस्टर्न आर्केड, जिला : **बड़ौदरा** (गुजरात)

(निखिल स्तवन पाठ सुबह 9.00 बजे से 10 बजे तक)

आयोजक मण्डल : सिद्धाश्रम साधक परिवार बड़ौदा, गुजरात- पी. के. शुक्ला-9426583664, चिराग महेश्वरी-9725323930, कनु भाई सोनी- 9737836800, सुनील सोनी-9925555035, विरल सोनी -9925234536, महेन्द्र सिंह राणा-9825026711, हितेश शुक्ला 8141376295, विजय भाई दर्जी, हितेश बिरला, अपूर्व वोरा, कान्ति भाई परमार, रमाकान्त सोनी, ज्योति पाटिल, प्रकाश पटेल, अल्पेश राठवा, अजय अग्रवाल, विरेन्द्र शर्मा, मनोज महेश्वरी, राजेश भटट, रोहित मोरे , कमलेश शर्मा, यतिन पंडया, रेवजी पटेल, मुकेश पढियार, अशोक परमार, भावेश पटेल, ललित प्रसाद, भुपेन्द्र भाई सुथार , क्रुणाल उपाध्याय

17 अप्रैल 2022

गुरु-शिष्य मिलन समारोह शिविर

शिविर स्थल : शिक्षण संगीत आश्रम, स्वामी श्रीवल्लभ दास मार्ग, निअर गुरुकृपा हॉटल, प्लॉट नं. 6, सायन (पूर्व), **मुम्बई**

(सायन स्टेशन से 5 मिनट की दूरी पर)

आयोजक मण्डल - तुलसी महतो-9967163865, डॉ. संतलाल पाल-97680 76888, यशवंत देसाई-9869802170, नागसेन पवार -9867621153, अजय मांचरेकर, मानव, पीयूष, सुनील साल्वी, श्रीनिवास, गुरु, रोहित शेट्ठी, मनोज झा, राकेश तिवारी, हमप्रसाद पाण्डे, बुद्धिराम पाण्डे, गंगा, जिया, सीता, सोनू, दिलीप झा, उपाधे, पूर्णिमा (नेपाल), प्रकाश सिंह, संजय गायकवाड़, गोरखनाथ, बसन्ती, पीताम्बर (नेपाल), रामेश्वर, अनयसिंह, जी.डी. पाटिल, रवि पाटिल, मोहनी सैनी, हरिभाई विश्वकर्मा, सुहासिनी दयालकर, गायत्री दयालकर, अजय कुमार सिंह, प्रवीण राय, वीरेन्द्र, श्यामसुन्दर, भावप्रसाद पाण्डे, रवि साहू, राकेश तिवारी, भाव प्रकाश, निर्मल कुमार, राघवेन्द्र प्रताप, प्रवीण भारद्वाज, प्रीतम भारद्वाज, संतोष अम्बेडकर, राजकुमार मिश्रा, अनीता हंसराज भारद्वाज, अरविन्द अरोड़ा, राहुल पाण्ड्या, विवेक पवार, गीता, ममता, राजेश उपाध्याय

20-21 अप्रैल 2022

सद्‌गुरुदेव जन्मोत्सव एवं सहस्त्राक्षी महालक्ष्मी साधना शिविर

शिविर स्थल : डॉ. रमाबाई राजकीय महाविद्यालय ग्राउण्ड, इन्दिरा चौक, **गजरौला** - जिला- अमरोहा (उ.प्र.)

(विस्तृत विवरण पत्रिका की पृष्ठ संख्या 61 पर देखें)

आयोजक मण्डल-केप्टन श्यामवीरसिंह-9997944895, पुष्पेन्द्रसिंह -9412342835, खिलेन्द्रसिंह-9837458090, विकास अग्रवाल-8868982839, योगराजसिंह-9917055523, मुनेन्द्रसिंह-97567 00204, कृष्णकुमार मिश्रा- 9897105859, प्रेमनाथ उपाध्याय- 9997754279, शत्रुधन त्यागी- 6397392356, किरनपाल सिंह-88690 41980, गजरौला-श्याम सुन्दर कौशिक, यतेन्द्र कुमार, शेखर वर्मा, विनोद पाण्डे, गतेन्द्र सिंह, रितेश त्यागी-9999561076, कुलदीप सिंह, गौरव राठौड़, दीपक, अमरोहा-नितिन अग्रवाल- 9258890999, मनोज कुमार- 7351960854, दीपक कोहली, रामनाथ त्यागी, मनीष सैनी, विजयपाल सैनी, जितेन्द्र कुमार, मुरादाबाद-युवराजसिंह, रागिनी गुप्ता-843346020, यशवीरसिंह-97583 37325, मुकुल सिंह, हरज्ञानसिंह यादव- 9149224023, अशोक कुमार, सोमपालसिंह, सुशील कुमार सिंह, विजेन्द्रपाल सिंह, मनोज विश्नोई, राजेन्द्र सिंह, सूरजपाल सिंह, विकास राणा, सम्भल-मोनू कुमार-9568495068, रामेन्द्र सिंह, रिंकू सैनी- 9457131508, सुरेन्द्र सैनी, रणजीत सैनी-9027765397, परमसिंह, सतेन्द्र सिंह, नरेन्द्रसिंह, लोकेन्द्र सैनी, विजेन्द्र सैनी, अक्षय त्यागी, शशांक चौधरी, मिलन शर्मा, श्रीमती वीर बाला, हर्ष राणा, तरुण यादव-6396432371, प्रेमसिंह यादव, अनूपसिंह यादव, अनिल सैनी, कमल सैनी, जितिन सैनी, शंकर सैनी, अंकुर सिंह, कुलदीप त्यागी, बिजनौर-सोमपाल सिंह-9759405278, निर्वेश त्यागी-9756220905, कल्याणसिंह, राजबहादुरसिंह, राजवीरसिंह, नन्दकिशोर, जशवन्त सैनी, विवेक गुप्ता, धामपुर-सुरेश कुमार रस्तौगी, मनोज कुमार, शीतल कुमार, संजय कुमार, मंजू रस्तोगी, राजीव शर्मा, अनिल अग्रवाल, आशाराम गौड़, अनुराग त्यागी (नूरपुर), बुलन्द शहर-पंकज गर्ग, मनोज कुमार शर्मा, बरेली-राजेश प्रताप, शहाजहांपुर-अनिल कुमार, प्रदीप राठौड़, कैलाश राठौड़, लखीमपुर-बाबा सूरतदास, अमित कुमार, अरुण मिश्रा, बबलू मिश्रा, राजेश रस्तोगी, लखनऊ-अजय कुमार सिंह, सतीश टण्डन, जयंत मिश्रा, कानपुर-शैलेन्द्र सिंह, श्रीमती नीलम, सुरेश पाण्डे, महेन्द्र सिंह, नागपुर-वासुदेव ठाकरे, हलद्वानी-आनन्द राणा, हरीश प्रसाद, श्रवण कुमार, संजीव चौहान, उधमसिंह नगर-शिवदयाल, वासुदेव, सुनील रुहेला, हरभजन सिंह, बाजपुर-मनोज सिंह, सत्येन्द्र कुमार वर्मा, काशीपुर-आसु मिश्रा, वी.के. मिश्रा, नैनीताल-पप्पन जोशी, कोटद्वार-महिपाल सिंह, हरिद्वार-स्वामी प्रकाशानन्द, लक्ष्मण सिंह, प्रतुल कुमार, आशा राम गौड़ा

8 मई 2022

माँ भगवती नारायण साधना शिविर

शिविर स्थल : भारत कोकिंग कोल लिमिटेड (B.C.C.L.), **सिजुआ स्टेडियम, सिजुआ (जिला-धनबाद)**

(नियर कटरास रेलवे स्टेशन)

सम्पर्क : 7004283749, 9835121114, 9835369456, 9905553162, 70504 12638, 9304475247, 6205271854, 9939604118, 9123461164, 99053 34814, अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार, सिजुआ, धनबाद।

14-15 मई 2022

सद्‌गुरुदेव निखिलेश्वरानन्द कृपायुक्त शिवशक्ति महामृत्युंजय साधना शिविर

शिविर स्थल : रोटरी भवन, **पालमपुर-काँगड़ा** (हि.प्र.)

आयोजक सिद्धाश्रम साधक परिवार, हिमाचल प्रदेश-पालमपुर- आर.एस. मिन्हास-8894245685, संजय सूद-9816005757, शशी संगराय, देवगौतम-9894075015, वृन्दागौतम, सुनन्दा, सीमा चन्देल-9459351566, बलवन्त ठाकुर, ओंकार राणा-9816578166, मिलाप चन्द, कुशला देवी, कुसुम, राजेन्द्र कटोच, जोगिन्द्र सिंह, कर्मचन्द, कल्याण चन्द, कामना ठाकुर, कृष्णा सुपहिय, अक्षय वर्मा, कुशला देवी, उर्मिल सुवहिया, अखिल-आंचल राणा, काँगड़ा-अशोक कुमार-9736296077, सुनील नाग-9736550347, राजू, रणजीत मूंगरा, धर्मशाला-संध्या-9805668100, केसर गुरंग-98825 12558, जुल्फीराम, अरविन्द डोगरा, नगरोटा सूरियाँ-ओमप्रकाश-9418256074, कुशल गुलेरिया, जगजीत पठानिया, सुभाष चन्द्र शर्मा, जीतलाल कालिया, नरेश शर्मा, मस्तराम, भोला, जनरैलसिंह, प्रकाश पठानिया, श्रेष्ठा गुलेरिया, जोगिन्दर सिंह, उर्मिला, प्रकाश सिंह, हरिओम, नूरपूर-पीताम्बर दत्त, नरेश शर्मा, दिनेश निखिल, आशीष, चौंतड़ा-संजीव कुमार-8894513703, विकास सूद, गोविन्दराम, हमीरपुर-निर्मला देवी, राजेन्द्र शर्मा, डॉ. गगन, प्रवीण धीमान, जाहू-सागरदत्त, चमन, प्रभदयाल, सपना शर्मा, सरकाघाट-अशोक कुमार-981620266, मोहनलाल शास्त्री, रोशनलाल, संसारचन्द, सुन्दरनगर -जयदेव शर्मा-9816314760, वंशीराम ठाकुर, नरेश वर्मा, तिलकराज, नीलम निखिल, निर्मला शर्मा (वलद्वाड़ा), श्याम सिंह, मानसिंह, कुल्लू-रतो राम, तपे राम, घुमारवीं-ज्ञानचन्द एडवोकेट, डॉ. सुमन, हेमलता कौण्डल, धर्मदत्त, सोहनलाल, स्नेहलता, सन्तोष कुमार, बरठीं-कृष्ण कुमार शाण्डिल, अश्वनी गौतम, सुशील भरोल, शिमला- चमनलाल कौण्डल, टी.एस. चौहान, सुरेन्द्र कंवर, तुलसीराम कौण्डल, दसुआ टांडा (पंजाब)- रघुवीरसिंह एवं पार्टी, होशियारपुर-दिलबागसिंह।

19 अगस्त 2022

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव साधना शिविर

लेमन ट्री प्रीमियर, नियर इस्कान गेट, नागेश्वर रोड, द्वारका (गुजरात)

सम्पर्क-7016108433, 9426598298, 9426285578, 9725323930

केदारनाथ यात्रा का प्रोग्राम पिछले 2 साल से कोरोना के कारण सम्भव नहीं हो सका था। सद्गुरुदेव की कृपा से इस बार हम सभी को इस यात्रा में भाग लेने का अवसर प्राप्त हो रहा है अतः शीघ्रताशीघ्र जोधपुर या दिल्ली कार्यालय से सम्पर्क करके अपना रजिस्ट्रेशन करवा लें।

भारतवर्ष में हिमालय का नाम आते ही हमें स्वतः ही पवित्रता का बोध होने लगता है। हिमालय वह स्थान है, जहाँ ऋषि-मुनि, योगी आज भी तपस्यारत हैं। उसी हिमालय की पवित्रतम ऊँचाइयों पर बसे हैं-हमारे चार विशिष्ट तीर्थ स्थल यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ एवं बद्रीनाथ, जिन्हें सामूहिक रूप से चार धाम के रूप में भी जाना जाता है। यह स्थल उत्तर भारत में धार्मिक यात्रा का महत्वपूर्ण केंद्र है।

सद्गुरुदेव की कृपा से हम गुरुदेव के सानिध्य में पूर्व में बद्रीनाथ एवं गंगोत्री की पुण्य यात्रा का लाभ प्राप्त कर चुके हैं। इसी क्रम में गुरुदेव ने फिर इस बार अपने शिष्यों को केदारनाथ यात्रा ले जाने का निश्चय किया है, जो कि भगवान शिव का स्थान है। यह स्थान शिव उपासकों के लिए सबसे पवित्र तीर्थों में से एक है। भगवान शिव, अर्थात् गुरु, क्योंकि शिव ही गुरु हैं और गुरु ही शिव हैं इसलिये इस स्थान की यात्रा अपने आप में ही शिष्यों के हृदय में एक विशिष्ट स्थान रखती है। यह स्थान बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है।

स्कन्द पुराण, केदारनाथ खण्ड 1, 40वें अध्याय के अनुसार महाभारत युद्ध के पश्चात युधिष्ठिर आदि पाण्डवों ने जब सगे-संबंधियों की हत्या के पाप का प्रायश्चित श्री व्यास जी से पूछा तब व्यास जी ने कहा कि बिना केदारखण्ड जाए इन पापों का प्रायश्चित नहीं हो सकता। तुम लोग वहां जाओ। पाण्डव केदारखण्ड आये, इस पर महादेव बैल का रूप लेकर पशुओं में शामिल हो गये और भूमि में अंतर्ध्यान होने लगे तभी पाण्डव को इस बात का भान हो गया और भीम उन पर झपट पड़े और पीठ को पकड़ लिया। पाण्डवों की इच्छाशक्ति एवं भक्ति देखकर भोलेनाथ प्रसन्न हो गये। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, भूमि में अंतर्ध्यान होते वक्त बैल रूपी भगवान शिव के धड़ से आगे का हिस्सा काठमाण्डू में प्रकट हुआ जिससे वे पशुपतिनाथ कहलाए एवं बैल की पीठ की आकृति की पिंड के रूप में भगवान केदारनाथ में पूजा होती है। इस प्रकार तप करके पाण्डवों ने भगवान को प्रसन्न करके उनका आशीर्वाद प्राप्त किया।

कहा जाता है कि केदारनाथ जी का मन्दिर पांडवों का बनाया हुआ प्राचीन मन्दिर है। ये द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक है। जहाँ पाण्डवों ने अपनी तपस्या से भगवान शिव को प्रसन्न किया था उसी मन्दिर को 8वीं शताब्दी में आदि शंकराचार्य द्वारा पुनः जीवित किया गया।

यहाँ श्राद्ध तथा तर्पण करने से पितर लोग परमपद को प्राप्त हो जाते हैं। मन्दिर के समीप ही हंसकुण्ड है जहां तर्पण किया जाता है।

कुर्म पुराण 36वां अध्याय के अनुसार हिमालय तीर्थ में स्नान करने एवं केदार के दर्शन करने से रुद्र लोक प्राप्त होता है। गरुढ़ पुराण (81वां अध्याय) के अनुसार केदारतीर्थ सम्पूर्ण पापों का नाश करने वाला है।

यह हमारा परम सौभाग्य है कि हमें गुरुदेव के सानिध्य में ऐसी विशेष तीर्थ यात्राओं में जाने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा

है।

ऐसे विशिष्ट तीर्थ केदारनाथ धाम जहाँ देवाधिदेव भगवान शिव स्वयं गुरु रूप में विराजमान है जहाँ हिमालय के उच्चतम शिखर पर जाकर पवित्र मंदाकिनी नदी के तट पर साधना प्राप्त करना, दीक्षा प्राप्त करना आपके कई जन्मों का पुण्य ही है। ऐसा उत्सव हमारे जीवन का एक स्वप्निल क्षण बन जायेगा जब हम भगवान केदार के प्रांगण में विशेष दीक्षा प्राप्त करेंगे और अपने गुरु के सानिध्य में सद्गुरुदेव के आशीर्वाद से भगवान शिव की आराधना साधना करेंगे।

शिविर का कार्यक्रम केदारनाथ के प्रांगण में ही रहेगा। आयोजकों ने गुरुदेव की आज्ञा से 29 मई को भगवान केदारनाथ के प्रांगण में ही रात्रि रुकने की व्यवस्था की है जो हमारे जीवन के सर्वोच्च सौभाग्यशाली क्षण होंगे वह पूरी रात्रि आपकी साधना की रात्रि होगी और आपके जीवन की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि होगी।

अतः हम बार-बार आप को आमंत्रण दे रहे हैं ऐसे शिव तीर्थ स्थल केदारनाथ चलने एवं विशेष क्षणों का साक्षी बनने के लिए।

आप यथाशीघ्र अपना ट्रेन का आरक्षण करवा लें, जिससे आपको हरिद्वार पहुंचने एवं वापस आते वक्त कोई परेशानी न हो और अपना नाम हमारे जोधपुर कार्यालय में लिखवा कर अपनी बुकिंग करवा लें क्योंकि पहाड़ों पर होटल की बुकिंग यथाशीघ्र करवानी पड़ती है।

यात्रा - 27 मई से 1 जून 2022

27 मई - आपको शाम तक सीधा हरिद्वार पहुँचना है।

28 मई - प्रातः हम गुरुदेव के साथ हरिद्वार से केदारनाथ की ओर प्रस्थान करेंगे और शाम को रामपुर नामक स्थान पर होटल में विश्राम करेंगे।

29 मई - प्रातः 5 बजे रामपुर से गौरीकुण्ड पहुँचकर वहाँ से पैदल केदारनाथ की ओर प्रस्थान करेंगे (गौरीकुण्ड से केदारनाथ की दूरी लगभग 16 कि.मी. है, पैदल जाने में लगभग 6-7 घंटे लगते हैं)। आप वहाँ पहुँचने के बाद उसी दिन केदारनाथ ज्योतिर्लिंग के दर्शन कर लें एवं पास के अन्य महत्वपूर्ण स्थलों के दर्शन भी कर लें। मन्दिर से लगभग 600 मीटर की दूरी पर एक पहाड़ी पर भैरव मन्दिर है। आप चाहें तो केदारनाथ तक की 16 कि.मी. की दूरी घोड़ा, खच्चर, पोनी या डोली से भी तय कर सकते हैं। जो साधक हेलीकॉप्टर से जाने के इच्छुक हों, तो वह स्वयं इन्टरनेट पर हेलीकॉप्टर की बुकिंग ऑन लाइन कर सकते हैं। हेलीकॉप्टर से केदारनाथ जाने में सिर्फ 15 मिनट लगते हैं। यह सुविधा सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त है। आप इसका उपयोग शीघ्र पहुँचने हेतु कर सकते हैं।

दीक्षा एवं साधना कार्यक्रम वहाँ के मौसम के अनुसार 29 मई की शाम या 30 मई की सुबह ब्रह्म मुहूर्त में सम्पन्न होगा एवं हवन कुण्ड में गुरुदेव के सानिध्य में आप आहुति भी प्रदान कर सकेंगे।

30 मई - प्रातः 10 बजे सभी साधक नाश्ता करके वापस प्रस्थान करेंगे एवं वापस पहुंचकर रामपुर अपने होटल में विश्राम करेंगे।

31 मई - प्रातः रामपुर से प्रस्थान कर रात्रि में हरिद्वार में विश्राम करेंगे।

1 जून - प्रातः नास्ते के बाद अपने-अपने गंतव्य के लिए प्रस्थान करेंगे।

यात्रा शुल्क 20000 रुपये प्रति साधक रखा गया है, जिसमें हरिद्वार से जाने एवं आने की बस व्यवस्था तथा पांच रातों में ठहरने के लिए होटल व्यवस्था एवं नाश्ते व भोजन शुल्क भी शामिल है एवं दो विशेष शक्तिपात दीक्षाएं एवं साधना सामग्री भी निःशुल्क प्रदान की जायेगी। आप अपना नाम जोधपुर ऑफिस में शीघ्र लिखवा कर जाने हेतु बुकिंग करवा लें।

27 मई से 1 जून 2022 तक

ज्योतिर्लिंग केदारनाथ यात्रा

ध्यान दें

केदारनाथ धाम की समुद्र तल से ऊँचाई लगभग 3584 मीटर है

1. अपनी आवश्यक दवाइयाँ एवं यदि कोई दवा नित्य लेनी है तो दवा की पर्ची साथ रखें।
2. अपने साथ रेनकोट (अत्यावश्यक), छतरी, टॉर्च, कुछ ड्राई फ्रूट्स, कपूर (ऑक्सीजन की कमी होने पर सहायक), गर्म कपड़े, अदरक के सूखे टुकड़े (उल्टी में उपयोगी) आदि अपने साथ रखें।
3. होटल में तीन-चार या अधिक साधकों के मध्य शेयरिंग रूम की व्यवस्था होगी।
4. सभी यात्री ट्रेंकिंग शूज ही पहनें।
5. सन स्किन क्रीम, कोल्ड क्रीम, लिप बाम, योगा मेट (साधना के समय बिछाने हेतु) साथ लेकर आयें।
6. यात्रा में जाने हेतु सभी साधक शीघ्र अपना पंजीकरण गुरुधाम जोधपुर या सिद्धाश्रम दिल्ली में करायें।
7. महिलायें परिवार के किसी सदस्य के साथ ही पंजीकरण करायें।
(विशेष ध्यान दें - अस्थमा, हृदय रोगी, गठिया रोग या अन्य किसी बड़ी बीमारी से पीड़ित व्यक्ति इस यात्रा में अपने डॉक्टर की सलाह से एवं स्वयं की जिम्मेदारी पर ही यात्रा करें।)
8. अपना ऑरिजनल आधार कार्ड एवं कोविड टीकाकरण सर्टिफिकेट अपने साथ लेकर आना अनिवार्य है।

प्रत्येक साधक के लिए पंजीयन शुल्क 20000 रुपये है।
साधना सामग्री एवं दो शक्तिपात दीक्षाएँ भी इसी शुल्क में प्रदान की जायेंगी

पंजीकरण शुल्क आप निम्न दिये गये किसी भी खाते में जमा करा कर फोन पर सूचना दें

खाताधारी	बैंक का नाम	खाता संख्या	IFSC CODE
REKHA KUMARI	STATE BANK OF INDIA, RANCHI	33578523122	SBIN0016616
REKHA KUMARI	BANK OF INDIA, RANCHI	589610110000122	BKID0005896
INDRAJIT RAY	BANK OF INDIA, RANCHI	589610110000121	BKID0005896

उपरोक्त में से किसी भी खाते में रजिस्ट्रेशन शुल्क जमा कराने से पहले फोन नं. 8210257911, 9199409003 पर अवश्य सम्पर्क कर लें।

अधिक जानकारी के लिए निम्न नम्बरों पर सम्पर्क करें

जोधपुर - 0291-2432209,7960039, 2432010, 2433623, दिल्ली - 011-79675768, 79675769, 27354368

यात्रा शुल्क में हरिद्वार से जाने एवं आने की बस व्यवस्था, नास्ते, खाने एवं ठहरने की व्यवस्था के साथ ही दो विशेष शक्तिपात दीक्षाएं एवं साधना सामग्री भी इसी शुल्क में शामिल है।

दिल्ली कार्यालय – सिद्धाश्रम 8, सन्देश विहार, एम.एम. पब्लिक स्कूल के पास, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034
फोन नं. : 011-79675768, 011-79675769, 011-27354368

Printing Date : 15-16 March, 2022
Posting Date : 21-22 March, 2022
Posting office At Jodhpur RMS

RNI No. RAJ/BIL/2010/34546
Postal Regd. No. Jodhpur/327/2022-2024
Licensed to post without prepayment
Licensed No. RJ/WR/WPP/14/2022
Valid up to 31.12.2024

पूज्य गुरुदेव श्री अरविन्द श्रीमाली जी निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

स्थान
गुरुधाम (जोधपुर)
12 अप्रैल
20 मई

स्थान
सिद्धाश्रम (दिल्ली)
23-24 अप्रैल
21-22 मई

प्रेषक –
नारायण-मंत्र-साधना विज्ञान
गुरुधाम
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)
पोस्ट बॉक्स नं. : 69
फोन नं. : 0291-2432209, 7960039,
0291-2432010, 2433623
वाट्सअप नम्बर : 8890543002